SampleTesting

25 Mar 2015 10:09 AM

Durgapur

Model: Web-C2,Web-MD,P4

Order No: 107538101

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**25/03/2015**
दिन	बुधवार
जन्म समय	**10:09:09 घंटे**
इष्ट	11:09:53 घटी
स्थान	**Durgapur**
देश	India

अक्षांश	23:39:18 पूर्व
रेखांश	87:11:23 उत्तर
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	00:18:46 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	10:27:54 घंटे
वेलान्तर	-00:06:07 घंटे
साम्पातिक काल	22:37:13 घंटे
सूर्योदय	05:41:11 घंटे
सूर्यास्त	17:53:56 घंटे
दिनमान	12:12:45 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल)	उत्तर
ऋतु	वसन्त
सूर्य के अंश	10:08:40 मीन
लग्न के अंश	26:49:12 वृष

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	वृष - शुक्र
राशि-स्वामी	**वृष - शुक्र**
नक्षत्र-चरण	**रोहिणी - 2**
नक्षत्र स्वामी	चन्द्र
योग	प्रीति
करण	कौलव
गण	मनुष्य
योनि	सर्प
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	वैश्य
वश्य	चतुष्पाद
वर्ग	मृग
युँजा	पूर्व
हंसक	भूमि
जन्म नामाक्षर	वा-वासुदेव
पाया(राशि-नक्षत्र)	स्वर्ण - स्वर्ण
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	मेष

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1937	चैत्र	4
पंजाबी	संवत : 2071	चैत्र	12
बंगाली	सन् : 1421	चैत्र	10
तमिल	संवत : 2071	पंगुनी	11
केरल	कोल्लम : 1190	मीनम	11
नेपाली	संवत : 2071	चैत्र	11
चैत्रादि	संवत : 2072	चैत्र	शुक्ल 6
कार्तिकादि	संवत : 2072	चैत्र	शुक्ल 6

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि ___: 6
तिथि समाप्ति काल _____: 24:53:07
जन्म तिथि _____: 6
सूर्योदय कालीन नक्षत्र ___: रोहिणी
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 25:56:35 घंटे
जन्म योग _____: रोहिणी
सूर्योदय कालीन योग ___: प्रीति
योग समाप्ति काल _____: 13:23:13 घंटे
जन्म योग _____: प्रीति
सूर्योदय कालीन करण ___: कौलव
करण समाप्ति काल _____: 13:10:21 घंटे
जन्म करण _____: कौलव
भयात _____: 20:19:30
भभोग _____: 59:48:04
भोग्य दशा काल _____: चंद्र 6 वर्ष 6 मा 23 दि

घात चक्र

मास _____: मार्गशीर्ष
तिथि _____: 5-10-15
दिन _____: शनिवार
नक्षत्र _____: हस्त
योग _____: शुक्ल
करण _____: शकुनि
प्रहर _____: 4
वर्ग _____: सिंह
लग्न _____: वृष
सूर्य _____: वृश्चिक
चन्द्र _____: कन्या
मंगल _____: धनु
बुध _____: कन्या
गुरु _____: मकर
शुक्र _____: मकर
शनि _____: तुला
राहु _____: मकर

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

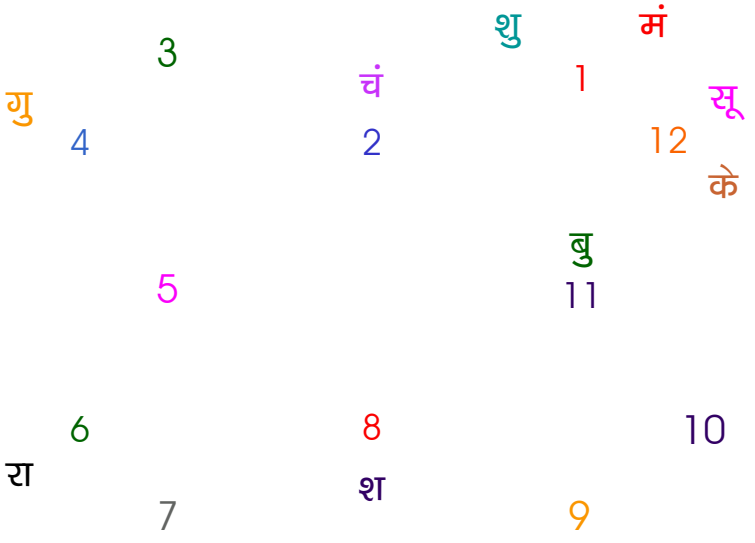

चन्द्र कुंडली

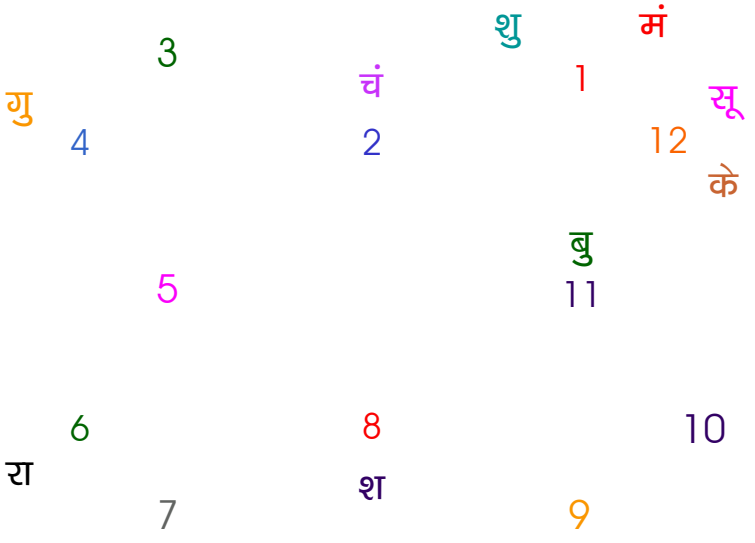

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

लग्न कुंडली

विंशोत्तरी
चन्द्र 6वर्ष 6मा 23दि

चन्द्र

25/03/2015

18/10/2131

चन्द्र	17/10/2021
मंगल	16/10/2028
राहु	17/10/2046
गुरु	17/10/2062
शनि	17/10/2081
बुध	17/10/2098
केतु	18/10/2105
शुक्र	18/10/2125
सूर्य	18/10/2131

योगिनी
सिद्धा 4वर्ष 7मा 4दि

सिद्धा

25/03/2015

28/10/2019

	25/03/2015
संकटा	28/09/2015
मंगला	08/12/2015
पिंगला	28/04/2016
धान्या	27/11/2016
भ्रामरी	07/09/2017
भद्रिका	28/08/2018
उल्का	28/10/2019

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			वृष	26:49:12	343:56:30	मृगशिरा	2	5	शुक्र	मंगल	गुरु	---
सूर्य			मीन	10:08:40	00:59:29	उ०भाद्रपद	3	26	गुरु	शनि	शुक्र	मित्र राशि
चंद्र			वृष	14:34:50	13:26:48	रोहिणी	2	4	शुक्र	चंद्र	गुरु	मूलत्रिकोण
मंगल			मेष	01:06:03	00:44:48	अश्विनी	1	1	मंगल	केतु	शुक्र	मूलत्रिकोण
बुध		अ	कुंभ	25:19:34	01:44:21	पू०भाद्रपद	2	25	शनि	गुरु	बुध	सम राशि
गुरु	व		कर्क	18:51:05	00:02:44	आश्लेषा	1	9	चंद्र	बुध	केतु	उच्च राशि
शुक्र			मेष	15:16:10	01:11:51	भरणी	1	2	मंगल	शुक्र	शुक्र	सम राशि
शनि	व		वृश्चि	10:45:54	00:01:04	अनुराधा	3	17	मंगल	शनि	सूर्य	शत्रु राशि
राहु			कन्या	15:56:04	00:00:37	हस्त	2	13	बुध	चंद्र	शनि	मूलत्रिकोण
केतु			मीन	15:56:04	00:00:37	उ०भाद्रपद	4	26	गुरु	शनि	गुरु	मूलत्रिकोण
हर्ष			मीन	21:40:45	00:03:23	रेवती	2	27	गुरु	बुध	सूर्य	---
नेप			कुंभ	14:11:31	00:02:06	शतभिषा	3	24	शनि	राहु	बुध	---
प्लूटो			धनु	21:20:26	00:00:42	पूर्वाषाढ़ा	3	20	गुरु	शुक्र	गुरु	---
दशम भाव			कुंभ	13:32:59	--	शतभिषा	--	24	शनि	राहु	बुध	--

व - वक्री स - स्थिर

अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त

राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:04:14

लग्न-चलित

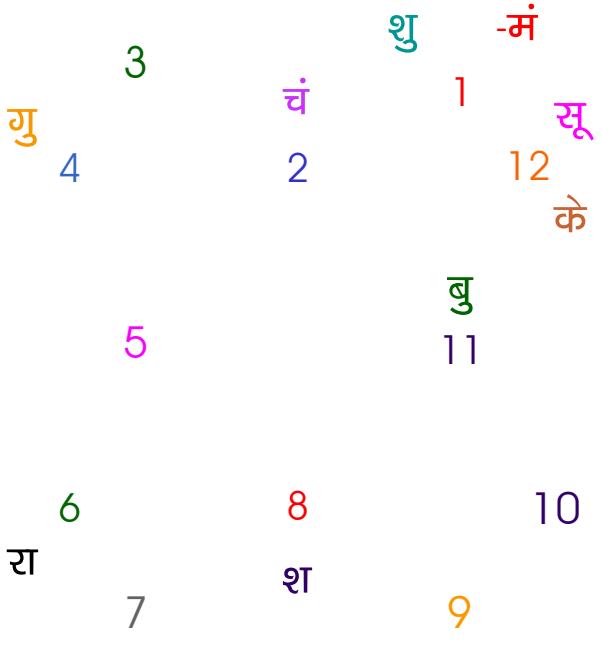

चन्द्र कुंडली

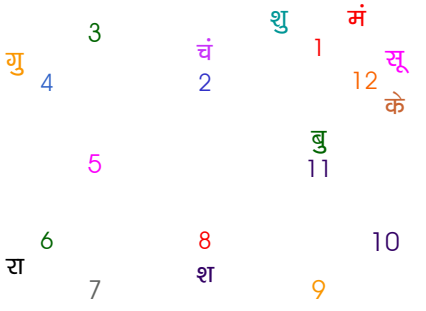

नवमांश कुंडली

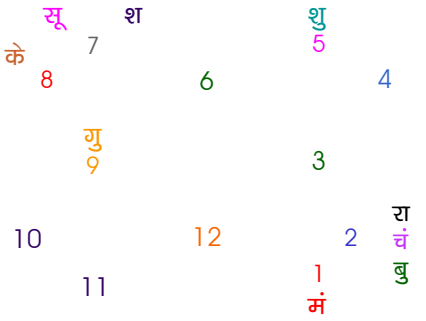

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	वृष	09:36:30	वृष	26:49:12
2	मिथुन	09:36:30	मिथुन	22:23:48
3	कर्क	05:11:06	कर्क	17:58:23
4	सिंह	00:45:41	सिंह	13:32:59
5	कन्या	00:45:41	कन्या	17:58:23
6	तुला	05:11:06	तुला	22:23:48
7	वृश्चिक	09:36:30	वृश्चिक	26:49:12
8	धनु	09:36:30	धनु	22:23:48
9	मकर	05:11:06	मकर	17:58:23
10	कुम्भ	00:45:41	कुम्भ	13:32:59
11	मीन	00:45:41	मीन	17:58:23
12	मेष	05:11:06	मेष	22:23:48

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	वृष	26:49:12
2	मिथुन	20:57:09
3	कर्क	15:29:53
4	सिंह	13:32:59
5	कन्या	16:44:00
6	तुला	22:47:27
7	वृश्चिक	26:49:12
8	धनु	20:57:09
9	मकर	15:29:53
10	कुम्भ	13:32:59
11	मीन	16:44:00
12	मेष	22:47:27

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी
हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा
श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका

चलित कुंडली

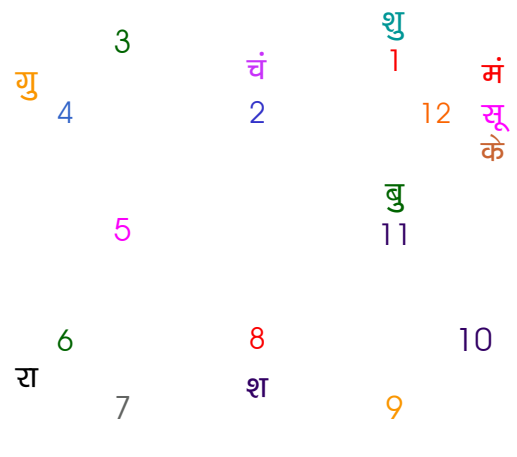

भाव कुंडली

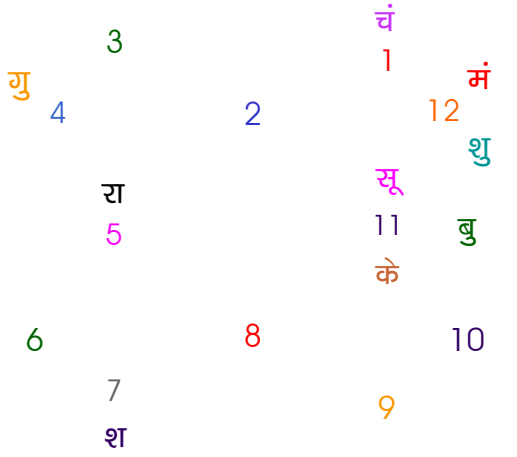

कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	------ कारक ------			------- अवस्था -------			
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	ज्ञाति	पितृ	वृद्ध	मुदित	शयन	8.34	64 %
चंद्र	मातृ	मातृ	युवा	स्वस्थ	भोजन	16.84	64 %
मंगल	कलत्र	भ्रातृ	बाल	स्वस्थ	आगम	6.49	54 %
बुध	आत्मा	ज्ञाति	मृत	विकल	शयन	0.00	37 %
गुरु	अमात्य	धन	कुमार	दीप्त	कौतुक	19.38	82 %
शुक्र	भ्रातृ	कलत्र	युवा	शान्त	गमन	3.59	39 %
शनि	पुत्र	आयु	वृद्ध	खल	शयन	1.77	73 %
राहु	---	ज्ञान	युवा	स्वस्थ	भोजन	0.00	11 %
केतु	---	मोक्ष	युवा	स्वस्थ	कौतुक	0.00	11 %
कुल						56.43	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी
हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा
श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका

चलित कुंडली

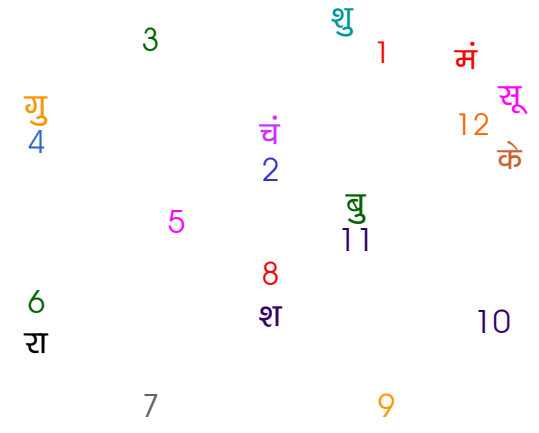

लग्न-चलित

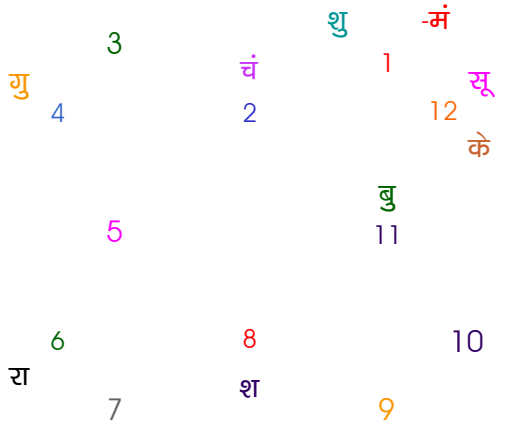

सुदर्शन चक्र

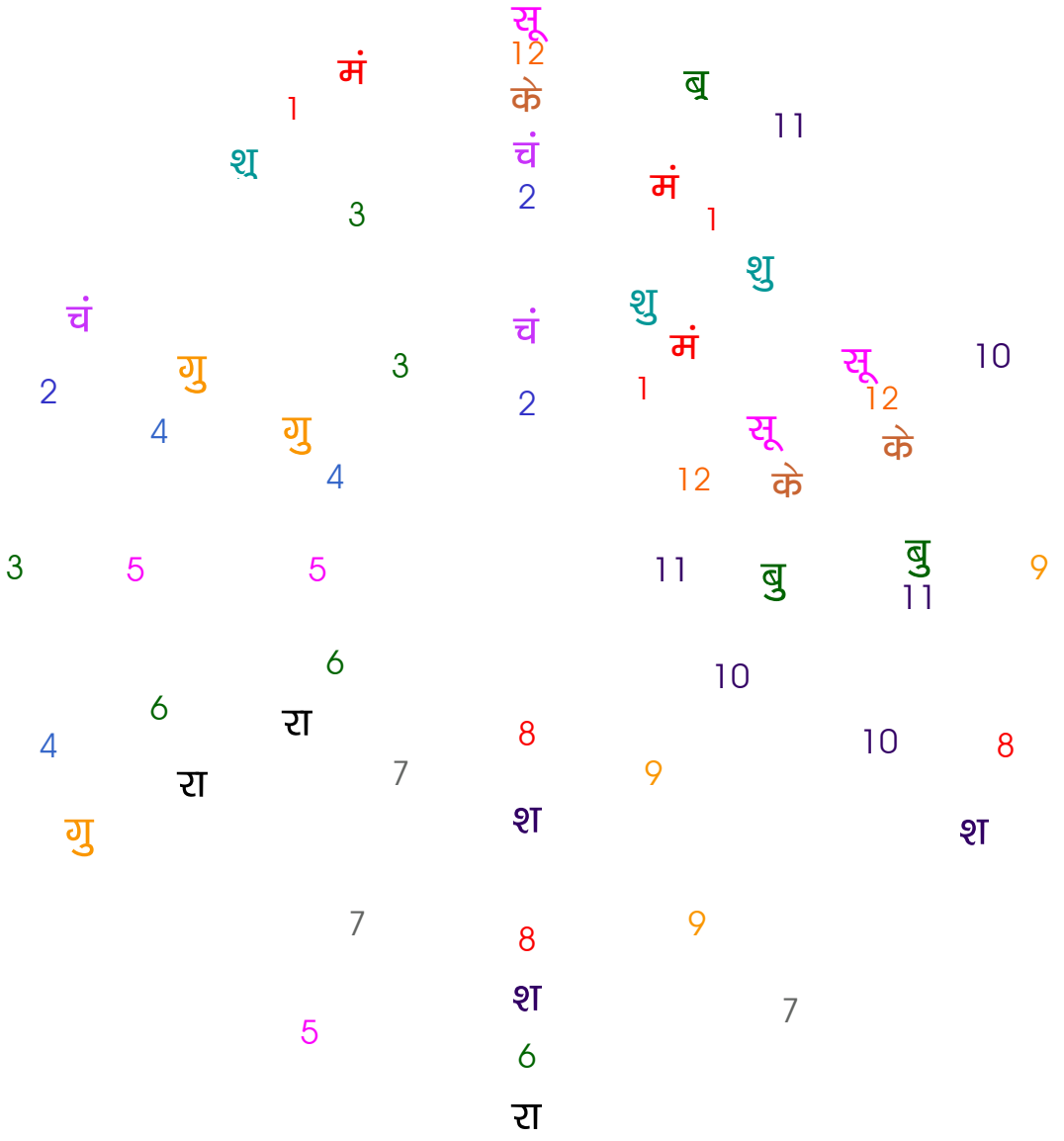

नोटः सुदर्शन चक्र क्रमानुसार बाहरी वृत से अन्तः वृत तक सूर्य, चन्द्र एवं जन्मांग कुंडलियों में ग्रहों की तुलनात्मक स्थिति दर्शाता है। किसी भाव का विचार करने के लिए उस भाव को प्रकट करने वाली तीनों राशियों का विचार करना चाहिए।

कृष्णमूर्ति पद्धति

भोग्य दशा काल : चन्द्र 6 वर्ष 6 मास 23 दिन

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		मीन	10:08:40	गुरु	शनि	शुक्र	बुध
चंद्र		वृष	14:34:50	शुक्र	चंद्र	गुरु	बुध
मंगल		मेष	01:06:03	मंगल	केतु	शुक्र	शुक्र
बुध		कुंभ	25:19:34	शनि	गुरु	बुध	गुरु
गुरु	व	कर्क	18:51:05	चंद्र	बुध	केतु	मंगल
शुक्र		मेष	15:16:10	मंगल	शुक्र	शुक्र	बुध
शनि	व	वृश्चि	10:45:54	मंगल	शनि	सूर्य	बुध
राहु		कन्या	15:56:04	बुध	चंद्र	शनि	शनि
केतु		मीन	15:56:04	गुरु	शनि	गुरु	शुक्र
हर्ष		मीन	21:40:45	गुरु	बुध	सूर्य	मंगल
नेप		कुंभ	14:11:31	शनि	राहु	बुध	शनि
प्लूटो		धनु	21:20:26	गुरु	शुक्र	गुरु	सूर्य

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	वृष	26:49:12	शुक्र	मंगल	गुरु	बुध
2	मिथु	20:57:32	बुध	गुरु	गुरु	शुक्र
3	कर्क	15:29:56	चंद्र	शनि	गुरु	बुध
4	सिंह	13:32:14	सूर्य	शुक्र	शुक्र	शुक्र
5	कन्या	16:42:39	बुध	चंद्र	शनि	शुक्र
6	तुला	22:46:29	शुक्र	गुरु	शनि	शुक्र
7	वृश्चि	26:49:12	मंगल	बुध	गुरु	बुध
8	धनु	20:57:32	गुरु	शुक्र	गुरु	केतु
9	मक	15:29:56	शनि	चंद्र	गुरु	राहु
10	कुंभ	13:32:14	शनि	राहु	बुध	मंगल
11	मीन	16:42:39	गुरु	बुध	बुध	बुध
12	मेष	22:46:29	मंगल	शुक्र	शनि	शुक्र

के.पी. अयनांश : 23:57:52

फॉरच्युना : सिंह 01:15:23

लग्न कुंडली

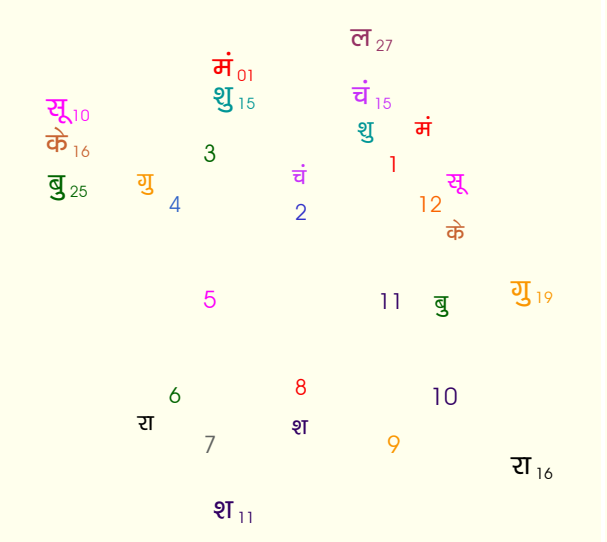

भाव कुंडली

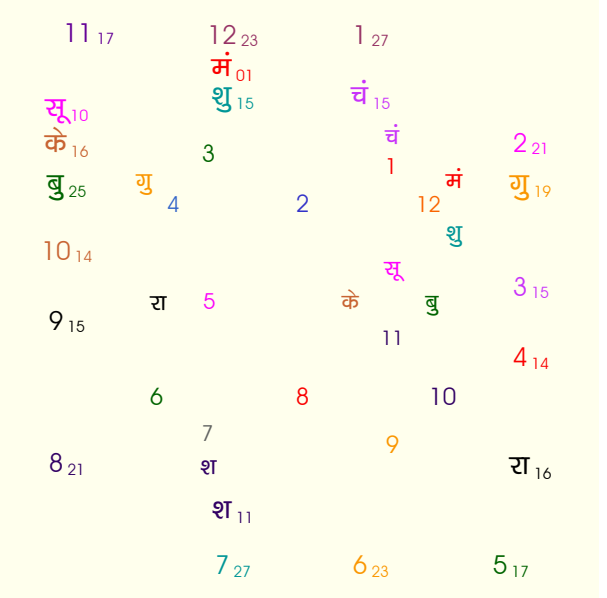

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	शुक्र,
2	बुध- गुरु-
3	चंद्र, बुध, गुरु, राहु-
4	सूर्य- राहु,
5	बुध- गुरु-
6	सूर्य, शुक्र, शनि+ केतु,
7	मंगल-
8	बुध- गुरु-
9	सूर्य- शनि, केतु-
10	सूर्य+ मंगल, बुध, गुरु, शनि, केतु+
11	मंगल, बुध- गुरु- शुक्र+
12	चंद्र+ मंगल- राहु,

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	4- 6, 9- 10+
चंद्र	3, 12+
मंगल	7- 10, 11, 12-
बुध	2- 3, 5- 8- 10, 11-
गुरु	2- 3, 5- 8- 10, 11-
शुक्र	1, 6, 11+
शनि	6+ 9, 10,
राहु	3- 4, 12,
केतु	6, 9- 10+

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	मंगल
लग्न राशि स्वामी	शुक्र
राशि नक्षत्र स्वामी	चन्द्र
राशि स्वामी	शुक्र
वार स्वामी	बुध
लग्न अन्तर स्वामी	गुरु
राशि अन्तर स्वामी	गुरु

कारकत्व-सारिणी

भाव	स्थित ग्रह के नक्षत्र में	स्थित ग्रह	स्वामी के नक्षत्र में	स्वामी
1	--	--	शु	शु
2	--	--	गु	बु
3	बु	गु	चं रा	चं
4	--	रा	--	सू
5	--	--	गु	बु
6	सू श के	श	शु	शु
7	--	--	--	मं
8	--	--	बु	गु
9	--	--	सू श के	श
10	मं गु	सू बु के	सू श के	श
11	शु	मं शु	बु	गु
12	चं रा	चं	--	मं

ग्रह कारक सारिणी-1

ग्रह	भावाधिपति	नक्षत्राधिपति	स्थित	भाव
सूर्य	4	---	मीन	10
चंद्र	3	5,9	वृष	12
मंगल	7,12	1	मेष	11
बुध	2,5	7,11	कुम्भ	10
गुरु	8,11	2,6	कर्क	3
शुक्र	1,6	4,8,12	मेष	11
शनि	9,10	3	वृश्चिक	6
राहु	---	10	कन्या	4
केतु	---	---	मीन	10

ग्रह कारक सारिणी-2

ग्रह	भावाधि भाव	नक्षत्राधि भाव	स्थित भाव	स्वामित्व	अन्तर स्वामी	स्थित भाव
सूर्य	9,10	3	6	1,6	4,8,12	11
चंद्र	3	5,9	12	8,11	2,6	3
मंगल	---	---	10	1,6	4,8,12	11
बुध	8,11	2,6	3	2,5	7,11	10
गुरु	2,5	7,11	10	---	---	10
शुक्र	1,6	4,8,12	11	1,6	4,8,12	11
शनि	9,10	3	6	4	---	10
राहु	3	5,9	12	9,10	3	6
केतु	9,10	3	6	8,11	2,6	3

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिएं, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।

सूर्य कुंडली

आत्मविचारः

चन्द्र कुंडली

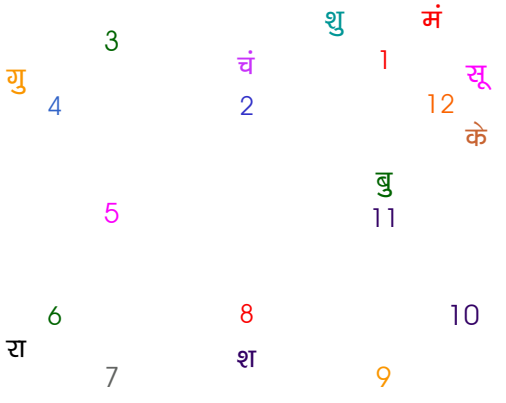

मनोबलविचारः

लग्न कुंडली

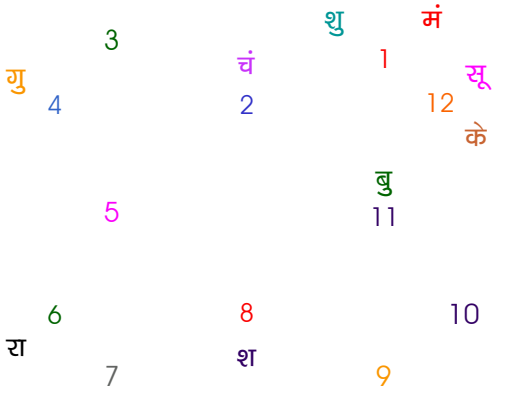

देह विचारः

होरा कुंडली

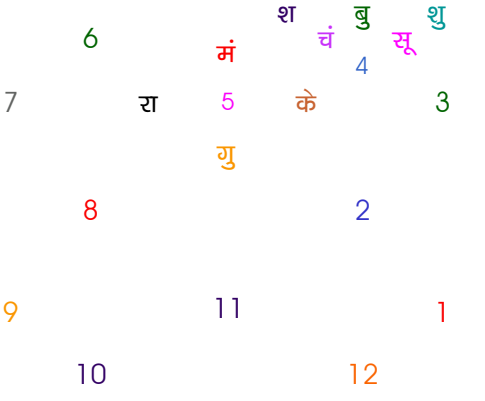

सम्पदाविचारः

षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

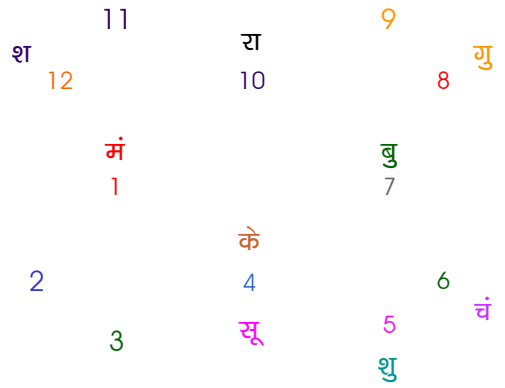

भ्रातृसौख्यम

चतुर्थांश कुंडली

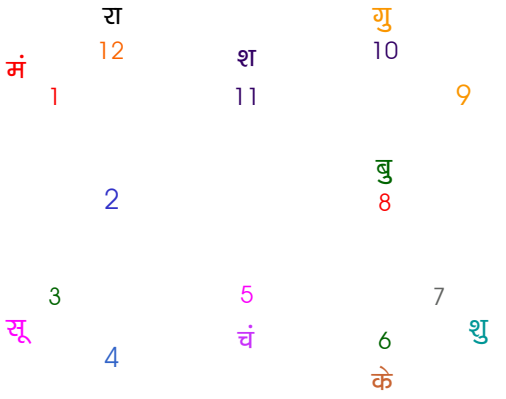

भाग्यविचारः

पंचमांश कुंडली

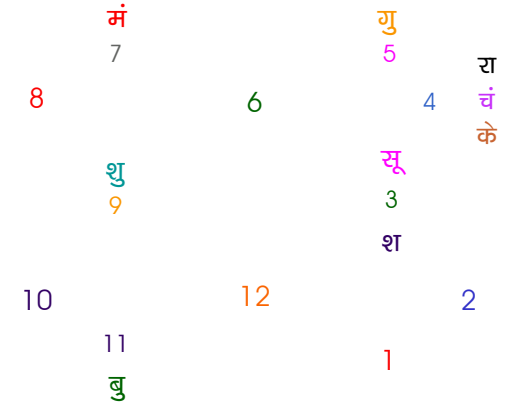

ज्ञानविचारः

षष्ठांश कुंडली

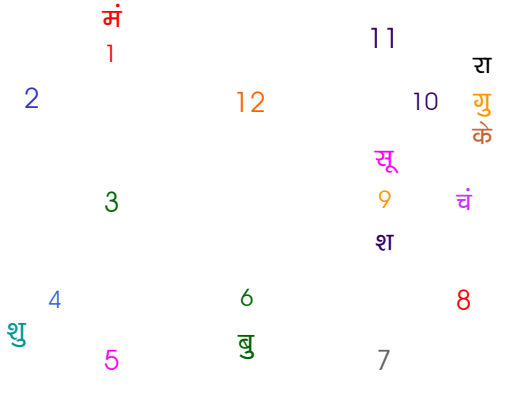

रिपुज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

अष्टमांश कुंडली

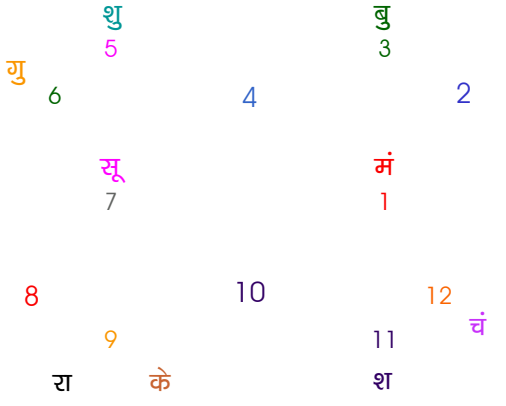

आयुविचारः

षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली

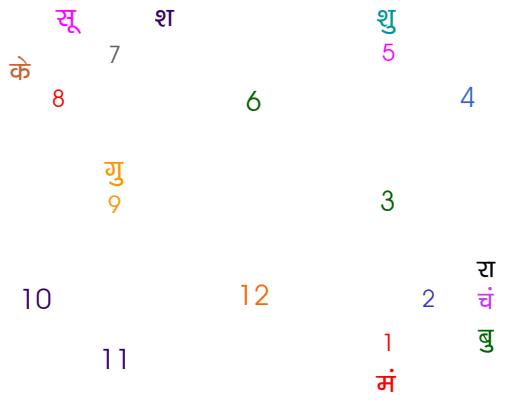

कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली

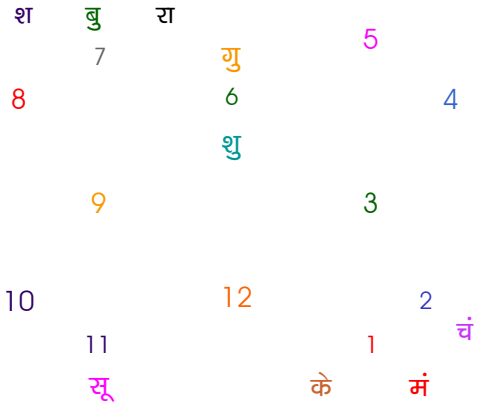

राज्यविचारः

एकादशांश कुंडली

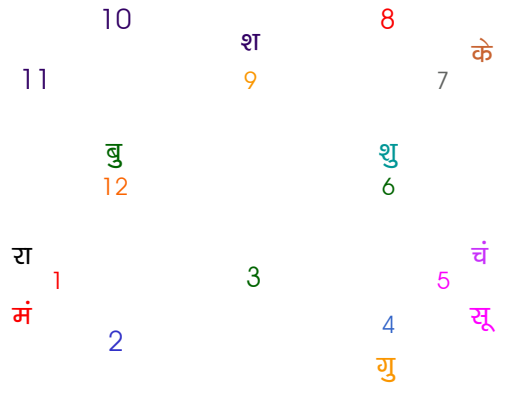

लाभविचारः

द्वादशांश कुंडली

पितृसौख्यम

षोडशांश कुंडली

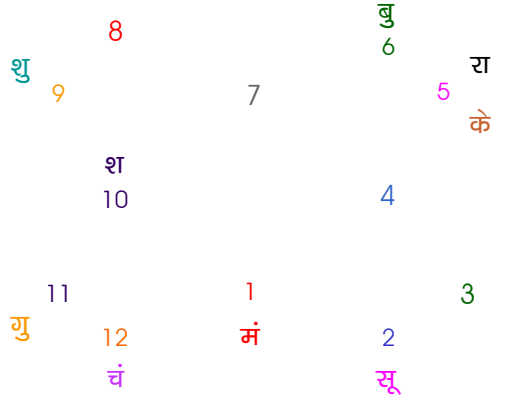

वाहनसुखविचारः

विंशांश कुंडली

उपासनाज्ञानम्

षोडशवर्ग चक्र

चतुर्विंशांश कुंडली

विद्याविचारः

त्रिंशांश कुंडली

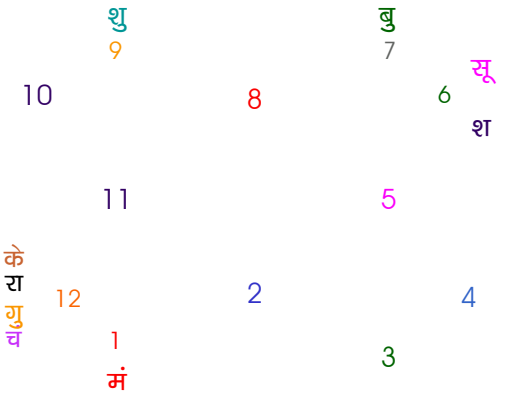

अरिष्टज्ञानम्

अक्षवेदांश कुंडली

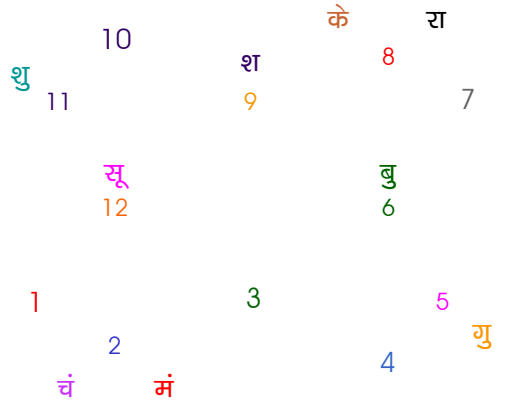

सर्वास्थितिविचारः

सप्तविंशांश कुंडली

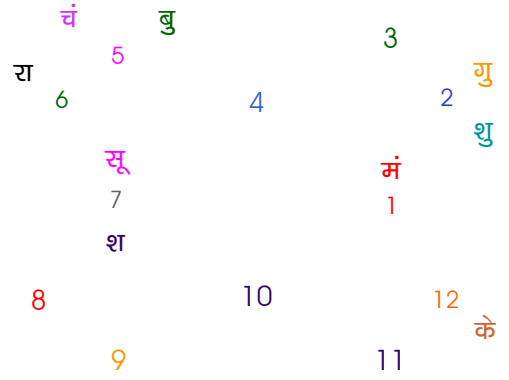

बलाबलज्ञानम्

खवेदांश कुंडली

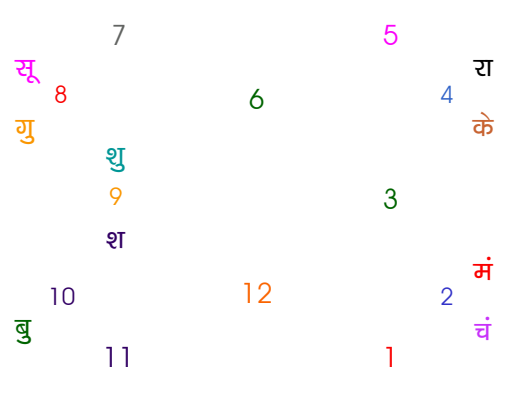

शुभाशुभज्ञानम्

षष्ट्यंश कुंडली

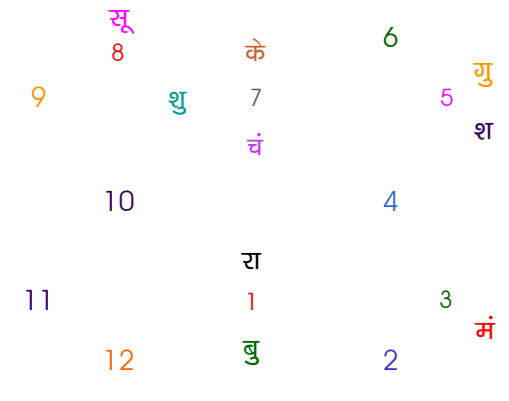

सर्वास्थितिविचारः

षोडशवर्ग सारणियाँ

षोडशवर्ग सारिणी

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	वृष	मीन	वृष	मेष	कुंभ	कर्क	मेष	वृश्चि	कन्या	मीन
होरा	सिंह	कर्क	कर्क	सिंह	कर्क	सिंह	कर्क	कर्क	सिंह	सिंह
द्रेष्काण	मक	कर्क	कन्या	मेष	तुला	वृश्चि	सिंह	मीन	मक	कर्क
चतुर्थांश	कुंभ	मिथु	सिंह	मेष	वृश्चि	मक	तुला	कुंभ	मीन	कन्या
सप्तमांश	वृष	वृश्चि	कुंभ	मेष	कर्क	वृष	कर्क	कर्क	मिथु	धनु
नवमांश	कन्या	तुला	वृष	मेष	वृष	धनु	सिंह	तुला	वृष	वृश्चि
दशमांश	कन्या	कुंभ	वृष	मेष	तुला	कन्या	कन्या	तुला	तुला	मेष
द्वादशांश	मीन	कर्क	तुला	मेष	धनु	कुंभ	तुला	मीन	मीन	कन्या
षोडशांश	तुला	वृष	मीन	मेष	कन्या	कुंभ	धनु	मक	सिंह	सिंह
विंशांश	वृष	कुंभ	कन्या	मेष	मेष	मेष	कुंभ	कर्क	मिथु	मिथु
चतुर्विंशांश	मेष	मीन	मिथु	सिंह	मेष	तुला	सिंह	मीन	कर्क	कर्क
सप्तविंशांश	कर्क	तुला	सिंह	मेष	सिंह	वृष	वृष	तुला	कन्या	मीन
त्रिंशांश	वृश्चि	कन्या	मीन	मेष	तुला	मीन	धनु	कन्या	मीन	मीन
खवेदांश	कन्या	वृश्चि	वृष	वृष	मक	वृश्चि	धनु	धनु	कर्क	कर्क
अक्षवेदांश	धनु	मीन	वृष	वृष	कन्या	सिंह	कुंभ	धनु	वृश्चि	वृश्चि
षष्ट्यंश	तुला	वृश्चि	तुला	मिथु	मेष	सिंह	तुला	सिंह	मेष	तुला

वर्ग भेद

	षडवर्ग	सप्तवर्ग	दशवर्ग	षोडशवर्ग
सूर्य	0 ---	0 ---	0 ---	0 ---
चन्द्र	3 व्यंजन	3 व्यंजन	4 गोपुर	6 केरल
मंगल	5 छत्र	6 कुण्डल	8 ब्रहमलोक	11 धन्वन्तरि
बुध	0 ---	0 ---	1 ---	2 भेदक
गुरु	3 व्यंजन	3 व्यंजन	3 उत्तम	3 कुसुम
शुक्र	1 ---	1 ---	2 पारिजात	4 नागपुष्प
शनि	1 ---	1 ---	3 उत्तम	5 कन्दुक
राहु	1 ---	2 किंसुक	2 पारिजात	4 नागपुष्प
केतु	2 किंसुक	3 व्यंजन	3 उत्तम	4 नागपुष्प

विंशोपक बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
षडवर्ग	13.45	16.10	19.80	15.20	16.70	10.35	7.50	10.95	10.95
सप्तवर्ग	14.05	14.95	19.80	14.35	15.65	10.50	7.28	10.33	10.53
दशवर्ग	14.40	15.00	17.35	14.93	12.48	14.15	8.15	8.68	11.93
षोडशवर्ग	13.13	15.50	17.20	15.95	13.63	13.30	8.83	8.03	12.00

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	---	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

तात्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र
मंगल	मित्र	मित्र	---	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र
गुरु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	---	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु
शुक्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	---	शत्रु	शत्रु	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	अतिमित्र	अतिमित्र	मित्र	सम	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अधिशत्रु
चंद्र	अतिमित्र	---	मित्र	अतिमित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	अधिशत्रु	सम
मंगल	अतिमित्र	अतिमित्र	---	सम	अतिमित्र	शत्रु	शत्रु	अधिशत्रु	अतिमित्र
बुध	अतिमित्र	सम	मित्र	---	शत्रु	अतिमित्र	मित्र	शत्रु	मित्र
गुरु	सम	अतिमित्र	अतिमित्र	अधिशत्रु	---	सम	शत्रु	मित्र	शत्रु
शुक्र	सम	सम	शत्रु	अतिमित्र	मित्र	---	सम	सम	अतिमित्र
शनि	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अतिमित्र	शत्रु	सम	---	अतिमित्र	अधिशत्रु
राहु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	शत्रु	मित्र	सम	अतिमित्र	---	अधिशत्रु
केतु	अधिशत्रु	सम	अतिमित्र	मित्र	शत्रु	अतिमित्र	अधिशत्रु	अधिशत्रु	---

षट्बल तथा भावबल सारिणी

षट्बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	50	56	39	7	55	54	53
सप्तवर्गज बल	120	146	218	101	124	79	43
ओजयुग्मक बल	15	30	30	15	15	0	15
केन्द्र बल	30	60	15	60	15	15	60
द्रेष्काण बल	0	0	15	0	0	0	15
कुल स्थान बल	215	292	316	183	209	148	186
कुल दिग्बल	51	30	44	30	43	21	55
नतोन्नत बल	52	8	8	60	52	52	8
पक्ष बल	39	77	39	21	21	21	39
त्रिभाग बल	60	0	0	0	60	0	0
अब्द बल	0	0	0	0	0	0	15
मास बल	0	0	0	0	0	0	30
वार बल	0	0	0	45	0	0	0
होरा बल	0	0	60	0	0	0	0
अयन बल	64	2	43	36	52	49	57
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल कालबल	215	87	149	162	185	122	149
कुल चेष्टाबल	0	0	8	3	44	35	41
कुल नैसर्गिक बल	60	51	17	26	34	43	9
कुल दृग्बल	0	-12	12	-1	-17	11	-8
कुल षट्बल	541	449	547	402	499	380	431
रूप षट्बल	9.0	7.5	9.1	6.7	8.3	6.3	7.2
न्यूनतम आवश्यकता	5	6	5	7	7	6	5
अनुपात	1.8	1.2	1.8	1.0	1.3	1.2	1.4
संबंधित पद	2	5	1	7	4	6	3

इष्ट फल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट फल	39.65	34.72	17.67	4.44	49.54	43.64	46.73
कष्ट फल	16.87	12.19	33.07	55.19	8.51	12.26	11.42

भाव बल

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपति बल	380	402	449	541	402	380	547	499	431	431	499	547
भावदिग्बल	30	50	50	0	20	10	60	40	10	30	10	40
भावदृष्टि बल	22	7	-11	12	35	63	45	-4	36	33	25	19
कुल भाव बल	432	459	488	554	457	453	652	535	477	494	533	606
रूप भाव बल	7.2	7.7	8.1	9.2	7.6	7.5	10.9	8.9	8.0	8.2	8.9	10.1
संबंधित पद	12	9	7	3	10	11	1	4	8	6	5	2

उपग्रह एवं आरूढ़

उपग्रह	संक्षि	राशि	अंश	उच्च	स्थिति	नक्षत्र	पद	नं.
लग्न	ल	वृष	26:49:12	--	--	मृगशिरा	2	5
गुलिक	गु	मिथु	19:33:46	--	--	आर्द्रा	4	6
काल	का	कर्क	09:25:12	--	--	पुष्य	2	8
मृत्यु	मृ	सिंह	20:15:50	--	--	पू०फाल्गुनी	3	11
यमघंटक	यम	वृष	05:22:25	--	--	कृतिका	3	3
अर्द्धप्रहर	अर्द्ध	मेष	09:05:49	--	--	अश्विनी	3	1
धूम	धू	कर्क	23:28:40	--	--	आश्लेषा	3	9
व्यतिपात	व्य	धनु	06:31:20	--	--	मूल	2	19
परिवेश	परि	मिथु	06:31:20	उच्च	--	मृगशिरा	4	5
इन्द्रचाप	इ	मक	23:28:40	--	--	धनिष्ठा	1	23
उपकेतु	उप	कुंभ	10:08:40	उच्च	--	शतभिषा	2	24

प्राणपद	:	मीन	29:55:03	कारकाँश लग्न	:	वृष	17:56:02
भाव लग्न	:	सिंह	03:48:32	होरा लग्न	:	तुला	10:47:51
घटी लग्न	:	कुंभ	15:05:16	वर्णद लग्न	:	धनु	07:37:03

उपग्रह कुंडली

आरूढ़ कुंडली

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्ि	ध	म	कुं	कुल
शनि	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	8
गुरु	1	0	1	0	0	0	0	0	1	1	0	0	4
मंगल	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	8
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
शुक्र	1	0	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	3
बुध	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	0	7
चंद्र	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	4
लग्न	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0	0	1	6
कुल	5	4	3	3	5	2	3	6	5	5	3	4	48

चंद्र का अष्टकवर्ग

	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्ि	ध	म	कुं	मी	मे	कुल
शनि	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	1	1	4
गुरु	1	1	1	0	0	1	0	0	1	1	0	1	7
मंगल	1	1	0	1	1	0	0	1	1	1	0	0	7
सूर्य	1	0	0	1	1	1	0	1	1	0	0	0	6
शुक्र	0	1	1	1	0	1	0	1	1	1	0	0	7
बुध	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	0	1	1	0	6
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	5	4	4	4	4	5	2	4	5	6	3	3	49

मंगल का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्ि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	1	1	1	1	1	0	1	0	0	1	0	7
गुरु	1	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	0	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	0	1	0	1	1	0	0	0	1	1	0	0	5
शुक्र	0	0	0	0	0	1	0	1	0	0	1	1	4
बुध	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	0	4
चंद्र	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	0	1	3
लग्न	0	1	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	5
कुल	3	5	3	6	2	2	3	3	3	2	4	3	39

बुध का अष्टकवर्ग

	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्ि	ध	म	कुल
शनि	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	8
गुरु	1	0	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	4
मंगल	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	8
सूर्य	1	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	5
शुक्र	1	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	8
चंद्र	1	1	0	0	1	0	1	0	1	0	1	0	6
लग्न	1	1	0	1	1	0	1	0	1	0	1	0	7
कुल	8	2	3	5	6	5	5	1	4	5	7	3	54

गुरु का अष्टकवर्ग

	र्क	सि	कं	तु	वृश्ि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कुल
शनि	0	0	0	1	0	0	1	0	1	1	0	0	4
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
मंगल	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	1	1	9
शुक्र	0	1	1	0	0	1	1	1	0	0	1	0	6
बुध	1	0	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	8
चंद्र	0	0	1	0	1	0	1	0	1	0	0	1	5
लग्न	0	1	1	1	1	0	1	1	1	0	1	1	9
कुल	3	3	5	6	5	3	7	5	5	4	6	4	56

शुक्र का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्ि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	0	1	1	1	1	0	0	0	1	1	1	7
गुरु	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	5
मंगल	0	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	1	6
सूर्य	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	0	3
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	9
बुध	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	0	0	5
चंद्र	1	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	9
लग्न	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	8
कुल	4	4	6	5	5	4	2	2	5	5	5	5	52

शनि का अष्टकवर्ग

	वृश्ि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	1	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	4
मंगल	0	0	1	1	1	0	0	1	0	1	1	0	6
सूर्य	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	7
शुक्र	0	0	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	3
बुध	1	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	1	6
चंद्र	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	0	1	3
लग्न	0	0	0	1	1	0	1	0	1	1	0	1	6
कुल	2	3	4	3	6	2	2	3	3	2	5	4	39

लग्न का अष्टकवर्ग

	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्ि	ध	म	कुं	मी	मे	कुल
शनि	0	0	0	1	1	0	1	0	1	1	0	1	6
गुरु	1	0	1	1	0	1	1	1	1	0	1	1	9
मंगल	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	1	5
सूर्य	1	1	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	6
शुक्र	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	1	8
बुध	1	0	1	0	1	0	1	1	0	1	1	0	7
चंद्र	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	4	3	5	4	3	3	4	4	4	7	4	4	49

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	2	2	3	3	2	5	4	2	3	4	3	6	39
गुरु	4	6	4	3	3	5	6	5	3	7	5	5	56
मंगल	3	5	3	6	2	2	3	3	3	2	4	3	39
सूर्य	4	3	3	5	2	3	6	5	5	3	4	5	48
शुक्र	4	4	6	5	5	4	2	2	5	5	5	5	52
बुध	3	5	6	5	5	1	4	5	7	3	8	2	54
चंद्र	3	5	4	4	4	4	5	2	4	5	6	3	49
लग्न	4	4	3	5	4	3	3	4	4	4	7	4	49
बिन्दु	27	34	32	36	27	27	33	28	34	33	42	33	386
रेखा	37	30	32	28	37	37	31	36	30	31	22	31	382

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	0	0	1	0	3	1	0	1	2	0	4	12
गुरु	1	1	0	0	0	0	2	2	0	2	1	2	11
मंगल	1	3	0	3	0	0	0	0	1	0	1	0	9
सूर्य	2	0	0	0	0	0	3	0	3	0	1	0	9
शुक्र	0	0	4	3	1	0	0	0	1	1	3	3	16
बुध	0	4	2	3	2	0	0	3	4	2	4	0	24
चंद्र	0	1	0	2	1	0	1	0	1	1	2	1	10
लग्न	0	1	0	1	0	0	0	0	0	1	4	0	7
रेखा	4	10	6	13	4	3	7	5	11	9	16	10	98

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	0	0	1	0	3	1	0	0	2	0	4	11
गुरु	1	1	0	0	0	0	1	2	0	1	1	2	9
मंगल	1	3	0	3	0	0	0	0	1	0	1	0	9
सूर्य	2	0	0	0	0	0	3	0	3	0	1	0	9
शुक्र	0	0	4	3	1	0	0	0	0	0	3	3	14
बुध	0	4	2	3	2	0	0	3	4	0	4	0	22
चंद्र	0	1	0	2	1	0	0	0	0	0	2	1	7
लग्न	0	1	0	1	0	0	0	0	0	0	4	0	6
रेखा	4	10	6	13	4	3	5	5	8	3	16	10	87

शोध्य पिंड

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	58	73	62	69	192	80	123	84
ग्रह पिंड	35	35	40	65	85	45	60	30
शोध्य पिंड	93	108	102	134	277	125	183	114

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : चन्द्र 6 वर्ष 6 मास 23 दिन

चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष	
25/03/2015		17/10/2021		16/10/2028		17/10/2046		17/10/2062	
17/10/2021		16/10/2028		17/10/2046		17/10/2062		17/10/2081	
	00/00/0000	मंगल	15/03/2022	राहु	30/06/2031	गुरु	04/12/2048	शनि	20/10/2065
	00/00/0000	राहु	02/04/2023	गुरु	22/11/2033	शनि	17/06/2051	बुध	29/06/2068
	25/03/2015	गुरु	08/03/2024	शनि	28/09/2036	बुध	22/09/2053	केतु	08/08/2069
गुरु	16/01/2016	शनि	17/04/2025	बुध	18/04/2039	केतु	29/08/2054	शुक्र	07/10/2072
शनि	17/08/2017	बुध	14/04/2026	केतु	05/05/2040	शुक्र	29/04/2057	सूर्य	19/09/2073
बुध	16/01/2019	केतु	10/09/2026	शुक्र	06/05/2043	सूर्य	15/02/2058	चंद्र	21/04/2075
केतु	17/08/2019	शुक्र	10/11/2027	सूर्य	30/03/2044	चंद्र	17/06/2059	मंगल	29/05/2076
शुक्र	17/04/2021	सूर्य	17/03/2028	चंद्र	28/09/2045	मंगल	23/05/2060	राहु	05/04/2079
सूर्य	17/10/2021	चंद्र	16/10/2028	मंगल	17/10/2046	राहु	17/10/2062	गुरु	17/10/2081

बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष	
17/10/2081		17/10/2098		18/10/2105		18/10/2125		18/10/2131	
17/10/2098		18/10/2105		18/10/2125		18/10/2131		00/00/0000	
बुध	14/03/2084	केतु	15/03/2099	शुक्र	16/02/2109	सूर्य	04/02/2126	चंद्र	18/08/2132
केतु	11/03/2085	शुक्र	15/05/2100	सूर्य	16/02/2110	चंद्र	06/08/2126	मंगल	19/03/2133
शुक्र	10/01/2088	सूर्य	20/09/2100	चंद्र	18/10/2111	मंगल	12/12/2126	राहु	17/09/2134
सूर्य	16/11/2088	चंद्र	21/04/2101	मंगल	17/12/2112	राहु	05/11/2127	गुरु	26/03/2135
चंद्र	17/04/2090	मंगल	17/09/2101	राहु	18/12/2115	गुरु	24/08/2128		00/00/0000
मंगल	14/04/2091	राहु	06/10/2102	गुरु	18/08/2118	शनि	06/08/2129		00/00/0000
राहु	01/11/2093	गुरु	12/09/2103	शनि	18/10/2121	बुध	12/06/2130		00/00/0000
गुरु	07/02/2096	शनि	20/10/2104	बुध	18/08/2124	केतु	18/10/2130		00/00/0000
शनि	17/10/2098	बुध	18/10/2105	केतु	18/10/2125	शुक्र	18/10/2131		00/00/0000

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल चंद्र 6 वर्ष 7 मा 6 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - केतु	
16/01/2019	
17/08/2019	
केतु	29/01/2019
शुक्र	05/03/2019
सूर्य	16/03/2019
चंद्र	03/04/2019
मंगल	15/04/2019
राहु	17/05/2019
गुरु	14/06/2019
शनि	18/07/2019
बुध	17/08/2019

चंद्र - शुक्र	
17/08/2019	
17/04/2021	
शुक्र	27/11/2019
सूर्य	27/12/2019
चंद्र	16/02/2020
मंगल	22/03/2020
राहु	22/06/2020
गुरु	11/09/2020
शनि	16/12/2020
बुध	13/03/2021
केतु	17/04/2021

चंद्र - सूर्य	
17/04/2021	
17/10/2021	
सूर्य	26/04/2021
चंद्र	11/05/2021
मंगल	22/05/2021
राहु	18/06/2021
गुरु	13/07/2021
शनि	11/08/2021
बुध	06/09/2021
केतु	16/09/2021
शुक्र	17/10/2021

मंगल - मंगल	
17/10/2021	
15/03/2022	
मंगल	25/10/2021
राहु	17/11/2021
गुरु	07/12/2021
शनि	30/12/2021
बुध	20/01/2022
केतु	29/01/2022
शुक्र	23/02/2022
सूर्य	02/03/2022
चंद्र	15/03/2022

मंगल - राहु	
15/03/2022	
02/04/2023	
राहु	11/05/2022
गुरु	01/07/2022
शनि	31/08/2022
बुध	25/10/2022
केतु	16/11/2022
शुक्र	19/01/2023
सूर्य	07/02/2023
चंद्र	11/03/2023
मंगल	02/04/2023

मंगल - गुरु	
02/04/2023	
08/03/2024	
गुरु	18/05/2023
शनि	11/07/2023
बुध	28/08/2023
केतु	17/09/2023
शुक्र	13/11/2023
सूर्य	30/11/2023
चंद्र	28/12/2023
मंगल	17/01/2024
राहु	08/03/2024

मंगल - शनि	
08/03/2024	
17/04/2025	
शनि	11/05/2024
बुध	08/07/2024
केतु	31/07/2024
शुक्र	07/10/2024
सूर्य	27/10/2024
चंद्र	30/11/2024
मंगल	23/12/2024
राहु	22/02/2025
गुरु	17/04/2025

मंगल - बुध	
17/04/2025	
14/04/2026	
बुध	07/06/2025
केतु	28/06/2025
शुक्र	28/08/2025
सूर्य	15/09/2025
चंद्र	15/10/2025
मंगल	05/11/2025
राहु	30/12/2025
गुरु	16/02/2026
शनि	14/04/2026

मंगल - केतु	
14/04/2026	
10/09/2026	
केतु	23/04/2026
शुक्र	18/05/2026
सूर्य	25/05/2026
चंद्र	07/06/2026
मंगल	15/06/2026
राहु	08/07/2026
गुरु	28/07/2026
शनि	20/08/2026
बुध	10/09/2026

मंगल - शुक्र	
10/09/2026	
10/11/2027	
शुक्र	20/11/2026
सूर्य	12/12/2026
चंद्र	16/01/2027
मंगल	10/02/2027
राहु	15/04/2027
गुरु	11/06/2027
शनि	17/08/2027
बुध	17/10/2027
केतु	10/11/2027

मंगल - सूर्य	
10/11/2027	
17/03/2028	
सूर्य	17/11/2027
चंद्र	28/11/2027
मंगल	05/12/2027
राहु	24/12/2027
गुरु	10/01/2028
शनि	30/01/2028
बुध	18/02/2028
केतु	25/02/2028
शुक्र	17/03/2028

मंगल - चंद्र	
17/03/2028	
16/10/2028	
चंद्र	04/04/2028
मंगल	17/04/2028
राहु	18/05/2028
गुरु	16/06/2028
शनि	20/07/2028
बुध	19/08/2028
केतु	31/08/2028
शुक्र	06/10/2028
सूर्य	16/10/2028

राहु - राहु	
16/10/2028	
30/06/2031	
राहु	13/03/2029
गुरु	23/07/2029
शनि	26/12/2029
बुध	15/05/2030
केतु	11/07/2030
शुक्र	23/12/2030
सूर्य	10/02/2031
चंद्र	03/05/2031
मंगल	30/06/2031

राहु - गुरु	
30/06/2031	
22/11/2033	
गुरु	24/10/2031
शनि	11/03/2032
बुध	13/07/2032
केतु	03/09/2032
शुक्र	27/01/2033
सूर्य	11/03/2033
चंद्र	24/05/2033
मंगल	14/07/2033
राहु	22/11/2033

राहु - शनि	
22/11/2033	
28/09/2036	
शनि	06/05/2034
बुध	30/09/2034
केतु	30/11/2034
शुक्र	23/05/2035
सूर्य	14/07/2035
चंद्र	08/10/2035
मंगल	08/12/2035
राहु	12/05/2036
गुरु	28/09/2036

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - बुध		राहु - केतु		राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र	
28/09/2036		18/04/2039		05/05/2040		06/05/2043		30/03/2044	
18/04/2039		05/05/2040		06/05/2043		30/03/2044		28/09/2045	
बुध	07/02/2037	केतु	10/05/2039	शुक्र	04/11/2040	सूर्य	22/05/2043	चंद्र	14/05/2044
केतु	02/04/2037	शुक्र	13/07/2039	सूर्य	28/12/2040	चंद्र	19/06/2043	मंगल	15/06/2044
शुक्र	05/09/2037	सूर्य	01/08/2039	चंद्र	30/03/2041	मंगल	08/07/2043	राहु	05/09/2044
सूर्य	21/10/2037	चंद्र	02/09/2039	मंगल	02/06/2041	राहु	26/08/2043	गुरु	17/11/2044
चंद्र	07/01/2038	मंगल	24/09/2039	राहु	13/11/2041	गुरु	09/10/2043	शनि	12/02/2045
मंगल	02/03/2038	राहु	21/11/2039	गुरु	08/04/2042	शनि	30/11/2043	बुध	01/05/2045
राहु	20/07/2038	गुरु	11/01/2040	शनि	29/09/2042	बुध	16/01/2044	केतु	02/06/2045
गुरु	21/11/2038	शनि	12/03/2040	बुध	03/03/2043	केतु	04/02/2044	शुक्र	01/09/2045
शनि	18/04/2039	बुध	05/05/2040	केतु	06/05/2043	शुक्र	30/03/2044	सूर्य	28/09/2045

राहु - मंगल		गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - बुध		गुरु - केतु	
28/09/2045		17/10/2046		04/12/2048		17/06/2051		22/09/2053	
17/10/2046		04/12/2048		17/06/2051		22/09/2053		29/08/2054	
मंगल	21/10/2045	गुरु	29/01/2047	शनि	30/04/2049	बुध	13/10/2051	केतु	12/10/2053
राहु	17/12/2045	शनि	01/06/2047	बुध	08/09/2049	केतु	30/11/2051	शुक्र	08/12/2053
गुरु	06/02/2046	बुध	20/09/2047	केतु	01/11/2049	शुक्र	16/04/2052	सूर्य	25/12/2053
शनि	08/04/2046	केतु	04/11/2047	शुक्र	04/04/2050	सूर्य	27/05/2052	चंद्र	22/01/2054
बुध	01/06/2046	शुक्र	13/03/2048	सूर्य	20/05/2050	चंद्र	04/08/2052	मंगल	11/02/2054
केतु	24/06/2046	सूर्य	21/04/2048	चंद्र	05/08/2050	मंगल	22/09/2052	राहु	03/04/2054
शुक्र	27/08/2046	चंद्र	25/06/2048	मंगल	28/09/2050	राहु	24/01/2053	गुरु	19/05/2054
सूर्य	15/09/2046	मंगल	09/08/2048	राहु	14/02/2051	गुरु	14/05/2053	शनि	12/07/2054
चंद्र	17/10/2046	राहु	04/12/2048	गुरु	17/06/2051	शनि	22/09/2053	बुध	29/08/2054

गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - राहु	
29/08/2054		29/04/2057		15/02/2058		17/06/2059		23/05/2060	
29/04/2057		15/02/2058		17/06/2059		23/05/2060		17/10/2062	
शुक्र	08/02/2055	सूर्य	14/05/2057	चंद्र	28/03/2058	मंगल	07/07/2059	राहु	02/10/2060
सूर्य	28/03/2055	चंद्र	07/06/2057	मंगल	25/04/2058	राहु	27/08/2059	गुरु	27/01/2061
चंद्र	17/06/2055	मंगल	24/06/2057	राहु	07/07/2058	गुरु	12/10/2059	शनि	14/06/2061
मंगल	13/08/2055	राहु	07/08/2057	गुरु	10/09/2058	शनि	05/12/2059	बुध	17/10/2061
राहु	06/01/2056	गुरु	15/09/2057	शनि	26/11/2058	बुध	22/01/2060	केतु	07/12/2061
गुरु	15/05/2056	शनि	31/10/2057	बुध	03/02/2059	केतु	11/02/2060	शुक्र	02/05/2062
शनि	16/10/2056	बुध	12/12/2057	केतु	04/03/2059	शुक्र	08/04/2060	सूर्य	15/06/2062
बुध	03/03/2057	केतु	29/12/2057	शुक्र	24/05/2059	सूर्य	25/04/2060	चंद्र	27/08/2062
केतु	29/04/2057	शुक्र	15/02/2058	सूर्य	17/06/2059	चंद्र	23/05/2060	मंगल	17/10/2062

षोडशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : केतु 9 वर्ष 10 मास 4 दिन

केतु 15 वर्ष		चंद्र 16 वर्ष		बुध 17 वर्ष		शुक्र 18 वर्ष		सूर्य 11 वर्ष	
25/03/2015		**28/01/2025**		**28/01/2041**		**28/01/2058**		**28/01/2076**	
28/01/2025		**28/01/2041**		**28/01/2058**		**28/01/2076**		**28/01/2087**	
	00/00/0000	चंद्र	14/04/2027	बुध	26/07/2043	शुक्र	13/11/2060	सूर्य	12/02/2077
	25/03/2015	बुध	17/08/2029	शुक्र	16/03/2046	सूर्य	29/07/2062	मंगल	04/04/2078
बुध	13/04/2016	शुक्र	10/02/2032	सूर्य	26/10/2047	मंगल	09/06/2064	गुरु	28/06/2079
शुक्र	11/08/2018	सूर्य	17/08/2033	मंगल	29/07/2049	गुरु	15/06/2066	शनि	25/10/2080
सूर्य	13/01/2020	मंगल	14/04/2035	गुरु	25/06/2051	शनि	17/08/2068	केतु	29/03/2082
मंगल	01/08/2021	गुरु	28/01/2037	शनि	13/07/2053	केतु	15/12/2070	चंद्र	04/10/2083
गुरु	07/04/2023	शनि	03/01/2039	केतु	24/09/2055	चंद्र	09/06/2073	बुध	15/05/2085
शनि	28/01/2025	केतु	28/01/2041	चंद्र	28/01/2058	बुध	28/01/2076	शुक्र	28/01/2087

मंगल 12 वर्ष		गुरु 13 वर्ष		शनि 14 वर्ष		केतु 15 वर्ष	
28/01/2087		**28/01/2099**		**29/01/2112**		**29/01/2126**	
28/01/2099		**29/01/2112**		**29/01/2126**		**00/00/0000**	
मंगल	25/04/2088	गुरु	14/07/2100	शनि	07/10/2113	केतु	07/01/2128
गुरु	30/08/2089	शनि	07/02/2102	केतु	31/07/2115	चंद्र	01/02/2130
शनि	10/02/2091	केतु	14/10/2103	चंद्र	05/07/2117	बुध	26/03/2131
केतु	29/08/2092	चंद्र	30/07/2105	बुध	24/07/2119		00/00/0000
चंद्र	26/04/2094	बुध	26/06/2107	शुक्र	25/09/2121		00/00/0000
बुध	28/01/2096	शुक्र	02/07/2109	सूर्य	23/01/2123		00/00/0000
शुक्र	08/12/2097	सूर्य	25/09/2110	मंगल	05/07/2124		00/00/0000
सूर्य	28/01/2099	मंगल	29/01/2112	गुरु	29/01/2126		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
षोडशोत्तरी दशा पूरे 116 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

त्रिभगी दशा

भोग्य दशा काल : चन्द्र 4 वर्ष 4 मास 15 दिन

चंद्र 7 वर्ष		मंगल 5 वर्ष		राहु 12 वर्ष		गुरु 11 वर्ष		शनि 13 वर्ष	
25/03/2015		**09/08/2019**		**09/04/2024**		**09/04/2036**		**09/12/2046**	
09/08/2019		**09/04/2024**		**09/04/2036**		**09/12/2046**		**09/08/2059**	
	00/00/0000	मंगल	17/11/2019	राहु	26/01/2026	गुरु	10/09/2037	शनि	10/12/2048
	00/00/0000	राहु	30/07/2020	गुरु	03/09/2027	शनि	20/05/2039	बुध	27/09/2050
	25/03/2015	गुरु	14/03/2021	शनि	28/07/2029	बुध	22/11/2040	केतु	24/06/2051
गुरु	09/10/2015	शनि	09/12/2021	बुध	10/04/2031	केतु	07/07/2041	शुक्र	03/08/2053
शनि	29/10/2016	बुध	07/08/2022	केतु	21/12/2031	शुक्र	18/04/2043	सूर्य	22/03/2054
बुध	09/10/2017	केतु	15/11/2022	शुक्र	21/12/2033	सूर्य	30/10/2043	चंद्र	12/04/2055
केतु	28/02/2018	शुक्र	26/08/2023	सूर्य	28/07/2034	चंद्र	18/09/2044	मंगल	07/01/2056
शुक्र	10/04/2019	सूर्य	19/11/2023	चंद्र	28/07/2035	मंगल	04/05/2045	राहु	01/12/2057
सूर्य	09/08/2019	चंद्र	09/04/2024	मंगल	09/04/2036	राहु	09/12/2046	गुरु	09/08/2059

बुध 11 वर्ष		केतु 5 वर्ष		शुक्र 13 वर्ष		सूर्य 4 वर्ष		चंद्र 7 वर्ष	
09/08/2059		**09/12/2070**		**09/08/2075**		**08/12/2088**		**08/12/2092**	
09/12/2070		**09/08/2075**		**08/12/2088**		**08/12/2092**		**00/00/0000**	
बुध	18/03/2061	केतु	18/03/2071	शुक्र	29/10/2077	सूर्य	19/02/2089	चंद्र	29/06/2093
केतु	14/11/2061	शुक्र	27/12/2071	सूर्य	30/06/2078	चंद्र	21/06/2089	मंगल	18/11/2093
शुक्र	05/10/2063	सूर्य	22/03/2072	चंद्र	09/08/2079	मंगल	14/09/2089	राहु	19/11/2094
सूर्य	29/04/2064	चंद्र	11/08/2072	मंगल	19/05/2080	राहु	22/04/2090	गुरु	25/03/2095
चंद्र	09/04/2065	मंगल	18/11/2072	राहु	20/05/2082	गुरु	02/11/2090		00/00/0000
मंगल	07/12/2065	राहु	01/08/2073	गुरु	28/02/2084	शनि	22/06/2091		00/00/0000
राहु	20/08/2067	गुरु	16/03/2074	शनि	09/04/2086	बुध	15/01/2092		00/00/0000
गुरु	21/02/2069	शनि	11/12/2074	बुध	28/02/2088	केतु	09/04/2092		00/00/0000
शनि	09/12/2070	बुध	09/08/2075	केतु	08/12/2088	शुक्र	08/12/2092		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
त्रिभगी दशा पूरे 80 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

अष्टोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शुक्र 8 वर्ष 8 मास 10 दिन

शुक्र 21 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 15 वर्ष		मंगल 8 वर्ष		बुध 17 वर्ष	
25/03/2015		04/12/2023		04/12/2029		04/12/2044		04/12/2052	
04/12/2023		04/12/2029		04/12/2044		04/12/2052		04/12/2069	
	00/00/0000	सूर्य	04/04/2024	चंद्र	04/01/2032	मंगल	08/07/2045	बुध	08/08/2055
	00/00/0000	चंद्र	02/02/2025	मंगल	13/02/2033	बुध	11/10/2046	शनि	05/03/2057
	00/00/0000	मंगल	15/07/2025	बुध	25/06/2035	शनि	08/07/2047	गुरु	01/03/2060
	25/03/2015	बुध	25/06/2026	शनि	13/11/2036	गुरु	04/12/2048	राहु	20/01/2062
बुध	14/12/2015	शनि	14/01/2027	गुरु	05/07/2039	राहु	24/10/2049	शुक्र	11/05/2065
शनि	24/11/2017	गुरु	03/02/2028	राहु	05/03/2041	शुक्र	15/05/2051	सूर्य	21/04/2066
गुरु	04/08/2021	राहु	04/10/2028	शुक्र	03/02/2044	सूर्य	25/10/2051	चंद्र	31/08/2068
राहु	04/12/2023	शुक्र	04/12/2029	सूर्य	04/12/2044	चंद्र	04/12/2052	मंगल	04/12/2069

शनि 10 वर्ष		गुरु 19 वर्ष		राहु 12 वर्ष		शुक्र 21 वर्ष	
04/12/2069		04/12/2079		04/12/2098		05/12/2110	
04/12/2079		04/12/2098		05/12/2110		00/00/0000	
शनि	07/11/2070	गुरु	08/04/2083	राहु	05/04/2100	शुक्र	04/01/2115
गुरु	11/08/2072	राहु	18/05/2085	शुक्र	05/08/2102	सूर्य	06/03/2116
राहु	20/09/2073	शुक्र	27/01/2089	सूर्य	06/04/2103	चंद्र	04/02/2119
शुक्र	01/09/2075	सूर्य	16/02/2090	चंद्र	05/12/2104	मंगल	25/08/2120
सूर्य	22/03/2076	चंद्र	07/10/2092	मंगल	25/10/2105	बुध	26/03/2123
चंद्र	11/08/2077	मंगल	05/03/2094	बुध	15/09/2107		00/00/0000
मंगल	08/05/2078	बुध	01/03/2097	शनि	25/10/2108		00/00/0000
बुध	04/12/2079	शनि	04/12/2098	गुरु	05/12/2110		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
अष्टोत्तरी दशा पूरे 108 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

योगिनी दशा

भोग्य दशा काल : सिद्धा 4 वर्ष 7 मास 4 दिन

सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष	
25/03/2015		**28/10/2019**		**28/10/2027**		**28/10/2028**		**28/10/2030**	
28/10/2019		**28/10/2027**		**28/10/2028**		**28/10/2030**		**28/10/2033**	
	25/03/2015	संक	08/08/2021	मंग	07/11/2027	पिंग	07/12/2028	धांय	27/01/2031
संक	28/09/2015	मंग	28/10/2021	पिंग	28/11/2027	धांय	06/02/2029	भ्राम	29/05/2031
मंग	08/12/2015	पिंग	08/04/2022	धांय	28/12/2027	भ्राम	28/04/2029	भद्रि	28/10/2031
पिंग	28/04/2016	धांय	08/12/2022	भ्राम	07/02/2028	भद्रि	08/08/2029	उल्क	28/04/2032
धांय	27/11/2016	भ्राम	28/10/2023	भद्रि	29/03/2028	उल्क	07/12/2029	सिद्ध	27/11/2032
भ्राम	07/09/2017	भद्रि	07/12/2024	उल्क	28/05/2028	सिद्ध	28/04/2030	संक	29/07/2033
भद्रि	28/08/2018	उल्क	08/04/2026	सिद्ध	07/08/2028	संक	08/10/2030	मंग	28/08/2033
उल्क	28/10/2019	सिद्ध	28/10/2027	संक	28/10/2028	मंग	28/10/2030	पिंग	28/10/2033

भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष	
28/10/2033		**28/10/2037**		**28/10/2042**		**28/10/2048**		**28/10/2055**	
28/10/2037		**28/10/2042**		**28/10/2048**		**28/10/2055**		**28/10/2063**	
भ्राम	08/04/2034	भद्रि	08/07/2038	उल्क	28/10/2043	सिद्ध	09/03/2050	संक	08/08/2057
भद्रि	28/10/2034	उल्क	09/05/2039	सिद्ध	27/12/2044	संक	28/09/2051	मंग	28/10/2057
उल्क	29/06/2035	सिद्ध	28/04/2040	संक	28/04/2046	मंग	08/12/2051	पिंग	08/04/2058
सिद्ध	08/04/2036	संक	08/06/2041	मंग	28/06/2046	पिंग	28/04/2052	धांय	08/12/2058
संक	26/02/2037	मंग	29/07/2041	पिंग	28/10/2046	धांय	27/11/2052	भ्राम	28/10/2059
मंग	08/04/2037	पिंग	07/11/2041	धांय	29/04/2047	भ्राम	07/09/2053	भद्रि	07/12/2060
पिंग	28/06/2037	धांय	08/04/2042	भ्राम	28/12/2047	भद्रि	28/08/2054	उल्क	08/04/2062
धांय	28/10/2037	भ्राम	28/10/2042	भद्रि	28/10/2048	उल्क	28/10/2055	सिद्ध	28/10/2063

नोट :- योगनियों के स्वामी नीचे दिए गए हैं :-

मंगला	: चन्द्र	पिंगला	: सूर्य	धान्या	: गुरु	भ्रामरी	: मंगल
भद्रिका	: बुध	उल्का	: शनि	सिद्धा	: शुक्र	संकटा	: राहु/केतु

उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
योगिनी दशा 36 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

योगिनी दशा

मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष	
28/10/2063		28/10/2064		28/10/2066		28/10/2069		28/10/2073	
28/10/2064		28/10/2066		28/10/2069		28/10/2073		28/10/2078	
मंग	07/11/2063	पिंग	07/12/2064	धांय	27/01/2067	भ्राम	08/04/2070	भद्रि	08/07/2074
पिंग	28/11/2063	धांय	06/02/2065	भ्राम	29/05/2067	भद्रि	28/10/2070	उल्क	09/05/2075
धांय	28/12/2063	भ्राम	28/04/2065	भद्रि	28/10/2067	उल्क	29/06/2071	सिद्ध	28/04/2076
भ्राम	07/02/2064	भद्रि	08/08/2065	उल्क	28/04/2068	सिद्ध	08/04/2072	संक	08/06/2077
भद्रि	29/03/2064	उल्क	07/12/2065	सिद्ध	27/11/2068	संक	26/02/2073	मंग	29/07/2077
उल्क	28/05/2064	सिद्ध	28/04/2066	संक	29/07/2069	मंग	08/04/2073	पिंग	07/11/2077
सिद्ध	07/08/2064	संक	08/10/2066	मंग	28/08/2069	पिंग	28/06/2073	धांय	08/04/2078
संक	28/10/2064	मंग	28/10/2066	पिंग	28/10/2069	धांय	28/10/2073	भ्राम	28/10/2078

उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष	
28/10/2078		28/10/2084		28/10/2091		28/10/2099		29/10/2100	
28/10/2084		28/10/2091		28/10/2099		29/10/2100		29/10/2102	
उल्क	28/10/2079	सिद्ध	09/03/2086	संक	08/08/2093	मंग	07/11/2099	पिंग	08/12/2100
सिद्ध	27/12/2080	संक	28/09/2087	मंग	28/10/2093	पिंग	28/11/2099	धांय	07/02/2101
संक	28/04/2082	मंग	08/12/2087	पिंग	08/04/2094	धांय	28/12/2099	भ्राम	29/04/2101
मंग	28/06/2082	पिंग	28/04/2088	धांय	08/12/2094	भ्राम	07/02/2100	भद्रि	09/08/2101
पिंग	28/10/2082	धांय	27/11/2088	भ्राम	28/10/2095	भद्रि	30/03/2100	उल्क	08/12/2101
धांय	29/04/2083	भ्राम	07/09/2089	भद्रि	07/12/2096	उल्क	29/05/2100	सिद्ध	29/04/2102
भ्राम	28/12/2083	भद्रि	28/08/2090	उल्क	08/04/2098	सिद्ध	08/08/2100	संक	09/10/2102
भद्रि	28/10/2084	उल्क	28/10/2091	सिद्ध	28/10/2099	संक	29/10/2100	मंग	29/10/2102

धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष	
29/10/2102		29/10/2105		29/10/2109		29/10/2114		29/10/2120	
29/10/2105		29/10/2109		29/10/2114		29/10/2120		00/00/0000	
धांय	28/01/2103	भ्राम	09/04/2106	भद्रि	09/07/2110	उल्क	29/10/2115	सिद्ध	10/03/2122
भ्राम	30/05/2103	भद्रि	29/10/2106	उल्क	10/05/2111	सिद्ध	28/12/2116	संक	26/03/2123
भद्रि	29/10/2103	उल्क	30/06/2107	सिद्ध	29/04/2112	संक	29/04/2118		00/00/0000
उल्क	29/04/2104	सिद्ध	09/04/2108	संक	09/06/2113	मंग	29/06/2118		00/00/0000
सिद्ध	28/11/2104	संक	27/02/2109	मंग	30/07/2113	पिंग	29/10/2118		00/00/0000
संक	30/07/2105	मंग	09/04/2109	पिंग	08/11/2113	धांय	30/04/2119		00/00/0000
मंग	29/08/2105	पिंग	29/06/2109	धांय	09/04/2114	भ्राम	29/12/2119		00/00/0000
पिंग	29/10/2105	धांय	29/10/2109	भ्राम	29/10/2114	भद्रि	29/10/2120		00/00/0000

चर दशा

भोग्य दशा काल : वृष 11 वर्ष 0 मास 0 दिन

वृष 11 वर्ष	
25/03/2015	
25/03/2026	
मेष	23/02/2016
मीन	23/01/2017
कुंभ	23/12/2017
मक	23/11/2018
धनु	24/10/2019
वृश्चि	23/09/2020
तुला	24/08/2021
कन्या	24/07/2022
सिंह	24/06/2023
कर्क	24/05/2024
मिथु	24/04/2025
वृष	25/03/2026

मेष 12 वर्ष	
25/03/2026	
25/03/2038	
वृष	25/03/2027
मिथु	24/03/2028
कर्क	24/03/2029
सिंह	25/03/2030
कन्या	25/03/2031
तुला	24/03/2032
वृश्चि	24/03/2033
धनु	25/03/2034
मक	25/03/2035
कुंभ	24/03/2036
मीन	24/03/2037
मेष	25/03/2038

मीन 8 वर्ष	
25/03/2038	
25/03/2046	
मेष	23/11/2038
वृष	25/07/2039
मिथु	24/03/2040
कर्क	23/11/2040
सिंह	24/07/2041
कन्या	25/03/2042
तुला	23/11/2042
वृश्चि	25/07/2043
धनु	24/03/2044
मक	23/11/2044
कुंभ	24/07/2045
मीन	25/03/2046

कुम्भ 5 वर्ष	
25/03/2046	
25/03/2051	
मीन	24/08/2046
मेष	23/01/2047
वृष	24/06/2047
मिथु	23/11/2047
कर्क	24/04/2048
सिंह	23/09/2048
कन्या	22/02/2049
तुला	24/07/2049
वृश्चि	23/12/2049
धनु	25/05/2050
मक	24/10/2050
कुंभ	25/03/2051

मकर 2 वर्ष	
25/03/2051	
24/03/2053	
धनु	25/05/2051
वृश्चि	25/07/2051
तुला	24/09/2051
कन्या	23/11/2051
सिंह	23/01/2052
कर्क	24/03/2052
मिथु	24/05/2052
वृष	24/07/2052
मेष	23/09/2052
मीन	23/11/2052
कुंभ	23/01/2053
मक	24/03/2053

धनु 7 वर्ष	
24/03/2053	
24/03/2060	
वृश्चि	23/10/2053
तुला	25/05/2054
कन्या	24/12/2054
सिंह	25/07/2055
कर्क	23/02/2056
मिथु	23/09/2056
वृष	24/04/2057
मेष	23/11/2057
मीन	24/06/2058
कुंभ	23/01/2059
मक	24/08/2059
धनु	24/03/2060

वृश्चिक 4 वर्ष	
24/03/2060	
24/03/2064	
तुला	24/07/2060
कन्या	23/11/2060
सिंह	24/03/2061
कर्क	24/07/2061
मिथु	23/11/2061
वृष	25/03/2062
मेष	24/07/2062
मीन	23/11/2062
कुंभ	25/03/2063
मक	25/07/2063
धनु	23/11/2063
वृश्चि	24/03/2064

तुला 6 वर्ष	
24/03/2064	
25/03/2070	
वृश्चि	23/09/2064
धनु	24/03/2065
मक	23/09/2065
कुंभ	25/03/2066
मीन	23/09/2066
मेष	25/03/2067
वृष	24/09/2067
मिथु	24/03/2068
कर्क	23/09/2068
सिंह	24/03/2069
कन्या	23/09/2069
तुला	25/03/2070

कन्या 7 वर्ष	
25/03/2070	
24/03/2077	
तुला	24/10/2070
वृश्चि	25/05/2071
धनु	24/12/2071
मक	24/07/2072
कुंभ	22/02/2073
मीन	23/09/2073
मेष	24/04/2074
वृष	23/11/2074
मिथु	24/06/2075
कर्क	23/01/2076
सिंह	23/08/2076
कन्या	24/03/2077

सिंह 5 वर्ष	
24/03/2077	
25/03/2082	
कन्या	24/08/2077
तुला	23/01/2078
वृश्चि	24/06/2078
धनु	23/11/2078
मक	24/04/2079
कुंभ	24/09/2079
मीन	23/02/2080
मेष	24/07/2080
वृष	23/12/2080
मिथु	24/05/2081
कर्क	23/10/2081
सिंह	25/03/2082

कर्क 2 वर्ष	
25/03/2082	
24/03/2084	
मिथु	25/05/2082
वृष	24/07/2082
मेष	23/09/2082
मीन	23/11/2082
कुंभ	23/01/2083
मक	25/03/2083
धनु	25/05/2083
वृश्चि	25/07/2083
तुला	24/09/2083
कन्या	23/11/2083
सिंह	23/01/2084
कर्क	24/03/2084

मिथुन 8 वर्ष	
24/03/2084	
24/03/2092	
वृष	23/11/2084
मेष	24/07/2085
मीन	25/03/2086
कुंभ	23/11/2086
मक	25/07/2087
धनु	24/03/2088
वृश्चि	23/11/2088
तुला	24/07/2089
कन्या	25/03/2090
सिंह	23/11/2090
कर्क	25/07/2091
मिथु	24/03/2092

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

दशा विश्लेषण

महादशा :- चन्द्र
(25/03/2015 - 17/10/2021)

आपकी कुण्डली में चन्द्र की महादशा 25/03/2015 को आरम्भ तथा 17/10/2021 समाप्त होगी। इसकी अवधि दस वर्ष है।

आपकी जन्मकुण्डली में चन्द्र प्रथम भाव में अवस्थित है और आपके लग्न को बल प्रदान कर रहा है। यह आपकी शारीरिक संरचना, गठन, जीवन-शक्ति, ऊर्जस्विता, समृद्धि लम्बी आयु आदि का प्रतिनिधित्व करता है। संक्षेप में दस वर्ष की इस अवधि में आपको संतोष के साथ-साथ शांति और समृद्धि की प्राप्ति होगी। आपकी समृद्धि अत्यंत सुदृढ़ होगी। यह अवधि गतिविधि से परिपूर्ण होगी।

स्वास्थ्य :

चन्द्र लग्न में अवस्थित है जो केन्द्र और त्रिकोण दोनों है। यह स्थिति सुखी और स्वस्थ जीवन सुनिश्चित करती है। इस दशा में कोई घातक रोग अथवा दुर्घटना नहीं होगी। आप स्वयं को शक्तिशाली अनुभव करेंगे और अपने दैनिक कार्यों का उपयुक्त ढंग से सम्पादन करने में समर्थ होंगे। आप सुन्दर हैं और अत्यन्त भावुक, कुतूहली, व्यग्र तथा बेचैन हैं।

धन सम्पत्ति :

आपका मस्तिष्क तथा बुद्धि अधिक धनोपार्जन की दिशा में प्रवृत्त हैं क्योंकि दशेश चन्द्र मस्तिष्क का कारक है। आप अपनी धन-सम्पत्ति की वृद्धि करेंगे। आपके बैंक बैलेन्स तथा अन्य सम्पत्तियों में वृद्धि की सम्भावना भी है।

व्यवसाय :

चन्द्र दशा के दौरान आप अपनी स्थिति तथा कार्य से संतुष्ट होंगे। यदि आप सेवारत हैं तो आपकी उन्नति के आसार हैं और व्यवसायी हैं तो व्यवसाय के विस्तार तथा नये कार्य के संकेत हैं। आपके मस्तिष्क में नये रचनात्मक विचार उभरेंगे जिनकी आपके सहकर्मी तथा उच्चाधिकारी सराहना करेंगे। चन्द्र दशा के कारण आपके व्यवसाय में आपकी स्थिति सुदृढ़ होगी और न्यायप्रियता तथा उच्चे आचरण के लिए आप प्रसिद्ध होंगे। आप ऐसे व्यवसाय का चयन भी करेंगे जिसमें उतार-चढ़ाव हो। आप अधिकार के इच्छुक होंगे। आप एक सतर्क व्यक्ति हैं।

पारिवारिक जीवन :

सप्तम भाव, जो साझेदारी का भाव है, पर चन्द्र की दृष्टि होने के कारण इस काल में आपकी साझेदारी और पारिवारिक जीवन उत्तम होंगे।

आपके जीवनसाथी पूर्ण सहयोगी और सुन्दर होंगे। आपकी माता भी पारिवारिक जीवन में आपकी सहायता करेंगी और आपके बच्चे आपके आज्ञाकारी होंगे। आपके पिता भी आपके व्यवसाय में आपकी सहायता कर आपको आत्म विश्वासी बनाएंगे।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

यदि आप अध्ययन को अपनी जीवन-वृत्ति बनाएंगे तो लेखन-पठन जारी रखेंगे और सफलता प्राप्त करेंगे।

महादशा :- मंगल
(17/10/2021 - 16/10/2028)

मंगल की महादशा 17/10/2021 को आरम्भ होगी और 7 वर्ष की होकर 16/10/2028 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में मंगल बारहवें भाव में स्थित है। मंगल की दृष्टि छठे, सातवें तथा तीसरे भाव पर है। इसके पूर्व आपकी 10 वर्ष की चन्द्रदशा चल रही थी। आपकी छोटी यात्राएँ हुई होंगी और आपको बौद्धिक कार्यों में सफलता तथा भाई-बहनों से सुख मिला होगा। इस दशा के दौरान व्यय, यात्रा तथा आध्यात्मिक कार्यों में वृद्धि हो सकती है।

स्वास्थ्य :

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपको कोई बड़ी बीमारी नहीं होगी। किन्तु आपको मामूली चोटों और आँख की समस्याओं के प्रति सावधानी बरतनी होगी। आपके पैरों तथा टखनों में पीड़ा हो सकती है। कुछ मामूली बीमारियों को छोड़ आपका स्वास्थ्य सामान्यतया उत्तम रहेगा।

अर्थ और व्यवसाय :

धन संचय में आपको कुछ समस्या हो सकती है किन्तु, आपकी आय आपके व्यय से कम नहीं होगी और आपके उपर ऋण नही होगा। छठे भाव पर मंगल की दृष्टि के फलस्वरूप आपको विपक्षियों-विरोधियों पर विजय मिल सकती है और उनसे लाभ हो सकता है। जीविका के लिये सैन्य सेवा, इन्जीनियरिंग, सर्जरी के कार्य या लोहा-इस्पात से संबद्ध व्यवसाय का चयन कर सकते हैं। लोहा और इस्पात, सर्जरी, अस्पताल प्रशासन या परोपकारी संस्था से संबद्ध व्यवसाय लाभदायक होगा। नौकरीपेशा लोगों के कार्यों में परिवर्तन और साझेदारों से लाभ हो सकता है और आप करार तथा अनुबन्ध कर सकते हैं। आपका स्थानान्तरण हो सकता है। व्यवसाय-व्यापार से जुड़े लोगों को लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ सकता है। सफलता वाधित हो सकती है, व्यापार में उथल-पुथल हो सकती है किन्तु दशा की प्रगति के साथ इसमें सुधार हो सकता है।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

आपको वाहन सुख मिल सकता है। यात्रा की सम्भावना है और आप व्यापार के सिलसिले में विदेश भी जा सकते हैं। यात्राएं आखिर में लाभदायक सिद्ध होंगी। ऐसा मंगल की अन्तर्दशा में होगा। जमीन-जायदाद के मामलों के लिए यह दशा उत्तम होगी। इस दशा के दौरान सम्पत्ति का लेन-देन हो सकता है।

शिक्षा :

आपको अपनी श्रेणी बरकरार रखने के लिये कठिन परिश्रम करना होगा। किन्तु आप दृढ़संकल्प के साथ अच्छा करेंगे। आपके पाठ्यक्रम में कुछ परिवर्तन हो सकता है। यदि आप शोध-परियोजनाओं से सम्बद्ध हैं तो इस दशा में, और खासकर बुध और मंगल की अन्तर्दशा में, अच्छा करेंगे। आपके लिये गणित, तर्कशास्त्र, विधि तथा गूढ़ विषयों का अध्ययन

लाभदायक हो सकता है। आपको विरोधियों व प्रतिस्पर्धियों पर विजय मिल सकती है। आपकी धार्मिक ग्रन्थों के अध्ययन में रुची होगी।

परिवार :

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। बच्चों से अस्थायी रूप से दूर हो सकते हैं। उन्हें अध्ययन कार्यों के सिलसिले में घर छोड़ना पड़ सकता है। आपके जीवन साथी में बाधाओं का सामना करने की पर्याप्त क्षमता होगी। आपके जीवन साथी के साथ सम्बन्ध मधुर रहेंगे। आपकी माता के लिए समय समृद्धिदायक रहेगा, उनकी यात्रा हो सकती है और आपके उनके साथ सम्बन्ध सुन्दर रहेंगे। आपके पिता की अचल सम्पत्ति और जमीन-जायदाद में वृद्धि होगी। आपके छोटे भाई-बहनों के व्यवसाय में उन्नति होगी और बड़ों के लिए समय लाभदायक रहेगा। आपके उनके साथ सम्बन्ध बहुत अच्छे रहेंगे। आपके मित्रों की संख्या विशाल होगी और इस दशा के दौरान आप उनसे सम्पर्क बनाये रहेंगे।

अन्तर्दशा :

मंगल की दशा में मंगल की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपकी यात्रा और व्यय हो सकता है। राहु कुछ समस्याए उत्पन्न कर सकता है जबकि गुरु की अन्तर्दशा में लाभ किन्तु स्वास्थ्य कुछ खराब रहेगा। शनि की अन्तर्दशा के फलस्वरूप व्यवसाय में प्रगति होगी जबकि बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपकी शिक्षा उत्तम होगी और निवेश तथा सट्टा सफल रहेगा। केतु के कारण कुछ मानसिक तनाव हो सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और धन तथा सुख की प्राप्ति होगी। आगे सूर्य की अन्तर्दशा के दौरान आपको जीवन का आराम तथा माता से लाभ मिलेगा जबकि चन्द्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको छोटे भाई-बहनों से सुख मिलेगा तथा यात्राएं होंगी।

महादशा :– राहु
(16/10/2028 - 17/10/2046)

राहु की महादशा 16/10/2028 को आरम्भ और 17/10/2046 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 18 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में राहु पंचम भाव में स्थित है। राहु की दृष्टि ग्यारहवें भाव पर है। इसके पहले आपकी सात वर्ष की मंगल दशा चल रही थी। मंगल के कारण आपको इस दशा के दौरान सुख, अचल सम्पत्ति में वृद्धि, सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति हुई होगी। राहु की वर्तमान दशा में सट्टे तथा निवेश में लाभ होगा, तकनीकी शिक्षा की प्राप्ति होगी और जीविकोपार्जन में उन्नति होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपको स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपका शक्ति मिलेगी। मौसम में परिवर्तन के कारण पाचन समस्या, आँत सम्बन्धी समस्या, आल्सर और घाव, चर्मरोग और उदर–रोग (औरतों को) आदि बीमारियाँ हो सकती है। आपको बच्चे के जन्म के समय सावधान रहना चाहिए। कुछ सावधानी बरतकर इनमें से कुछ बीमारियों से बचा जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी। सट्टे तथा निवेश से आपको अच्छा लाभ मिलेगा। ग्यारहवें भाव पर राहु की दृष्टि के फलस्वरूप आपको हर प्रकार का लाभ मिलेगा और आपके मित्र होंगे जो आपके लिए लाभदायक होंगे। जीविका तथा व्यवसाय के लिए विधि, दवा, लेख, कम्प्यूटर राजनीति, खेल, प्रबन्धन, पदाधिकारी कापद आदि का चयन कर सकते हैं। लोहा–इस्पात, चमड़े के सामान, दवा, एण्टीवायोटिक्स, रसायन आदि का व्यापार लाभदायक होगा। सेवारत लोगों का कुछ परिवर्तन, आय में अचानक वृद्धि, कार्य–स्थान में अनपेक्षित प्रगति और स्थिति कठिन होगी। व्यापार–व्यवसाय से जुड़े लोगों की भी अनपेक्षित प्रगति, अचानक लाभ और हानि होगी। आप अपने काय्र अथवा व्यावार में परिवर्तन कर सकते हैं। कोई भी परिवर्तन लाभदायक होगा।

वाहन, यात्रा, जमीन–जायदाद :

मंगल की अन्तर्दशा में आपको लाभ व सुख मिलेगा। जमीन–जायदाद के लेन–देन के सभी मामलों के लिए यह समय लाभदायक है। शुक्र की अन्तर्दशा में आपकी छोटी यात्रा और चन्द्र की अन्तर्दशा में लम्बी यात्रा होगी। यात्रा में सावधानी बरतनी चाहिए।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा उत्तम होगी। इन्जीनियरिंग, प्रबन्धन, कम्प्यूटर विज्ञान, विधि, दवा, खेल आदि से संबंधित विषय आपके लिए अच्छा होगा। आप दृढ़प्रतिज्ञ हैं और आपको यश तथा ख्याति मिलेगी। परमविज्ञान में भी आपकी रुचि होगी।

परिवार :

आपके बच्चों को सफलता तथा समृद्धि मिलेगी और आपको उनसे सुख मिलेगा। आपके जीवन साथी को लाभ और अर्थ-लाभ का अवसर मिलेगा और उनकी इच्छा की पूर्ति होगी। आपका आपके जीवन साथी के साथ संबंध मधुर रहेगा। आपकी माता को लाभ और समृद्धि मिलेगी जबकि आपके पिता को समृद्धि मिलेगी तथा उनकी यात्रा और तीर्थाटन होगा। आपके छोटे भाई-बहनों की यात्रा होगी, उनका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और यातायात में लाभ होगा और बड़े भाई-बहनों को साझेदारों से लाभ, यात्रा और वाणिज्य-व्यापार में लाभ मिलेगा।

अन्तर्दशा :

राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको सम्पत्ति तथा तकनीकी शिक्षा मिलेगी। गुरु की अन्तर्दशा आपके लिए भाग्यशाली होगा यद्यपि विरोधियों के कारण कुछ मामूली समस्या हो सकती है। शनि की महादशा कष्टकर सिद्ध होगी किन्तु कुछ भौतिक लाभ और यात्रा हो सकती है। बुध की अन्तर्दशा छोटे भाई-बहनों के लिए सहायक होगी जिसमें उनकी यात्रा और व्यय होगा। केतु की अन्तर्दशा में कुछ समस्या उत्पन्न हो सकती है। शुक्र की अन्तर्दशा के दौरान आपको लाभ तथा अचल सम्पत्ति में वृद्धि होगी जबकि सूर्य की अन्तर्दशा में पारिवारिक सुख और सम्पत्ति में वृद्धि होगी। चन्द्र की अन्तर्दशा में स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, सम्पत्ति, सुख ओर सफलता मिलेगी जबकि मंगल के फलस्वरूप सुख, बच्चे का जन्म तथा जीवन-वृत्ति में उन्नति होगी।

महादशा :- गुरु
(17/10/2046 - 17/10/2062)

आपकी जन्मकुण्डली में गुरु की महादशा 17/10/2046 को आरम्भ और 17/10/2062 को समाप्त होगी। इसकी अवधि सोलह वर्ष है।

आपकी जन्मकुण्डली में गुरु तृतीय भाव में स्थित है। तृतीय भाव मानसिक अभिरुचि, बुद्धि, साहस, दृढ़ता, छोटे भाई-बहन, छोटी यात्रा, वाहन, बॉण्ड, गले, कन्धे, हँसली तथा स्नायु-तंत्र का द्योतक है। गुरु स्वभाव से एक शुभग्रह है। आपकी जन्मकुण्डली में तृतीय भाव में स्थित इस ग्रह की दृष्टि सातवें, नवें और ग्यारहवें भाव पर है और यह उक्त भावों के कार्यों को प्रभावित कर रहा है। अतः सोलह वर्षों की यह दशा आपके लिए शान्तिपूर्ण, समृद्धि दायक तथा स्वास्थ्यप्रद होगी।

स्वास्थ्य :

साहस, पराक्रम तथा शक्ति के तृतीय भाव में स्थित महादशा स्वामी गुरु के कारण आपको शक्ति मिलेगी और आप हर तरह की कठिन परीक्षा का सामना साहसपूर्वक करेंगे। आपको कोई गम्भीर बीमारी नहीं होगी और स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

धन-सम्पत्ति :

तृतीय भाव में स्थित गुरु की दृष्टि ग्यारहवें भाव (नवें और सातवें भाव के अतिरिक्त) पर है। ग्यारहवाँ भाव लाभ का भाव है इसलिए आपको धन-सम्पत्ति में वृद्धि के अवसर मिलेंगे। इस दशा के दौरान आप अपनी आय के स्रोतों और चल-अचल सम्पत्ति में वृद्धि करने में सक्षम होंगे।

व्यवसाय :

तृतीय भाव में स्थित ज्ञान और शिक्षा के कारक गुरु की (सातवें भाव के अतिरिक्त) ग्यारहवें तथा नवें भावों पर दृष्टि है। फलतः आपकी प्रवृत्ति साहित्यिक क्षेत्र की ओर होगी। आप लेखक या उपन्यासकार और एक साहित्यिक व्यक्ति हो सकते हैं। आप हर क्षेत्र में प्रगति करेंगे और भाई-बहनों तथा अन्य सहयोगियों, संबंधियों के सहयोग के फलस्वरूप आपको पर्याप्त लाभ मिलेगा।

पारिवारिक जीवन :

तृतीय भाव में स्थित गुरु की (नवें तथा ग्यारहवें भावों के अतिरिक्त) सातवें भाव पर दृष्टि है। सातवां भाव जीवनसाथी का भाव है। इसलिए आपके जीवनसाथी बहुत सहयोगी होंगे। इस दशा के दौरान आपका पारिवारिक जीवन सद्भावपूर्ण तथा अनुकूल होगा। आपके बच्चे तथा छोटे भाई-बहन आपके आज्ञाकारी होंगे।

महादशा :- शनि
(17/10/2062 - 17/10/2081)

शनि की महादशा की अवधि उन्नीस वर्ष की है। आपकी कुण्डली में यह 17/10/2062 को आरम्भ और 17/10/2081 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में शनि सप्तम भाव में स्थित है। यह स्वाभाविक रूप से एक अशुभ ग्रह है। यह फल की प्राप्ति में बाधा तथा विलम्ब कर जातक के धैर्य की परीक्षा लेता है। यह परिश्रम के फल से वंचित नहीं करता, पर लक्ष्य की प्राप्ति के लिए जातक को कठिन परिश्रम करने को प्रेरित करता है। जन्म कुण्डली में सप्तम भाव में स्थित इस ग्रह की दृष्टि नवम, प्रथम तथा चतुर्थ भावों पर है जिससे उनके कार्य प्रभावित हो रहे हैं। सप्तम भाव कानूनी गठबंधन, दासता, जीवन ओर व्यापार के साझेदार, वाद-मुकदमा, विदेश में अर्जित प्रभाव व सम्मान का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

सप्तम भाव में स्थित महादशा स्वामी शनि की प्रथम भाव (9वें और 4थे भावों के साथ-साथ) पर दृष्टि है इसलिए आपको किसी बड़ी बीमारी या दुर्घटना की सम्भावना नहीं है, किन्तु आपका व्यक्तित्व आकर्षक होने के बावजूद आपको कुछ स्वास्थ्य संबंधी समस्या हो सकती है।

अर्थ और सम्पत्ति :

सप्तम भाव में स्थित शनि के कारण आपको कठिन परिश्रम करना पड़ सकता है और लक्ष्य की प्राप्ति में और अर्थ सम्पत्ति में वृद्धि के मार्ग में अनेक बाधाओं का सामना करना पर सकता है। इसके अष्टम भाव स्वामी होने के कारण भी आपकी आर्थिक स्थिति में उतार-चढ़ाव आएंगे। आपकी आर्थिक स्थिति परिवर्तनशील रहेगी।

व्यवसाय :

आप व्यवसाय में सुव्यवस्थित हो सकते हैं। आपके विदेश जाने और वहाँ बस जाने की सम्भावना भी है। आप दफ्तर के कार्य से भी विदेश जा सकते हैं जिससे आपके सम्मान में वृद्धि होगी। किन्तु, विदेश में आपके बीमार होने अथवा कुछ स्वास्थ्य समस्या से ग्रसित होने की सम्भावना है जिससे अन्ततः आपको देश वापस आना होगा।

पारिवारिक जीवन :

शनि के सप्तम भाव में स्थित होने के कारण आपका विवाह अच्छे कुल के धार्मिक तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति के साथ होगा। आपका व्यक्तित्व आकर्षक होने के कारण विपरीत लिंग के लोग आपकी ओर आकृष्ट होंगे। आपके जीवन साथी के कारण आपके पारिवारिक जीवन में तनाव उत्पन्न हो सकता है।

महादशा :- बुध
(17/10/2081 - 17/10/2098)

बुध की महादशा 17/10/2081 को आरम्भ होगी और 17 वर्ष की होकर 17/10/2098 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में बुध दशम भाव में स्थित है। बुध की दृष्टि चतुर्थ भाव पर है। इसके पूर्व आपकी 19 वर्ष की शनि दशा चल रही थी। शनि के कारण सन्तान से सुख और शत्रु पर विजय मिली होगी तथा कार्य स्थान में स्थिति अनुकूल रही होगी। बुध की इस दशा में आप को यश तथा ख्याति मिलेगी, जीवन में प्रगति होगी, सम्मान और उत्तम शिक्षा मिलेगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य अति उत्तम रहेगा। आपमें भरपूर शक्ति, उत्साह तथा क्रियाशीलता रहेगी। मौसम में परिवर्तन के कारण हल्का ज्वर, विषाणु जन्य संक्रामक बीमारी, त्वचा रोग तथा स्नायविक दुर्बलता हो सकती है। अधिक मानसिक तथा शारीरिक श्रम से बचे।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थित अत्यन्त सुदृढ़ होगी। व्यवसाय तथा व्यापार से आय में वृद्धि होगी। जमीन-जायदाद से भी आय में वृद्धि होगी। आपको माता-पिता से लाभ मिल सकता है। सट्टे में लेन-देन लाभदायक होगा। जीविकोपार्जन के लिए लेखा, पत्रकारिता, शिक्षण, अन्तरिक्ष अनुसन्धान तथा सभी बौद्धिक कार्यों का चयन कर सकते हैं। सूती कपड़ा, रत्न, पुस्तक, लेखन सामग्री, कम्प्यूटर तथा हाथ से बने सामानों का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों को सम्मान मिलेगा, आय में वृद्धि होगी तथा वरिष्ठ कर्मचारियों और उच्चाधिकारियों का अनुग्रह प्राप्त होगा। कार्य-स्थान में स्थिति अनुकूल होगी और अधीनस्थ कर्मचारियों तथा सहकर्मियों से सहयोग मिलेगा। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों की आय तथा लाभ में वृद्धि होगी। व्यापार में विस्तार तथा व्यवसायियाँ के कार्य-क्षेत्र में वृद्धि होगी। आर्थिक तथा व्यावसायिक समृद्धि के लिए यह दशा उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

गुरु की अन्तर्दशा में आपको जीवन का सुख मिलेगा। जमीन-जायदाद से संबंधित लेन-देन लाभदायक होगा। चल-अचल सम्पत्ति से लाभ मिलेगा। वाहन सुख भी मिलेगा। मंगल की अन्तर्दशा में छोटी यात्रा तथा सूर्य की अन्तर्दशा में दूर की यात्रा होगी। कार्य के सिलसिले में यात्रा हो सकती है।

शिक्षा :

आपकी शिक्षा अत्ति उत्तम होगी। आपकी शैक्षिक उपलब्धि आपकी जीविका की संभावना में वृद्धि करेगी। विज्ञान, लेखा, वाणिज्य, साहित्य तथा व्यापार के विषय में आपकी रुचि होगी। आप प्रतिभाशाली, कूटनीतिक तथा बहुमुखी हैं और विभिन्न विषयों में आपकी रुचि

है। आपका दिमाग विवेक पूर्ण व विश्लेषणात्मक है और आप सभी बौद्धिक कार्यों में अच्छा करेंगे।

परिवार :

आपको बच्चों से सुख मिलेगा। आपका उनके साथ सम्बन्ध बहुत अच्छा रहेगा। अपके जीवन साथी की अचल सम्पत्ति में वृद्धि होगी, उनके अनेक मित्र होंगे और सुख की प्राप्ति होगी। आपका जीवन साथी के साथ सम्बन्ध उत्तम रहेगा। आपकी माता की विदेश यात्रा, साझेदारों से लाभ तथा आध्यात्मिक कार्यों में रुचि होगी। आपके पिता का धन-संग्रह और सुख की प्राप्ति होगी। आपके छोटे भाई-बहनों के कार्य में शुभ परिवर्तन और अचानक लाभ मिलेगा जबकि बड़ों का शुभ उद्देश्य के लिए व्यय होगा। आपका उनके साथ सम्बन्ध अति उत्तम रहेगा। इस दशा के दौरान आपको यश, सम्मान तथा सफलता मिलेगी।

अन्तर्दशा :

बुध की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको व्यवसाय में सफलता, यश और ख्याति मिलेगी। केतु कुछ समस्याएं उत्पन्न कर सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा में धन और समृद्धि की प्राप्ति होगी जबकि सूर्य को अन्तर्दशा में व्यय तथा यात्रा होगी। चन्द्र की अन्तर्दशा के कारण हर प्रकार का लाभ मिलेगा। मंगल की अन्तर्दशा के दौरान छोटी यात्रा और कुछ बाधाएं हो सकती हैं। राहु की अन्तर्दशा में कुछ बाधाएं उत्पन्न हो सकती हैं। गुरु की अन्तर्दशा के दौरान सुख और साझेदारों से लाभ मिलेगा जबकि शनि की अन्तर्दशा के फलस्वरूप बच्चों से सुख मिलेगा।

महादशा :- केतु
(17/10/2098 - 18/10/2105)

केतु की महादशा 17/10/2098 को आरम्भ और 18/10/2105 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 7 वर्ष है।

अपकी जन्मकुण्डली में केतु ग्यारहवें भाव में स्थित है और इसकी दृष्टि पंचम भाव पर है। इसके पूर्व आपकी बुध की दशा चल रही थी जिसकी अवधि 17 वर्ष थी। बुध के कारण आपको सम्पत्ति का लाभ, अप्रत्याशित परिवर्तन, उत्तम शिक्षा और बच्चों से सुख की प्राप्ति हुई होगी। केतु की वर्तमान दशा में आपको सभी प्रकार का लाभ, वाहन-सुख और जीवन का आराम मिलेगा।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप साहसी और आत्मविश्वासी होंगे। केतु के कारण आपको प्रसन्नता मिलेगी और आप आशावादी होंगे। मौसम में परिवर्तन के कारण आपको दाहक पित्त-दोष, पाचन-समस्या, विषाणुजन्य तथा संक्रामक रोग आदि हो सकते हैं। कुछ सावधानी बरतकर इनसे बचाव किया जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

आपकी आर्थिक स्थिति अत्यन्त मजबूत होगी। आपको हर प्रकार के लाभ, लक्ष्य और मनोकामना की पूर्ति और धन-समृद्धि की प्राप्ति होगी। सट्टे में लाभ की संभावना है और निवेश लाभदायक होगा। जीविका और व्यवसाय के लिए शिक्षण, लेखन, विदेशी भाषा, अनुवाद, कम्प्यूटर विज्ञान, लेखाकार्य, ज्योतिष आदि का चयन कर सकते हैं। खेल के सामान, दवा, चमड़े, पशु, किताब, आभूषण, कम्प्यूटर आदि का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों के कार्यस्थान में स्थिति अनुकूल रहेगी। आप अपने कार्य सक्रियता से पूरा करेंगे और उच्च पद प्राप्त करेंगे। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों की आय तथा लाभ में वृद्धि होगी। आपके व्यवसाय का विस्तार और कार्य में वृद्धि होगी। आर्थिक समृद्धि के लिए यह दशा उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जायदाद :

शुक्र की अन्तर्दशा में आपको आराम मिलेगा। नयी गाड़ी खरीदने में कुछ अड़चन आ सकती है। सम्पत्ति के लेन-देन में अचानक परिवर्तन और नुकसान होगा, इसलिए उचित प्रबन्धन की आवश्यकता है। मंगल की अन्तर्दशा में आपकी छोटी तथा शनि की अन्तर्दशा में लम्बी यात्रा होगी।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आप परीक्षा-प्रतियोगिता में अच्छा करेंगे। कम्प्यूटर विज्ञान, भाषा, विधि, दवा, तत्त्व-मीमांसा, खेल आदि में आपकी रुचि होगी। आप सक्रिय, उद्यमी और अत्यन्त आत्मविश्वासी हैं। आप अपने अध्ययन में अच्छा करेंगे।

परिवार :

परिवार के साथ आपका संबंध मधुर रहेगा। आपके बच्चों को साझेदारों से लाभ, यात्रा और सफलता मिलेगी। आपके जीवन साथी को सट्टे में लाभ होगा, निवेश लाभदायक रहेगा, और अध्यात्म की ओर उनकी रुचि में वृद्धि होगी। आपके जीवनसाथी के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आपकी माता को अचानक लाभ और हानि, कुछ स्वास्थ्य समस्या और विरासती सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। आपकी माता की छोटी यात्रा और संबंधियों से सहायता प्राप्त होगी तथा स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके छोटे भाई-बहनों को धन-समृद्धि की प्राप्ति और यात्रा होगी जबकि बड़ों को यश, ख्याति, समृद्धि और सफलता मिलेगी। उनके साथ आपका संबंध मधुर रहेगा।

अन्तर्दशा :

केतु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के दौरान आपको सफलता, लाभ और प्रगति होगी। शुक्र के कारण आराम और धन-समृद्धि की प्राप्ति होगी। सूर्य की अन्तर्दशा के दौरान साझेदारों से लाभ और प्रगति होगी जबकि चन्द्र के कारण कुछ स्वास्थ्य संबंधी समस्या हो सकती है। मंगल की अन्तर्दशा में छोटी यात्रा, स्वास्थ्य उत्तम, शक्ति में वृद्धि तथा जीवन में सफलता मिलेगी। राहु के कारण कुछ समस्या हो सकती है। गुरु की अन्तर्दशा के दौरान लाभ और धन-समृद्धि की प्राप्ति होगी जबकि शनि के कारण स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और सम्पत्ति, यश और ख्याति की प्राप्ति तथा यात्रा होगी। बुध की अन्तर्दशा में कुछ परिवर्तन, उत्तम शिक्षा, सट्टा-कार्य में वृद्धि तथा अचानक लाभ मिलेगा।

महादशा :– शुक्र
(18/10/2105 - 18/10/2125)

आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा 18/10/2105 को आरम्भ और 18/10/2125 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 20 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में शुक्र द्वादश भाव में स्थित है। यह एक शुभ ग्रह है जो दो राशियों वृष और तुला का स्वामी है। इसकी मूल त्रिकोण राशि तुला है। यह कन्या राशि में निम्न का तथा मीन राशि में उच्च का हो जाता है। यह कला, संगीत, ड्रामा, भावनात्मक आनन्द, स्वाद, फैशन, डिजाइनिंग तथा सुखमय, जीवन का द्योतक है। द्वादश भाव में स्थित होकर यह आपकी जन्मकुण्डली के षष्ठ भाव पर कारकत्व का प्रभाव डाल रहा है। भाव जिसमें यह स्थित है हानि, फिजूलखर्ची, कड़ी मजदूरी, अनुदान, पारिवार में फूट, धोखा, दुर्भाग्य, कैद, हत्या, कपट, पैर, बायीं आँख, शयन सुख, ऋण और विदेश प्रवास का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी शुक्र द्वादश भाव में स्थित है जो आपके अच्छे स्वास्थ्य को सुनिश्चित करता है तथा कोई बड़ी स्वास्थ्य समस्या आपको नहीं होगी। आपको सभी प्रकार का आराम और आनन्द प्राप्त होगा।

अर्थ संपत्ति :

महादशा स्वामी शुक्र द्वादश भाव में स्थित है तथा इस भाव के कारकत्व की प्रबलित कर रहा है। इस दशा काल में आप उपार्जन तथा चल-अचल संपत्ति अर्जित करने की कोशिश करेंगे। आप अपने जन्म स्थल से दूर जा सकते हैं।

व्यवसाय :

अपने व्यावसायिक जीवन में आप एक जगह से दूसरी जगह जाते रहेंगे और एक बैरागी जीवन व्यतीत करेंगे और अन्ततः मोक्ष प्राप्त करेंगे। आपकी व्यावसायिक स्थिति सुदृढ़ होगी और धार्मिक या ऐसी किसी अन्य संस्था के लिए काम करेंगे जहाँ आपकी आध्यात्मिक मानसिकता प्रबलित होगी।

परिवारक जीवन :

आप भावुक तथा विपरीत लिंग के लोगों की ओर आकृष्ट होगें। आपका पारिवारिक जीवन आनन्दमय होगा। आपके जीवन-साथी आपका सहयोग करेंगे और आप घर-परिवार के मैत्रीपूर्ण वातावरण का आनन्द उठाएंगे।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

यह अवधि उत्तम शिक्षा के लिए अनुकूल होगी। आप साहित्यक गतिविधियां जारी रखेंगे।

महादशा :- सूर्य
(18/10/2125 - 18/10/2131)

सूर्य की महादशा 18/10/2125 को आरंभ और 18/10/2131 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 6 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य एकादश भाव में अवस्थित है। सूर्य सम्पत्ति, स्वास्थ्य, प्रभाव तथा प्रतिष्ठा का प्रतिनिधित्व करता है जबकि एकादश भाव सभी प्रकार के लाभ, मनोकामनाओं की पूर्ति, शिक्षा तथा भौतिक सुखों का सूचक है। अतः इस दशा-काल में आपको धन, प्रभावशाली मित्रों, पद तथा अधिकार की प्राप्ति होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा में आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप में रोगों की प्रतिरोध शक्ति होगी। स्वास्थ्य उत्तम रखने के लिए आपको सात्विक और सन्तुलित भोजन करना चाहिए। आप सरदर्द और हृदयगति की पीड़ा से ग्रसित हो सकते हैं। आपको अतिशयता का परित्याग करना चाहिए और जीवन के प्रति आपकी सोच सकारात्मक होनी चाहिए ताकि इस दशा में आपका स्वास्थ्य उत्तम रह सके।

अर्थ :

आप भाग्यशाली होंगे और आपको पर्याप्त आर्थिक संसाधन प्राप्त होंगे। आपको सट्टे तथा निवेश से लाभ मिलेगा। पैतृक सम्पत्ति की प्राप्ति भी हो सकती है। आपको पिता से लाभ की प्राप्ति हो सकती है। आप अधिक प्रयास किये बगैर आर्थिक लाभ प्राप्त करेंगे। दशा ज्यों-ज्यों प्रगति करेगी त्यों-ज्यों आपकी आर्थिक स्थिति सुधरती जाएगी। किन्तु, आपको फिजूलखर्ची के प्रति सावधान रहना चाहिए क्योंकि आप स्वभाव से उदार हैं।

व्यवसाय :

आपको आपके सभी कार्यों में सफलता और लाभ मिलेंगे। आपको अधिक परिश्रम किये बगैर सफलता मिलेगी। आप सरकारी सेवा में अच्छा करेंगे। आप बड़ी संस्थाओं, निगमों और संस्थानों में प्रबंधक के पद के लिये सर्वाधिक योग्य है। संगठन से सम्बद्ध कोई भी कार्य आपके अनुकूल होगा। रत्नों का व्यवसाय अथवा सम्पत्ति की परिरक्षा का कार्य लाभदायक होगा। नौकरी पेशा लोगों के कार्य-स्थान में वातावरण सौहार्द्रपूर्ण रहेगा, उन्हें अधीनस्थ कर्मचारियों से सहयोग तथा उच्चधिकारियों के अनुग्रह की प्राप्ति होगी। व्यवसायियों को स्व-प्रयास से धन तथा लाभ की प्राप्ति होगी। रत्न-आभूषण, धातु तथा बिजली के सामानों आदि के व्यापारियों के लिये यह दशा लाभदायक होगी।

परिवार :

आपका बच्चों से गहरा लगाव है। आपको उनसे अत्यधिक सुख मिलेगा। इस दशा-काल में आप उनके ऊपर बड़ी सीमा तक निर्भर करेंगे। आपके जीवन साथी के साथ आपके सम्बन्ध बहुत मधुर होंगे। आपके जीवन साथी को सभी प्रकार के लाभ प्राप्त होंगे और उनका भाग्योदय होगा। आपकी माता को किसी अप्रत्याशित धन की प्राप्ति और धर्मशास्त्रों में

उनकी रूचि हो सकती है। आपके पिता स्वयं धनोपार्जन करेंगे, प्रसन्न रहेंगे और छोटी यात्राओं पर जाएंगे। आपके भाई-बहनों के लिये यह समय समृद्धिशाली रहेगा और आपके साथ उनके संबंध मधुर रहेंगे।

शिक्षा :

आप धार्मिक प्रवचन देंगे या उनका आयोजन करेंगे।

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	7
भाग्यांक	9
मित्र अंक	2, 3, 6, 7, 9
शत्रु अंक	4, 5, 8
शुभ वर्ष	25,34,43,52,61
शुभ दिन	शनि, बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	शनि, बुध, शुक्र
मित्र राशि	मकर, कुम्भ
मित्र लग्न	सिंह, मकर, मीन
अनुकूल देवता	विष्णु
शुभ रत्न	हीरा
शुभ उपरत्न	जरकिन, ओपल
भाग्य रत्न	नीलम
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	रजत
शुभ दिशा	दक्षिणपूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन
दान अन्न	चावल
दान द्रव्य	दूध

रत्न चयन

किसी भी कुंडली में दशानुसार ग्रह का उपाय एवं रत्न धारण करने से शुभत्व में वृद्धि होती है। वैज्ञानिक रूप से विशिष्ट ग्रह का मंत्रोच्चारण करने से उस ग्रह की रश्मियों की मानव शरीर के चारों ओर सुरक्षा श्रृंखला बन जाती है एवं रत्न रश्मियों को सोखकर मानव शरीर में प्रवाहित कर शुभत्व में वृद्धि करता है। अतः रत्न का बेदाग होना एवं शरीर से स्पर्श करना अत्यंत आवश्यक माना गया है।

सामान्यतया उपाय ग्रह दशा के फल की वृद्धि के लिए महादशा स्वामी का किया जाता है। उपाय में मंत्रोच्चारण, दान एवं व्रत ही प्रमुख हैं। रत्न निर्बल परंतु लग्नेश, भाग्येश या योगकारक ग्रहों का पहना जाता है। आपको कब कौन सा उपाय या रत्न धारण करना चाहिए नीचे तालिका में उसके कार्यसिद्धि क्षेत्र सहित दिया गया है। महादशाओं में रत्नों के तीन-तीन विकल्प दिए गए हैं। आपको कोई भी विकल्प उसकी कार्यसिद्धि क्षेत्र एवं क्षमता देखकर अपनी आवश्यकतानुसार पहन सकते हैं तथा अतिरिक्त उपाय भी अपनी क्षमतानुसार कर सकते हैं।

जीवन रत्नः	हीरा		कम खर्च, स्वास्थ्य, शत्रु व रोग मुक्ति
भाग्य रत्नः	नीलम		दम्पति, भाग्योदय, व्यावसायिक उन्नति
कारक रत्नः	पन्ना		व्यावसायिक उन्नति, धन, सन्तति सुख
शुभ उपरत्नः	गोमेद		सन्तति सुख, व्यावसायिक उन्नति
दशा	**रत्न**	**क्षमता**	**मंत्र-जप / व्रत / दान / लाभ**
चन्द्र	पन्ना	98%	ऊँ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः (11000)
25/03/2015	नीलम	83%	सोमवार,चावल, शंख, कपूर, श्वेतचन्दन, दही
17/10/2021	मोती	80%	स्वास्थ्य, पराक्रम, सन्तति सुख
मंगल	नीलम	83%	ऊँ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः (10000)
17/10/2021	पन्ना	80%	मंगलवार,मल्का, केसर, कस्तूरी, रक्तचन्दन, घी
16/10/2028	माणिक्य	75%	कम खर्च, दम्पति, सन्तति सुख
राहु	गोमेद	93%	ऊँ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः (18000)
16/10/2028	पन्ना	92%	शनिवार,तिल, सरसों, खड़ग, कम्बल, तेल
17/10/2046	नीलम	89%	सन्तति सुख, दम्पति, सन्तति सुख
गुरु	नीलम	83%	ऊँ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः वृहस्पतये नमः (19000)
17/10/2046	पन्ना	80%	गुरुवार,दाल चना, हल्दी, पुस्तक, पीत पुष्प, घी
17/10/2062	गोमेद	80%	पराक्रम, दुर्घटना से बचाव, धनार्जन
शनि	पन्ना	98%	ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः (23000)
17/10/2062	नीलम	95%	शनिवार,उड़द, कस्तूरी, कृष्ण गौ, उपानह, तेल
17/10/2081	गोमेद	86%	दम्पति, भाग्योदय, व्यावसायिक उन्नति
बुध	पन्ना	100%	ऊँ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः (9000)
17/10/2081	नीलम	83%	बुधवार,मूँग, हाथी दाँत, कपूर, फल, घी
17/10/2098	गोमेद	80%	व्यावसायिक उन्नति, धन, सन्तति सुख
केतु	पन्ना	92%	ऊँ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः (17000)
17/10/2098	लहसुनिया	72%	मंगलवार,तिल, सप्तधान्य, नारियल, शस्त्र, दही
18/10/2105	नीलम	70%	धनार्जन, धन, सन्तति सुख

नवग्रह रत्न धारण विधि

रत्न का पूर्ण शुभ फल पाने के लिए इसे शुक्ल पक्ष में निर्दिष्ट वार एवं समय में ही धारण करना चाहिए। निर्दिष्ट नक्षत्र में धारण करने से रत्न और भी प्रभावशाली हो जाता है। इसे निम्नलिखित तालिका में दिये गये भार या उससे अधिक भार का लेकर जो किवाया हो एवं पौना न हो जैसे 4-1/4 रत्ती आदि, उसे निर्दिष्ट धातु में इस प्रकार जड़वाएं कि रत्न नीचे से अंगुली को स्पर्श करे।

धारण करते समय अपने इष्ट देव का श्रद्धापूर्वक ध्यान करना चाहिए। तत्पश्चात अंगूठी को कच्चे दूध एवं गंगाजल में धोकर शुद्ध करना चाहिए एवं धूप दीप जलाकर संबंधित ग्रह के मंत्र का कम से कम एक माला जप करना चाहिए। फिर अंगूठी को धूप देकर निर्दिष्ट अंगुली में दाएं हाथ में धारण करना चाहिए। स्त्रियों को बाएं एवं पुरुषों को दाएं हाथ में अंगुली धारण करना चाहिए। अंगूठी धारण के पश्चात यथाशक्ति संबंधित ग्रह के पदार्थों का दान करना चाहिए।

यदि आप अन्य कोई रत्न पहले से पहने हुए हैं तो यह ध्यान रखें कि परस्पर विरोधी रत्न एकसाथ न पहनें। उपरोक्त विधि से रत्न को पहनने से रत्न के शुभ फल प्रचुर मात्रा में शीघ्र मिलते हैं।

रत्न	ग्रह	रत्ती	धातु	अंगुली	दिन	समय	नक्षत्र
माणिक्य	सूर्य	4	सोना	अना	रविवार	सुबह	कृतिका, उ०फाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा
मोती	चन्द्र	4	चांदी	कनि	सोमवार	सुबह	रोहिणी, हस्त, श्रवण
मूंगा	मंगल	6	चांदी	अना	मंगलवार	सुबह	मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा
पन्ना	बुध	4	सोना	कनि	बुधवार	सुबह	आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती
पुखराज	गुरु	4	सोना	तर्जन	गुरुवार	सुबह	पुनर्वसु, विशाखा, पू०भाद्रपद
हीरा	शुक्र	1	प्लेटि	कनि	शुक्रवार	सुबह	भरणी, पू०फाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा
नीलम	शनि	4	पंचधातु	मध्य	शनिवार	शाम	पुष्य, अनुराधा, उ०भाद्रपद
गोमेद	राहु	5	अष्टधातु	मध्य	शनिवार	रात्रि	आर्द्रा, स्वाति, शतभिषा
लहसुनिया	केतु	6	चांदी	अना	गुरुवार	रात्रि	अश्विनी, मघा, मूल

रत्न	मंत्र	निषेध रत्न	दान पदार्थ
माणिक्य	ऊँ घृणि सूर्याय नमः	हीरा, नीलम, गोमेद	गेहूँ,चंदन,घी,लाल वस्त्र
मोती	ऊँ सों सोमाय नमः	गोमेद	चावल,चीनी,घी,श्वेत वस्त्र
मूंगा	ऊँ अं अंगारकाय नमः	हीरा, गोमेद, नीलम	गेहूँ,ताम्र,गुड़,लाल वस्त्र
पन्ना	ऊँ बुं बुधाय नमः	---	मूंग,कांसा,हरित वस्त्र
पुखराज	ऊँ वृं वृहस्पतये नमः	हीरा, गोमेद	चने की दाल,गुड़,पीला वस्त्र
हीरा	ऊँ शुं शुक्राय नमः	माणिक्य, मूंगा, पुखराज	चावल,चांदी,श्वेत वस्त्र
नीलम	ऊँ शं शनैश्चराय नमः	माणिक्य, मूंगा, पुखराज	काला तिल,तेल,काला वस्त्र
गोमेद	ऊँ रां राहवे नमः	माणिक्य, मोती, मूंगा	तिल,तेल,कंबल,नीला वस्त्र
लहसुनिया	ऊँ कें केतवे नमः	---	सप्तधान्य,नारियल,धूम्र वस्त्र

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पडता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पडता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	26/01/2017-21/06/2017	26/10/2017-24/01/2020	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	03/06/2027-03/06/2027	23/02/2028-08/08/2029	05/10/2029-17/04/2030
साढेसाती द्वितीय ढैया	08/08/2029-05/10/2029	17/04/2030-31/05/2032	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	31/05/2032-13/07/2034	----------	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	27/08/2036-22/10/2038	05/04/2039-13/07/2039	----------

द्वितीय चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	08/12/2046-06/03/2049	10/07/2049-04/12/2049	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	07/04/2057-27/05/2059	----------	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	27/05/2059-11/07/2061	13/02/2062-07/03/2062	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	11/07/2061-13/02/2062	07/03/2062-24/08/2063	06/02/2064-09/05/2064
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	13/10/2065-03/02/2066	03/07/2066-30/08/2068	----------

तृतीय चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	16/01/2076-11/07/2076	11/10/2076-15/01/2079	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	21/05/2086-21/05/2086	08/02/2087-18/07/2088	31/10/2088-05/04/2089
साढेसाती द्वितीय ढैया	18/07/2088-31/10/2088	05/04/2089-19/09/2090	25/10/2090-21/05/2091
साढेसाती तृतीय ढैया	19/09/2090-25/10/2090	21/05/2091-02/07/2093	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	18/08/2095-11/10/2097	02/05/2098-20/06/2098	----------

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
अष्टम स्थानस्थ ढैया	अशुभ	दुर्घटना से बचाव
साढेसाती प्रथम ढैया	अशुभ	व्यय
साढेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	स्वास्थ्य
साढेसाती तृतीय ढैया	सम	धन
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	अशुभ	सुख हानि

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

योग कारक

किसी भी जन्मकुंडली में ग्रह, अपने स्वामित्व तथा स्थिति के अनुसार, सकारात्मक या नकारात्मक फल देते हैं। ये ग्रह विभिन्न दशा काल में भिन्न-भिन्न प्रकार से आचरण करते हैं, जो दशा स्वामी की स्थिति तथा उससे ग्रह के संबंध पर आधारित है। सुविधा के लिए हमने ग्रह के शुभ तत्वों की संगणना प्रतिशत में की है। 50 से अधिक अंक प्राप्त करने वाले ग्रहों को लाभकारक तथा उससे नीचे हानिकारक समझना चाहिए। इस सूचना को आधार बनाकर आप अपनी जन्मकुंडली में दशा के प्रभावों का अध्ययन स्वयं ही कर सकते हैं। इसी तरह इन आंकड़ों द्वारा गोचर के प्रभाव का भी अध्ययन किया जा सकता है।

योग कारक एवं मारक

लग्न के लिए	:	योग कारक	-	शुक्र, शनि, सूर्य
		मारक	-	चंद्र, मंगल, गुरु
जन्मकुंडली के लिए	:	योग कारक	-	राहु, चंद्र, सूर्य
		मारक	-	मंगल, शनि, शुक्र

जन्मकुंडली में ग्रह बल

सूर्य	61%	धनार्जन, सुख
चन्द्र	67%	स्वास्थ्य, पराक्रम
मंगल	47%	कम खर्च, दम्पति
बुध	50%	व्यावसायिक उन्नति, धन, सन्तति सुख
गुरु	55%	पराक्रम, दुर्घटना से बचाव, धनार्जन
शुक्र	49%	कम खर्च, स्वास्थ्य, शत्रु व रोग मुक्ति
शनि	47%	दम्पति, भाग्योदय, व्यावसायिक उन्नति
राहु	68%	सन्तति सुख, व्यावसायिक उन्नति
केतु	52%	धनार्जन, पराक्रम

दशा काल में ग्रह बल

दशा	समाप्ति	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
चन्द्र	17/10/2021	61	96	42	70	46	43	42	56	32
मंगल	16/10/2028	61	64	86	31	71	74	42	40	57
राहु	17/10/2046	36	56	29	43	46	55	54	96	32
गुरु	17/10/2062	78	64	68	31	90	44	58	52	61
शनि	17/10/2081	53	39	29	68	62	55	86	65	48
बुध	17/10/2098	61	52	42	87	46	55	56	52	44
केतु	18/10/2105	68	39	54	43	62	55	46	40	88
शुक्र	18/10/2125	36	39	73	56	58	87	54	65	57
सूर्य	18/10/2131	93	64	54	43	75	30	46	40	63

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति जन्म कुंडली में द्वादश भाव में स्थित है। अतः आप एक मांगलिक पुरुष हैं। परन्तु शास्त्रानुसार आपका मंगली दोष भंग हो रहा है। यह मंगल आपको अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फल ही अधिक मात्रा में प्रदान करेगा। इसके शुभ प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा स्वभाव व्ययशील होगा परन्तु अशुभ कार्यों की अपेक्षा शुभ कार्यों पर ही आप अधिकांश व्यय करेंगे। साथ ही जीवन में समस्त सांसारिक भोग्य पदार्थों का भी आप प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करने में समर्थ रहेंगे। आपकी पत्नी का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आनन्द पूर्वक आप दाम्पत्य जीवन को व्यतीत करेंगे।

यद्यपि यह मंगल आपके लिए शुभ फलदायक है। इसके प्रभाव से आपके विवाह में विलम्ब हो सकता है। परन्तु विवाह कार्य अत्यन्त ही शान्त एवं सुखद रूप से सम्पन्न होगा। इसमें किसी भी प्रकार की अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों का आपको सामना नहीं करना पड़ेगा। साथ ही विवाह के पश्चात भी आपका दाम्पत्य जीवन सुखी एवं प्रेम पूर्वक व्यतीत होगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में समस्त आवश्यक सुख संसाधनों तथा अन्य भौतिक सामग्री से सुसम्पन्न रहेंगे। आपका शत्रु पक्ष भी हमेशा कमजोर रहेगा अतः इनसे आपको किसी भी प्रकार की असुविधा नहीं होगी।

आपकी जन्म कुण्डली में मंगल द्वादश भाव में स्थित है। अतः इसके शुभ प्रभाव से आप शुभ कार्यों पर व्यय करने में सर्वदा रुचिशील रहेंगे तथा समस्त भोग्य पदार्थों को अर्जित तथा उपभोग करने में सफल रहेंगे। इसकी तृतीय भाव पर दृष्टि से आपके पराक्रम में नित्य वृद्धि होगी तथा आप निर्भय होकर अपने समस्त कार्यों को सम्पन्न करेंगे। लोगों में अपना प्रभाव स्थापित करने में भी समर्थ रहेंगे। साथ ही भाई बहनों से भी आप युक्त रहेंगे। जीवन में उनसे वांछित सुख एवं सहयोग भी प्राप्त कर सकेंगे। षष्ठ भाव पर दृष्टि होने से शत्रु पक्ष प्रायः

निर्बल रहेगा। आपका विरोध करने में वे सर्वदा असमर्थ रहेंगे। सप्तम भाव पर मंगल की दृष्टि भावी जीवन साथी के लिए शुभ ही रहेगी। इससे आपकी पत्नी का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु स्वभाव में यदा कदा उग्रता का भी समावेश होगा। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण समर्पण की भावना रहेगी तथा आपके परस्पर संबंध भी घनिष्ठ एवं प्रेम पूर्वक रहेंगे। अतः आपका दाम्पत्य जीवन अत्यन्त ही आनन्द पूर्वक व्यतीत होगा एवं अनावश्यक व्यवधान तथा समस्याओं का प्रायः अभाव रहेगा।

अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखी एवं आनन्दमय बनाने के लिए आपको किसी गैर मांगलिक या ऐसी मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए जिसका मांगलिक दोष उचित रूप से भंग हो रहा हो। इस प्रकार यदि आप अपना दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करेंगे तो जीवन में सर्व सौभाग्य, धनैश्वर्य, मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा युक्त होकर समाज में पूर्ण यश प्राप्त करने में सफल रहेंगे।

इसके अतिरिक्त जन्म कुण्डली मिलान के समय यदि कन्या के द्वादश भाव में मंगल हो तो आवश्यक होने पर ही विवाह करें क्योंकि समान भावों में मंगल होने से जीवन में यदा कदा अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न होती रहेंगी जिससे दाम्पत्य जीवन में तनाव भी उत्पन्न हो सकता है। अन्य भावों में स्थित मंगल होने से दोष समाप्त हो जायेगा एवं जीवन सुख एवं शान्ति पूर्वक व्यतीत होगा। अतः अन्तिम निर्णय अत्यन्त ही सूझ बूझ से लेना चाहिए जिससे भावी दाम्पत्य जीवन में किसी भी प्रकार की समस्याएं उत्पन्न न हो सकें।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। वृष लग्न में उत्पन्न जातक सामान्यतया धैर्यवान एवं सहिष्णु होते हैं तथा उनकी वाणी में भी मधुरता का भाव रहता है। उनका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहता है तथा परिश्रम करने की उनमें अपूर्व क्षमता होती है। इसी परिश्रम के द्वारा वे जीवन में सफलता अर्जित करते हैं तथा समस्त भौतिक सुखों को प्राप्त करके आनंद पूर्वक उनका उपभोग करते हैं। स्वभाव से ये जातक प्रायः शांति प्रिय होते हैं परन्तु साहस एवं पराक्रम से युक्त होकर अपने सांसारिक कार्यों को सिद्ध करते हैं।

अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक रूप से भी आप प्रायः सन्तुष्ट एवं प्रसन्न रहेंगे। आपकी वाणी मधुर होगी तथा अन्य जनों को स्ववाक्चातुर्य से प्रभावित करने में समर्थ होंगे। आपका शारीरिक कद मध्यम होगा तथा स्वभाव में उदारता एवं सहिष्णुता का भाव विद्यमान रहेगा। साथ ही आप अनावश्यक क्रोध एवं चंचलता की नित्य उपेक्षा करेंगे फलतः आपके सांसारिक महत्व के कार्य यथा समय सिद्ध होंगे जिससे समाज में आपकी मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा लोग आपसे प्रभावित रहेंगे।

आप एक परिश्रमी पुरूष होंगे तथा स्वपरिश्रम एवं पराक्रम से जीवन में वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करेंगे। अपने सदगुणों के द्वारा आप अपने श्रेष्ठ जनों को प्रसन्न करने में सफल होंगे। आप एक विद्वान पुरूष होंगे तथा कला एवं साहित्य के प्रति आपके मन में रूचि रहेगी तथा परिश्रम पूर्वक इस क्षेत्र में सफलता एवं प्रतिष्ठा अर्जित करेंगे। साथ ही जीवन में समस्त सुखैश्वर्य एवं वैभव को अर्जित करके आनंद पूर्वक इसका उपभोग करेंगे।

लग्न में चन्द्रमा की स्थिति के प्रभाव से आपका व्यक्तित्व आकर्षक रहेगा तथा सभी लोग आपसे प्रभावित होंगे। शारीरिक एवं मानसिक रूप से आप स्वस्थ तथा प्रसन्न रहेंगे एवं उत्साह तथा परिश्रम पूर्वक सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करके उनमें सफलता अर्जित करेंगे। इससे आपके उन्नति मार्ग प्रशस्त होंगे तथा समाज में आपकी मान प्रतिष्ठा तथा यश में अभिवृद्धि होगी। आप एक बुद्धिमान व्यक्ति भी होंगे तथा अपने कार्यों को बुद्धिमता पूर्वक सम्पन्न करेंगे।

आपका स्वभाव शांत तथा उदार होगा तथा अवसरानुकूल अन्य जनों की सुख दुख में सेवा तथा सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। धर्म के प्रति भी आपकी आस्था रहेगी तथा श्रद्धा पूर्वक समय समय पर धार्मिक अनुष्ठानों तथा कार्यकलापों को सम्पन्न करेंगे। जीवन में स्वपराक्रम परिश्रम एवं योग्यता से आप इच्छित धनैश्वर्य तथा वैभव अर्जित करेंगे एवं अन्य भौतिक सुख संसाधनों को अर्जित करके प्रसन्नता पूर्वक उनका उपभोग करेंगे। संगीत के प्रति भी आपके मन में रूचि रहेगी तथा कला एवं संगीत के क्षेत्र में आप इच्छित उन्नति तथा प्रतिष्ठा प्राप्त करने में सफल हो सकेंगे।

इस प्रकार आप स्वस्थ, देखने में आकर्षक, पराक्रमी तथा उत्साही व्यक्ति होंगे तथा कुशलतापूर्वक अपने सांसारिक कार्यकलापों को सम्पन्न करके आनंदपूर्वक अपना समय व्यतीत

करेंगे।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप की प्रवृति धनसंग्रह करने की रहेगी तथा वर्तमान एवं भविष्य के लिए प्रचुर मात्रा में धन अर्जित करके उसका संग्रह करेंगे इससे आपकी आर्थिक स्थिति सन्तुलित रहेगी। साथ ही जायदाद या स्वर्ण आदि धातुओं पर पूंजीनिवेश करेंगे तथा इससे आपको प्रचुर मात्रा में लाभ प्राप्त होगा। आपका पारिवारिक जीवन सुख एवं शान्ति से युक्त रहेगा तथा उनकी खुशहाली के लिए आप सदैव प्रयत्नशील रहेंगे तथा पारिवारिक जनों से आपको पूर्ण सहयोग भी प्राप्त होता रहेगा।

सामान्यतया आपको सभी स्वाद रूचिकर लगेंगे परन्तु मिष्ठान के प्रति विशेष रूचिशीलता का प्रदर्शन करेंगे। चूंकि यह भाव वाणी का प्रतिनिधित्व करता है तथा इसका स्वामी बुध होने के कारण आपकी वाणी मृदु तथा प्रभाव शाली रहेगी तथा अन्य जनों को अपनी वाणी से प्रभावित करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही विचारों की अभिव्यक्ति भी कुशलता पूर्वक करेंगे परन्तु अवसरानुकूल आप अपने विचारों में परिवर्तन भी कर सकते है। यदि आप यह अनुभव करते है कि इस समय के लिए यह विचार ठीक नहीं है। आतिथ्य सत्कार की भावना भी आपके मन में विद्यमान रहेगी। इसके अतिरिक्त स्त्री वर्ग से आपको उचित लाभ समय समय पर मिलता रहेगा तथा वाहन एवं बहुमूल्य रत्नों की भी प्राप्ति होगी। इसके साथ ही धार्मिक एवं सज्जन प्रवृति के लोगों से आप सामान्यतया मित्रता करना पसन्द करेंगे।

पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन एवं लघुयात्राएं

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चंद्रमा है। अतः इसके प्रभाव से आप अपने भाई बहिनों के प्रति उदार भावुक तथा अत्यंत ही सहानुभूति का व्यवहार रखेंगे। आप उनसे अत्यधिक प्रेम करेंगे तथा उनकी सुख सुविधा का पूर्ण ध्यान रखेंगे परन्तु इसके बाद भी उनसे आपको यथोचित सम्मान तथा आदर अल्प मात्रा में ही प्राप्त होगा। कभी कभी परिस्थिति के अनुकूल आप असाधारण साहस तथा पराक्रम का प्रदर्शन करेंगे। आप एक बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा नैतिकता का यत्नपूर्वक अनुपालन करते रहेंगे। भाई बहिनों के प्रति समयानुसार आप अपने को परिवर्तन करने में समर्थ रहेंगे। आपकी स्मरण शाक्ति तीव्र रहेगी तथा ऐतिहासिक घटनाओं को याद रखने में सफल रहेंगे। साथ ही भाई बहिनों के प्रति आपका क्रोध भी क्षणिक रहेगा तथा शीघ्र ही उनसे प्रसन्न हो जाएंगे।

जीवन में आप एक कर्तव्य परायण व्यक्ति रहेंगे तथा यत्नपूर्वक अपनी जिम्मेदारियों को पूर्ण करेंगे। आपकी सीखने या याद करने की शक्ति तीव्र होगी अतः किसी से कोई नवीन ज्ञान अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही उच्च शिक्षा या दर्शन शास्त्र के प्रति भी आपकी रूचि रहेगी। आप सामाजिक जनों की भी यथाशाक्ति सेवा करेंगे। अतः अपने इन कार्यो से ख्याति भी प्राप्त होगी। आप किसी भी उददे्श्य को कार्य रूप में परिवर्तित करने के लिए साहसिक निर्णय लेने में हमेशा समर्थ रहेंगे अतः यदा कदा आप समूह के नेतृत्व को भी प्राप्त कर सकते हैं। आप समाज सेवा, लेखन या किसी नवीन आविष्कार से प्रसिद्धि प्राप्त कर सकते है। साथ ही संचार की सुविधाओं से आप युक्त रहेंगे तथा संचार के क्षेत्र में आजीविका आदि भी कर सकेंगे। प्रकाशक संपादक या संवाददाता के रूप में आपको सफलता प्राप्त हो सकती है। इसके अतिरिक्त आप वैश्य वर्ग के मित्र रहेंगे तथा परिश्रम पूर्वक अपने घर एवं परिवार का पालन पोषण करेंगे। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति आपकी रूचि रहेंगी तथा शील स्वभाव भी उत्तम रहेगा।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है। अतः इसके प्रभाव से आप जीवन में समस्त भौतिक सुख संसाधनों एवं आधुनिक विलासमय वस्तुओं से युक्त होंगे तथा सुख पूर्वक इनका उपभोग करने में समर्थ होंगे। शुक्र के प्रभाव से युवावस्था से ही आपको सुख-संसाधनों की उपलब्धि हो जायेगी तथा इसके लिए विशेष परिश्रम भी कम ही करना पड़ेगा।

जीवन में चल एवं अचल सम्पत्ति के स्वामित्व को आप अवश्य प्राप्त करेंगे। आपके प्रचुर मात्रा में धन सम्पत्ति की प्राप्ति होगी तथा विवाह के बाद इसमें काफी वृद्धि होगी। स्त्री के सहयोग से भी धनाढ्य एवं समृद्धशाली व्यक्ति माने जायेंगे। चल सम्पत्ति की उपेक्षा अचल सम्पत्ति की आपके पास बहुलता होगी जिससे जमीन जायदाद तथा मकान प्रमुख होंगे। साथ ही समस्त आधुनिक भौतिक एवं विलासमय उपकरणों से आप सम्पन्न होंगे तथा आनंदपूर्वक इनका उपभोग करेंगे।

उत्तम निवास स्थान के विषय में आप सौभाग्यशाली व्यक्ति समझे जायेंगे। आपका घर उत्तम एवं आधुनिक स्थान में होगा तथा सर्व प्रकार से यह आकर्षक एवं सुसज्जित रहेगा। आप भी इसकी सुन्दरता एवं सफाई का पूर्ण ध्यान रखेंगे। आपका घर किसी अच्छी कालोनी में होगा एवं पड़ोसी भी बुद्धिमान एवं शिक्षित होंगे तथा आपसी संबंध अच्छे रहेंगे। आपकी कुंडली में उत्तम वाहन के भी योग बनते है जिसका आप युवावस्था से ही उपयोग करके प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे।

आपकी माता जी सुन्दर सुसंस्कृत एवं मृदुस्वभाव की महिला होंगी तथा उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा। वह एक चतुर एवं बुद्धिमान महिला होंगी तथा अपनी चतुराई एवं व्यवहार कुशलता से परिवार का अच्छी तरह पालन पोषण करेंगी एवं किसी भी व्यक्ति को उनसे कोई परेशानी नहीं होगी। आपके प्रति उनके हृदय में विशेष वात्सल्य एवं स्नेह का भाव होगा तथा अवसरानुकूल उनसे आपको प्रचुर मात्रा में आर्थिक सहयोग की भी प्राप्ति होती रहेगी। आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान का भाव रखेंगे तथा उनकी आज्ञा का पालन करने में तत्पर होंगे। इसके अतिरिक्त सुख-दुख में उनको अपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। इस प्रकार आपसी संबंध भी मधुर होंगे।

अध्ययन के प्रति वचपन से ही आपकी रूचि होगी तथा बुद्धिमान एवं परिश्रमशील होने के कारण प्रारंभ से ही अध्ययन के क्षेत्र में अनावश्यक समस्याओं एवं बाधाओं का सामना नहीं करना पड़ेगा। इसी परिपेक्ष्य में आप स्नातक परीक्षा आसानी से उतीर्ण करेंगे तथा इससे आप की आत्मिक शक्ति में वृद्धि होगी फलतः जीवन में इच्छित उन्नति एवं सफलता अर्जित करने में समर्थ होंगे। सामाजिक जनों एवं संबंधियों में भी आपके सम्मान में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपसे प्रसन्न एवं प्रभावित होंगे। इससे आपको प्रोत्साहन मिलेगा जिससे भविष्य उज्ज्वल होगा।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्मसमय में पंचमभाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है तथा राहु भी कन्या राशि में ही पंचमभाव में ही स्थित है। ज्यौतिष में कन्या राशि राहु की स्वराशि मानी जाती है। अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा जीवन में अपने समस्त कार्य कलापों को बुद्धिमता से ही सम्पन्न करेंगे। इससे अन्य लोग आपसे प्रभावित होंगे। वैदिक एवं धर्मशास्त्रों के अध्ययन में अल्प रूचि होगी परंतु अधुनिक साहित्य एवं विज्ञान के क्षेत्र में आपकी पूर्ण रूचि होगी तथा परिश्रम पूर्वक इसमें ज्ञानार्जन करेंगे तथा पाश्चात्य साहित्य में भी आपकी रूचि होगी तथा इस क्षेत्र में आप ज्ञानार्जन के लिए विशेष प्रवृत होंगे। अतः समाज में एक विद्वान व्यक्ति के रूप में आपकी ख्याति एवं प्रतिष्ठा रहेगी।

राहु की पंचमभाव में स्थिति के फलस्वरूप प्रेम प्रसंगों में आपकी काफी रूचि होगी तथा कई बार आप इसे आत्म संतुष्टि या मनोरंजन के रूप में भी प्रयुक्त कर सकते है। यदा कदा प्रेम प्रसंगों के क्षेत्रों में आप आदर्श एवं मर्यादा का भी उल्लंघन कर सकते है। इससे आपको अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का सामना भी करना पड़ सकता है एवं मानसिक अशान्ति भी उत्पन्न हो सकती है। अतः ऐसी स्थितियों की आपको यत्न पूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

स्वगृही राहु की पंचमभाव में स्थिति के प्रभाव से आपको यथोचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा एक पुत्र भी अवश्य होगा। कन्याओं की संख्या पुत्र की अपेक्षा अधिक हो सकती है। आपकी संतति बुद्धिमान एवं गुणवान होगी तथा स्वपरिश्रम एवं पराक्रम से वे उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे। माता पिता के प्रति यद्यपि उनके मन में श्रद्धा एवं सम्माान की भावना रहेगी तथा आज्ञापालन में भी तत्पर होंगे परंतु यदा कदा वे अपनी मनमानी भी अवश्य करेंगे लेकिन इसकी आपको अधिक चिंता नहीं करनी चाहिए क्योंकि बच्चे योग्य एवं प्रतिभाशाली होंगे तथा स्वयं उन्नति करने में समर्थ होंगे साथ ही माता की अपेक्षा पिता के प्रति अधिक लगाव होगा तथा अपनी व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान पिता के माध्यम से ही करना पसंद करेंगे। इसके अतिरिक्त आपको बच्चों से आकांक्षाएं कम ही रखनी चाहिए तथा उन्हें स्वतन्त्र रूप से अपने मार्ग का चयन करने देना चाहिए। इससे आप दोनों संतुष्ट रहेंगे।

अध्ययन के प्रति प्रारंभ से ही बच्चों की रूचि रहेगी तथा स्वपरिश्रम, योग्यता एवं बुद्धिमता से शिक्षा के क्षेत्र में संतोष जनक प्रगति करने में समर्थ होंगे। उनमें व्यवहार कुशलता का भाव भी विद्यमान होगा जिससे अन्य सामाजिक जनों को प्रसन्न एवं प्रभावित करने में समर्थ होंगे। इससे आपकी सामाजिक प्रभाव एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा आप स्वयं भी गौरव की अनुभूति करेंगे। इसके अतिरिक्त बच्चे भी सुख दुख में आपका ध्यान रखेंगे तथा अपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होंने देंगे।

रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आप सामान्यतया स्वस्थ ही रहेंगे तथा किसी भी प्रकार के कष्ट को सहन करने की शक्ति आप में विद्यमान रहेंगी। आप यदा कदा बुखार या अन्य सामान्य रोगों से कष्ट प्राप्त कर सकते है लेकिन आपको अपने स्वास्थ्य का पूर्ण ध्यान रखना चाहिए क्योंकि आप में रोग अवरोधक तत्वों की न्यूनता होने से जब एक बार बीमार पड़ेगें तो इसमें ठीक होने में काफी समय लग जाएगा। इसके अतिरिक्त भावुकता में आपको वाहन आदि को भी सामान्य गति से चलाना चाहिए।

आपके शत्रु काफी होंगे तथा समय समय पर आपको नीचा दिखाने के लिए वे प्रयत्नशील रहेंगे क्योंकि वे आपकी खुशहाली के प्रति ईर्ष्या का भाव रखते हैं। साथ ही आपके मित्र, संबन्धी एवं पड़ौसी भी आपके ऐश्वर्य से ईर्ष्या करेंगे अतः ये भी समय समय पर शत्रुओं का कार्य करेंगे जो कि आपके अन्य प्रत्यक्ष शत्रुओं से अधिक प्रभावी होंगे। यद्यपि मुकद्दमे आदि में आपकी कोई रूचि नहीं रहेगी परन्तु धन संबन्धी मामलों में आप कोई मुकद्दमा दायर कर सकते हैं। इसमें आपका धन व्यय अधिक होगा परन्तु कुछ परिश्रम के बाद आपको इसमें सफलता मिल सकती है। आपके नौकर आपके लिए विश्वास पात्र नहीं रहेंगे तथा पारिवारिक गुप्त रहस्यों को वे अन्य लोगों को बताकर आपके सम्मान में न्यूनता लाएंगे। साथ ही उनकी चोरी करने की आदत से भी आपको आर्थिक हानि की संभावना रहेगी।

आप स्वच्छन्द प्रवृत्ति के व्यक्ति होंगे तथा अपनी रूचि के अनुसार ही कार्यो को सम्पन्न करेंगे। यद्यपि आपके पास प्रचुर मात्रा में धनागमन होता रहेगा लेकिन आपात्काल के लिए आप बचाव करने में असमर्थ रहेंगे तथा प्रौढ़ावस्था में आपको भाइयों या संबन्धियों के कारण आपको ऋृण के बोझ में दबना पड़ सकता है। इससे आपके सामाजिक सम्मान में न्यूनता होगी अतः ऐसी परिस्थितियों से सावधान रहना चाहिए। आपके मामा मामियों से संबन्ध विशेष अच्छे नहीं रहेंगे तथा उनसे सुख एवं सहयोग अल्प मात्रा में ही प्राप्त होगा। खान पान के प्रति भी आपको सतर्क रहना चाहिए अन्यथा वृद्धावस्था में आपको वायु, गुर्दे तथा प्रमेह संबन्धी रोगों से परेशानी हो सकती है। इसके अतिरिक्त आप एक धनवान व्यक्ति होंगे परन्तु समाज में आपके अच्छे कार्यो से भी लोगों से शत्रुता के भाव में वृद्धि होगी अतः सावधान रहें।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है तथा शनि भी सप्तम भाव को प्रभावित कर रहा है सामान्यतया वृश्चिक राशि के सप्तम भाव में होने से जातक का सहयोगी धनवान पित प्रकृति एवं व्ययशील प्रवृति का मनुष्य होता है। साथ ही शनि के प्रभाव से वह उग्रस्वभाव पराक्रमी एवं साहसी होता है लेकिन चंचलता की अपेक्षा गंभीरता का भाव सर्वदा विद्यमान रहता है।

अतः इनके प्रभाव से आपकी पत्नी तेजस्वी पराक्रमी एवं बुद्धिमती महिला होगी तथा चतुराई से अपने सांसारिक कार्य कलापों को सम्पन्न करंगी। वह भौतिकतावादी एवं आधुनिक विचारों की महिला होंगी एवं पाश्चत्य शास्त्रों के अध्ययन में विशेष रूचि रखेंगी। साथ ही गंभीरता का भाव भी उनके स्वभाव में विद्यमान होगा कर्तव्य परायणता की भावना भी उनमें रहेगी तथा समाज एवं परिवार के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन करने में तत्पर होंगी।

आपकी पत्नी किंचित श्यामवर्ण की आकर्षक महिला होंगी तथा उनका कद ऊंचा रहेगा। शारीरिक संरचना शनि जैसे शुष्क ग्रह के प्रभाव से दुबली पतली होगी परन्तु आकर्षण विद्यमान रहेगा साथ ही अन्य अंग प्रत्यंग भी पुष्ट एवं सुडौल रहेंगे उनका व्यक्तित्व आकर्षक होगा तथा सौन्दर्य के प्रति सतर्क रहेंगी एवं समयानुसार सौन्दर्य प्रसाधनों का भी प्रयोग करेंगी।

सप्तम भाव में शनि के प्रभाव से आपके विवाह में विलम्ब होगा लेकिन वैवाहिक प्रक्रिया समय पर पूर्ण हो जाएगी। आपका विवाह विज्ञापन द्वारा सम्पन्न होगा एवं विशिष्ट परिस्थितियों में आप अपनी इच्छा से प्रेम विवाह भी कर सकते है विवाह के बाद सामान्यतया आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा परन्तु दोनों की प्रवृति स्वाभिमानी एवं तेजस्वी होने के कारण अल्प समय के लिए आपसी वाद विवाद के कारण संबंधों में तनाव उत्पन्न हो सकता है अतः यदि आप दोनों संयम एवं बुद्धिमता पूर्वक कार्य लें तो संबंधों में मधुरता हो सकती है।

आपका विवाह समृद्ध एवं धनवान परिवार से सम्पन्न होगा तथा सामाजिक रूप से भी वे प्रभावशाली रहेंगे अतः विवाह के समय दहेज के रूप में आपको पर्याप्त मात्रा में धन सम्पति की प्राप्ति होगी एवं अन्य बहुमूल्य उपहार भी मिलेंगे साथ ही भविष्य में भी आर्थिक एवं नैतिक सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी। सास ससुर से आपके संबंध सामान्य ही रहेंगे तथा विशिष्ट अवसरों पर ही मेल मिलाप होगा लेकिन आपसी सौहार्दता बनी रहेगी।

वृश्चिक राशि में शनि के प्रभाव से आपकी पत्नी का सास ससुर के प्रति विशेष सेवा की भावना अल्प होगी एवं सुख दुख में उनका ध्यान कम ही रखेंगी। अपने उग्रस्वभाव से देवर एवं ननद भी उनको विशेष सम्मान एवं सहयोग प्रदान नहीं करेंगे जिससे पारिवारिक सुख शांति प्रभावित होगी।

व्यापार या किसी महत्वपूर्ण कार्य में साझेदारी के लिए स्थिति अच्छी नहीं रहेगी तथा इससे हानि की संभावना रहेगी अतः साझेदारी की आपको यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

आयु, दुर्घटना एवं बीमा

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में धनु राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। इसके प्रभाव से आपकी ज्यौतिष एवं तंत्र मंत्र आदि के प्रति श्रद्धा रहेगी तथा यत्न पूर्वक इसके ज्ञानार्जन करने में भी समर्थ रहेंगे। साथ ही मनोविज्ञान के क्षेत्र में भी कुछ कार्य करने के लिए तत्पर होंगे। आप के पास पैतृक सम्पत्ति रहेगी लेकिन वह अधिक नहीं होगी साथ ही उसका उपयोग भी आप अच्छी तरह करने में असमर्थ से रहेंगे। आपके संबन्धी भी आपकी जमीन जायदाद आदि पर अपना दावा कर सकते है जिससे अनावश्यक तर्क विर्तकों के साथ वातावरण अप्रसन्नता से युक्त रहेगा। इसके प्रभाव से पारिवारिक कलह भी हो सकता है। अतः यह जायदाद सन्तुष्टि की जगह असन्तुष्टि का भाव ही उत्पन्न करेगी।

विवाह के समय दहेज आदि आपको मध्यम रूप से ही प्राप्त होगा तथा ससुराल पक्ष से किसी निश्चित रकम के बारे में कोई विवाद भी हो सकता है जिससे दाम्पत्य जीवन की मधुरता प्रभावित हो सकती है। आपको न्यूनाधिक रूप से बीमा अवश्य कराना चाहिए चाहे वह किसी का भी हो इससे आपको न्यूनाधिक लाभ अवश्य प्राप्त होगा यद्यपि जीवन में आपको यहां चोरी आदि की संभावना नहीं है तथापि सावधान अवश्य रहना चाहिए। आप स्वपरिश्रम एवं पराक्रम से ही इच्छित धनार्जन करेंगे तथा विशिष्ट धन लाभ के भाव की अल्पता रहेगी। आपकी आयु उत्तम रहेगी तथा जीवन में आप स्वस्थ रहकर अपने समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यो को सम्पन्न करेंगे परन्तु वृद्धावस्था में यदा कदा आप शारीरिक अस्वस्थता प्राप्त करेंगे लेकिन इसका विशेष दुष्प्रभाव नहीं रहेगा।

प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

आपके जन्म समय में नवम भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से यद्यपि आप धर्म तथा धार्मिक कार्य कलापों का विरोध नहीं करेंगे परंतु स्वयं की इसमें कोई विशेष रूचि नहीं रहेगी। साथ ही इच्छा पूर्वक किसी भी धार्मिक ग्रंथ के अध्ययन के इच्छुक भी नहीं रहेंगे लेकिन ईश्वर की सत्ता में आपका पूर्ण विश्वास रहेगा तथा इसी परिपेक्ष्य में आप व्रतादि का भी आचरण करेंगे। आप दैनिक पूजा पाठ भी सम्पन्न करेंगे या इस उदद्शेय की पूर्ति के लिए प्रतिदिन किसी मंदिर या अन्य पूजास्थल में जा सकते है। आप धार्मिक कार्य कलापों में विशेष व्यय करना उचित नहीं समझते। इसके साथ ही अन्य विषयों में उच्चशिक्षा अर्जित करने के लिए विशेष उत्सुक रहेंगे लेकिन धर्म एवं भाग्य को आप अपनी विचार धारा में सम्मिलित कम ही करेंगे। आपकी अर्न्तप्रज्ञा विकसित रहेगी तथा शरीर में आत्मा को स्वीकार करेंगे।

आपके विचार में जीवन कर्म प्रधान होना चाहिए तथा भाग्य इसमें सहायक की भूमिका निभाता है। अतः अन्य जनों को हमेशा कार्य करने की शिक्षा देंगे तथा भाग्य पर अल्प विश्वास करने के लिए कहेंगे लेकिन प्रौढ़ावस्था में आप स्वयं कर्म की अपेक्षा भाग्य की महत्ता को अधिक मात्रा में अनुभव करेंगे तथा आपके विचार में भाग्य की प्रबलता के बिना कर्म का कोई विशेष महत्व नहीं है। आपकी लम्बी दूरी की यात्राएं अल्प मात्रा में होंगी तथा इनसे विशेष लाभ भी नहीं होगा लेकिन समाज में सम्मानीय तथा ख्याति प्राप्त व्यक्ति होंगे। आप अपने पूर्व जन्म के पुण्यों के फल से मध्यमायु में शुभ फल प्राप्त करेंगे तथा इस समय सुखी रहेंगे लेकिन वृद्धावस्था में किंचित परेशानी हो सकती है। साथ ही पौत्रादि का सुख भी मध्यम ही रहेगा।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशम भाव में कुंभ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। साथ ही बुध भी दशम भाव में ही स्थित है। कुंभराशि वायुतत्व एवं बुध ग्रह पृथ्वीतत्व है। अतः इनके प्रभाव से आपका कार्य श्रमसाध्य होने के साथ साथ बौद्धिकता से भी युक्त होगा तथा इसमें आप इच्छित उन्नति एवं लाभ अर्जित करने में समर्थ होंगे। इसके अतिरिक्त कार्य क्षेत्र में स्थायित्व भी रहेगा।

द्वितीयेश एवं पंचमेश योग कारक बुध की दशम भाव में स्थिति के प्रभाव से आजीविका के लिए आप लिपिक, लेखक, कवि, चित्रकार, जिल्दसाज शिक्षक,ज्यौतिषी,पुस्तक विक्रेता,यंत्र निर्माण कर्ता, सम्पादक, संशोधक, अनुवादक, वकील, दूत कार्य, टेलीफोन आपरेटर या विभाग में अधिकारी हो सकते हैं। अतः यदि आप उपरोक्त क्षेत्रों में अपनी आजीविका का चयन करें तो इनमें आपको वांछित उन्नति एवं सफलता प्राप्त होगी तथा भविष्य में भी प्रगति के मार्ग प्रशस्त रहेंगे। अतः उज्जवल भविष्य के लिए आपको उपरोक्त क्षेत्रों में ही कार्य करना चाहिए।

वाणिज्य कारक बुध की दशमश्थ स्थिति से व्यापार का क्षेत्र भी आपके लिए अनुकूल एवं लाभदायक होगा। अतः एजेंसी, दलाली, पुस्तक विक्रेता, अगरबत्ती, पुष्प मालाएं, कागज के खिलौने आदि से वांछित लाभ की प्राप्ति होगी। साथ ही कला एवं चित्रकारी भी आपका व्यवसाय हो सकता है। यदि आप एक व्यवसायी के रूप में अपना कार्य प्रारंभ करना चाहते है तो उपरोक्त क्षेत्रों में ही व्यापार का आरंभ करना चाहिए। इससे आपको प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित होगा तथा उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होकर नवीन आयाम स्थापित करने में समर्थ होंगे।

पंचमेश बुध के प्रभाव से जीवन में आपको विशिष्ट उन्नति एवं सम्मान की प्राप्ति होगी तथा अपने क्षेत्र में आप एक आदरणीय प्रभावी एवं अनुकरणनीय माने जाएंगे। साथ ही आप किसी सामाजिक या धार्मिक संस्था के भी उच्चपदाधिकारी हो सकते है। इससे आपकी मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा सभी लोगों का आपके प्रति सम्मान का भाव रहेगा। इसके अतिरिक्त आपका भाग्य भी प्रबल होगा तथा सौभाग्य से आप सामाजिक मान प्रतिष्ठा एवं यश अर्जित करेंगे तथा एक सम्मानीय व्यक्ति के रूप में अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

आपके पिता एक बुद्धिमान योग्य विचारक एवं विनम्र स्वभाव के व्यक्ति होंगे तथा अन्य जनों के मध्य उनका पूर्ण प्रभाव तथा सम्मान होगा। साथ ही अपने उत्तम कार्य कलापों से वे उचित मान प्रतिष्ठा अर्जित करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह का भाव होगा तथा शिक्षा दीक्षा का उच्चस्तर बनाने के लिए सदैव प्रयत्नशील रहेंगे। आपके कार्य क्षेत्र की उन्नति में उनका विशेष सहयोग होगा तथा उनके प्रभाव से भी आप उन्नति एवं प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। आपका भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान एवं सहयोग का भाव होगा तथा उनके आज्ञा पालन में तत्पर होंगे फलतः आपसी संबंधो में भी मधुरता बनी रहेगी एवं एक दूसरे के प्रति सदैव सकारात्मक भाव रहेगा।

लाभ, मित्र, समाज एवं ज्येष्ठ भ्राता

आपके जन्म समय में एकादश भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति होंगे तथा अपनी महत्वाकांक्षाओं तथा इच्छाओं की पूर्ति के लिए ईमानदारी तथा सत्य का अनुपालन करेंगे तथा परिश्रम पूर्वक उनको पूर्ण करने में समर्थ रहेंगे। इसके साथ ही आप जब भी जिस वस्तु की कामना करते है आपको उसकी प्राप्ति भी हो सकती है। आप शिक्षक, बैंक अधिकारी, वकील कम्पनी या सरकारी अधिकारी के रूप में व्यवसायिक सफलता अर्जित कर सकते है या इन लोगों से आपको समय समय पर विशिष्ट लाभ की प्राप्ति हो सकती है। इसके प्रभाव से आप मित्रों के संबंध में भाग्यशाली रहेंगे तथा उनसे आपको समय समय पर इच्छित लाभ एवं सहयोग प्राप्त होता रहेगा। मित्रों से आप को जीवन में उचित प्रोत्साहन भी प्राप्त होगा जिससे आपकी उन्नति होगी तथा वे आपसे वयस्क एवं अनुभवी होंगे।

आपका सामाजिक स्तर उच्च रहेगा तथा बड़े बड़े अधिकारी मंत्री नेता या महत्वपूर्ण व्यक्तियों से आपका मेल जोल या संबंध रहेंगे जिससे समाज में आपको पूर्ण आदर तथा सम्मान की प्राप्ति होगी। साथ ही महत्वपूर्ण लोगों के प्रभाव से आप उचित लाभ एवं ख्याति प्राप्त करेंगे। बड़े भाई बहिनों से आपके संबंध सामान्यतया मधुर रहेंगे आवश्यकतानुसार उनका सहयोग भी मिलता रहेगा। आपके आय के साधन मुख्य कार्य के अतिरिक्त अन्य भी हो सकते है जिससे की आपका धनार्जन अच्छा रहेगा साथ ही जीवन में आप समयानुसार कोई विशिष्ट सम्मान भी अर्जित करने में समर्थ हो सकते है। इसके अतिरिक्त बाएं कान के दर्द से यदा कदा परेशान हो सकते है परन्तु सामान्य जीवन आनन्द पूर्वक व्यतीत करेंगे।

विदेश यात्रा, हानि, बन्धन एवं कर्ज

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आप धन का सदुपयोग करने वाले व्यक्ति होंगे तथा अवसरानुकूल बचत भी करेंगे। आप समान्यतया अनावश्यक व्यय कम ही करेंगे। साथ ही धैर्य का भाव भी आप में विद्यमान रहेगा। आप धन की कीमत समझेंगे तथा बुद्धिमता पूर्वक इसका उपयोग करेंगे लेकिन आपको अपना पूंजीनिवेश सामान्य कंपनियों या अन्य स्थानों में नहीं करना चाहिए।

आपकी जीवन में उन्नति शनैः शनैः सम्पन्न होगी क्योंकि आप किसी कार्य को अत्यंत ही सोच समझकर धैर्य पूर्वक सम्पन्न करते हैं तथा आर्थिक स्थिति भी युवावस्था के बाद ही विशेष अनुकूल हो सकती है। अतः आपको आर्थिक क्षेत्र में किसी नाटकीय परिवर्तन की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए। इसके अतिरिक्त आप लम्बी अवधि के निवेशों से लाभान्वित हो सकते है।

आपका सामान्य व्यय परोपकार संबंधी कार्यो पर होगा तथापि यदा कदा कोई अनावश्यक व्यय भी हो सकता है। अतः इससे आपको सावधानी रखनी चाहिए। यात्राओं से आपको आनन्द की अनुभूति होगी तथा समय समय पर इनसे लाभ भी होता रहेगा। आप जीवन में विदेश यात्रा अवश्य करेंगे। यह यात्रा आपकी धर्म या धार्मिक कार्यो से संबंधित होगी अथवा किसी अन्य व्यक्ति या संबंधी के सहयोग से आपको यह सुअवसर प्राप्त होगा। यह चाहे यात्रा किसी भी संदर्भ में हो आपके लिए आर्थिक एवं अन्य दृष्टियों से लाभदायक रहेगी तथा विभिन्न दर्शनीय स्थानों की सैर करने का भी आपको अवसर प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त यदा कदा आपको बायीं आंख में कोई परेशानी हो सकती है। अतः इसका उचित ध्यान रखना चाहिए।

फलादेश - 2019

गोचरवश इस वर्ष में बृहस्पति की स्थिति सप्तम भाव में रहेगी अतः यह वर्ष आपके लिए अच्छा रहेगा। व्यापारिक तथा कार्यक्षेत्र में आपकी उन्नति होगी तथा अनायास ही किसी सफलता के योग बनेंगे। इस समय वेरोजगारो के रोजगार मिलने के भी अवसर आएंगे। इस समय अविवाहितों का विवाह भी सम्पन्न हो सकता है। स्त्री से आप इस वर्ष पूर्ण रूप से सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे तथा परस्पर संबन्धो में भी मधुरता रहेगी। अतः आपका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होगा। इस समय समाज में आपके प्रभाव तथा मान प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपका सम्मान करेंगे। आर्थिक स्थिति भी इस वर्ष अच्छी रहेगी तथा आवश्यक मात्रा में धन एवं लाभार्जन करने में आप सफल रहेंगे। परन्तु यदा कदा व्यय भी अधिक मात्रा में होगा। इसके अतिरिक्त इस वर्ष में आय गोचरफल अशुभ फल प्रदान करेंगे परन्तु दशाफल शुभ रहेगा। अतः शुभ फलों की अधिकता रहेगी परन्तु यदा कदा अशुभ फल भी घटित होंगे।

गोचर वश शनि की स्थिति इस समय अष्टम भाव में रहेगी। अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा आपके सांसारिक महत्व के शुभ कार्य भी उत्साह एवं परिश्रम से ही सम्पन्न होंगे। पत्नी का स्वास्थ्य इस वर्ष प्रभावित रहेगा। फलतः दाम्पत्य सुख में न्यूनता रहेगी तथा संबंधों में भी यदा कदा तनाव रहेगा। आर्थिक दृष्टि से भी समय सामान्य रहेगा तथा धन एवं लाभार्जन आवश्यकता के अनुसार ही रहेगा तथा सन्तुष्टि अल्प ही रहेगी। आय स्रोतों की वृद्धि में भी समस्याएं उत्पन्न होंगी। इस समय कार्य क्षेत्र में भी आप परिश्रम एवं पराक्रम से ही न्यूनाधिक सफलता अर्जित कर सकते हैं।

इस वर्ष में अन्य गोचर फल शुभ परन्तु दशाफल अनुकूल नहीं रहेगी। अतः शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको व्यवधानों का सामना करना पड़ेगा। साथ ही शनि की दशा का भी प्रभाव न्यूनाधिक रहेगा। अतः इसके लिए आपको शनि का नियमित पूजन तथा दान करना चाहिए एवं शरीर की बाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में नीलम या लोहे की अंगूठी धारण करनी चाहिए। इससे अशुभ प्रभाव कम होंगे एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी।

इस वर्ष में राहु की स्थिति गोचर वश द्वितीय तथा केतु की अष्टम भाव में रहेगी। इसके प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा यदा कदा मानसिक उद्विग्नता भी उत्पन्न होगी। साथ ही पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि भी सामान्य ही रहेगी परन्तु पारिवारिक जनों के परस्पर संबंधों में यदा कदा मतभेद उत्पन्न हो सकते हैं। इस समय आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य परिश्रम से सम्पन्न होंगे तथा न्यूनाधिक सफलता भी आपको प्राप्त होगी। साथ ही आर्थिक स्थिति भी मध्यम रहेगी तथा आवश्यक धनार्जन होता रहेगा परन्तु व्यय भी अधिक होगा लेकिन इसका दुष्प्रभाव अल्प रहेगा। इसके अतिरिक्त इस वर्ष में आप जायदाद संबंधी लाभ भी प्राप्त कर सकते हैं ।

इस समय आपके लिए अन्य गोचर शुभ परन्तु दशा मध्यम रहेगी अतः कार्य क्षेत्र की उन्नति में समस्याएं आएंगी परन्तु आप अपने पराक्रम एवं परिश्रम से उनका समाधान

करने में समर्थ हो सकेंगे। साथ ही अधिक मात्रा में शुभ फल की प्राप्ति के लिए आपको नियमित रूप से राहु एवं केतु का पूजन जप तथा दानादि कार्य करने चाहिए।

इस वर्ष चन्द्र की महादशा में तीन ग्रहों की अंतर्दशा रहेगी। इस वर्ष बुध का अंतर 16/01/2019 को समाप्त होगा। उसके बाद केतु अंतर्दशा प्रारंभ होगी तथा 17/08/2019 तक चलेगी। इस वर्ष का अंत शुक्र की अंतर्दशा में होगा। आपकी जन्मकुंडली में महादशा का स्वामी प्रथम भाव में वृष राशि में स्थित हैं।

यह समय आपके लिए विशेष अच्छा नहीं रहेगा इस समय परिश्रम करने पर भी आपको विशेष सफलताएं नहीं मिलेंगी जिससे मानसिक तनाव रहेगा। व्यापार के क्षेत्र में भी स्थिति अनुकूल नहीं रहेगी तथा उन्नति तथा सफलता में अनावश्यक विलम्ब तथा बाधाएं उत्पन्न होगी यदि नौकरी में है तो पदोन्नति में व्यवधान आएंगे तथा अधिकारी वर्ग से भी संबधों में तनाव का भाव रहेगा। पारिवारिक शांति भी अच्छी नहीं रहेगी एवं सदस्यों का आपस में मतभेद तथा तनाव रहेंगे। साथ ही ऐसे समय में कोई महत्वपूर्ण संपर्क भी नहीं बनेगा जिससे शुभ फलों में बाधाएं आएंगी। मित्रवर्ग के भी सहयोग तथा सदभाव में न्यूनता आएगी एवं परस्पर विश्वास के भाव में कमी रहेगी लेकिन शत्रुवर्ग को आप पराजित करने में समर्थ रहेंगे अतः ऐसे समय को धैर्य पूर्वक व्यतीत करना चाहिए।

यह समय आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा तथा आपकी कोई भी इच्छा पूर्ण नहीं होंगी साथ ही योजनाओं में भी व्यवधान आएंगे व्यापार में भी अनावश्यक समस्याओं तथा परेशानियों का सामना करना पड़ेगा एवं हानि की भी सम्भावना रहेगी यदि नौकरी में है तो अधिकारी वर्ग से सम्बंधों में तनाव रहेगा जिससे वे आपसे सन्तुष्ट रहेंगे। इसके अतिरिक्त ऐसे समय में प्रभावशाली व्यक्तियों से भी सम्पर्को में न्यूनता आएगी तथा शत्रु एवं प्रतिद्वन्दी भी आवश्यक बाधाएं उत्पन्न करेंगे अतः इनसे सावधान रहना चाहिए।

यह समय आपके लिए मध्यम रहेगा शुभ की अपेक्षा अशुभ फलों की अधिकता रहेगी आर्थिक दृष्टि से समय अच्छा नहीं रहेगा तथा व्यय की अधिकता एवं आय स्रोतों में कमी रहेगी। जिससे यदा कदा आर्थिक परेशानी का सामना करना पड़ सकता है यदि नौकरी में है तो अधिकारी वर्ग से समस्याएं तथा परेशानियां उत्पन्न होंगी जिससे मानसिक तनाव बना रहेगा साथ ही मित्रवर्ग से लाभ एवं सहयोग के भाव में न्यूनता रहेगी। पारिवारिक सुख शान्ति में भी कमी रहेगी तथा सदस्यों का आपस में परस्पर असहयोग तथा वैमनस्य का भाव रहेगा। इसके अतिरिक्त मनोरंजन सम्बंधी कार्य कलापों में भी न्यूनता रहेगी। अतः ऐसे समय को सयंम तथा धैर्यपूर्वक व्यतीत करें।

फलादेश - 2020

इस वर्ष में बृहस्पति का गोचरीय भ्रमण अष्टम भाव में रहेगा। अतः यह समय आपके लिए मध्यम रहेगा। शारीरिक एवं मानसिक रूप से आप स्वस्थ रहेंगे परन्तु यदा कदा मानसिक तनाव से आपको किंचित मात्रा में परेशानी हो सकती है। इस समय सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आप परिश्रम एवं पराक्रम से ही इच्छित सफलता अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही नौकरी राजनीति या व्यापारिक क्षेत्र में शत्रु तथा विरोधी पक्ष के द्वारा समस्याएं भी उत्पन्न हो सकती हैं जिससे उन्नति मार्ग में बाधाएं आएंगी लेकिन आप परिश्रम पूर्वक इनका समाधान करेंगे। इस वर्ष में आपका कोई मुकद्दमा भी प्रारंभ हो सकता है। आर्थिक स्थिति इस समय मध्यम रहेगी तथा आय के साथ साथ व्यय की भी अधिकता होगी परन्तु लाभमार्ग प्रशस्त करने के लिए आप यत्नशील रहेंगे। इस समय आपको किसी विशिष्ट लाभ की प्राप्ति की संभावना रहेगी साथ ही ज्योतिष या तंत्र मंत्र आदि में आपकी श्रद्धा उत्पन्न होगी एवं न्यूनाधिक ज्ञान भी अर्जित कर सकते है।

इसके साथ ही अन्य गोचर फल शुभ परन्तु दशा मध्यम रहेगी अतः सर्वत्र आप अतिरिक्त परिश्रम एवं पराक्रम से ही सफलता अर्जित कर सकेंगे। साथ ही अधिक शुभ फलों की प्राप्ति के लिए आपको नियमित रूप से बृहस्पति के व्रत, पूजा तथा दानादि कार्य करना चाहिए।

गोचरवश इस वर्ष में शनि नवम भाव में संक्रमण करेगा अतः यह वर्ष आपके लिए अच्छा रहेगा। इस समय समाज में आपकी मान प्रतिष्ठा मैं वृद्धि होगी तथा एक प्रभावी व्यक्ति के रूप में आपका सम्मान करेंगे। शत्रु एवं प्रतिद्वन्दियों पर विजय प्राप्त करने में आप सफल रहेंगे। साथ ही धर्म एवं धार्मिक कृत्यों के प्रति आपके मन में श्रद्धा का भाव उत्पन्न होगा तथा यत्नपूर्वक आप इनको करने में तत्पर रहेंगे। आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष आपके लिए अच्छा रहेगा एवं इच्छित मात्रा में धन तथा लाभ की प्राप्ति वर्ष भर होती रहेगी। परन्तु पिता का स्वास्थ्य इस समय अच्छा नहीं रहेगा तथा शारीरकि रूप से वे परेशानी की अनुभूति कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त आय गोचर फल इस समय अशुभ रहेंगे। परन्तु दशाफल शुभ फल प्रदान करेगी। अतः यदा कदा आपको मानसिक या अन्य परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। परन्तु सामान्य समय अच्छा ही व्यतीत होगा।

इस वर्ष में राहु की स्थिति गोचर वश द्वितीय तथा केतु की अष्टम भाव में रहेगी। इसके प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा यदा कदा मानसिक उद्विग्नता भी उत्पन्न होगी। साथ ही पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि भी सामान्य ही रहेगी परन्तु पारिवारिक जनों के परस्पर संबंधों में यदा कदा मतभेद उत्पन्न हो सकते हैं। इस समय आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य परिश्रम से सम्पन्न होंगे तथा न्यूनाधिक सफलता भी आपको प्राप्त होगी। साथ ही आर्थिक स्थिति भी मध्यम रहेगी तथा आवश्यक धनार्जन होता रहेगा परन्तु व्यय भी अधिक होगा लेकिन इसका दुष्प्रभाव अल्प रहेगा। इसके अतिरिक्त इस वर्ष में आप जायदाद संबंधी लाभ भी प्राप्त कर सकते हैं ।

इस समय आपके लिए अन्य गोचर शुभ परन्तु दशा मध्यम रहेगी अतः कार्य क्षेत्र

की उन्नति में समस्याएं आएंगी परन्तु आप अपने पराक्रम एवं परिश्रम से उनका समाधान करने में समर्थ हो सकेंगे। साथ ही अधिक मात्रा में शुभ फल की प्राप्ति के लिए आपको नियमित रूप से राहु एवं केतु का पूजन जप तथा दानादि कार्य करने चाहिए।

इस वर्ष चन्द्र की महादशा में शुक्र का अंतर रहेगा। शुक्र द्वादश भाव में मेष राशि में स्थित हैं जबकि चन्द्र प्रथम भाव में वृष राशि में स्थित हैं।

यह समय आपके लिए विशेष अच्छा नहीं रहेगा। इस समय आर्थिक स्थिति में भी अस्थिरता रहेगी तथा आय स्रोतों में कमी रहेगी। जिससे यदा कदा आपको आर्थिक परेशानी का सामना करना पड़ेगा। आपको व्यय पर नियंत्रण रखना होगा। व्यापार में भी आपको सन्तोषजनक परिणामों की प्राप्ति नहीं होगी एवं लाभ मार्ग भी अवरुद्ध रहेंगे। यदि नौकरी में है तो पदोन्नति सम्बंधी विलम्ब होगा तथा किसी अवांछित स्थान पर स्थानांतरण हो सकता है परिवार में भी सुख शान्ति के भाव में न्यूनता रहेगी। तथा सदस्यों का आपस में मतभेद तथा वैमनस्य का भाव रहेगा। जिससे आपस में तनाव रहेगा। शारीरिक रूप से आप स्वस्थ तथा प्रसन्न रहेंगे। तथापि ऐसे समय को धैर्य एवं बुद्धिमता पूर्वक व्यतीत करना चाहिए।

फलादेश - 2021

गोचरवश इस वर्ष में बृहस्पति दशम भाव में भ्रमण करेगा। अतः यह वर्ष आपके लिए काफी महत्वपूर्ण रहेगा। व्यापारिक तथा कार्यक्षेत्र में इस समय आप उन्नति एवं सफलता प्राप्त करेंगे। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग या राजनैतिक महत्व के व्यक्तियों से भी आपके मधुर सम्बन्ध बनेंगे। फलतः इनसे आपको इच्छित लाभ एवं सहयोग की प्राप्ति होगी। इस वर्ष में आपको राज्यस्तर पर किसी सम्मान से सम्मानित भी किया जा सकता हैं। पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा तथा सभी लोग प्रेमपूर्वक रहेंगे। आर्थिक दृष्टि से भी यह वर्ष आपके लिए अच्छा रहेगा एवं आवश्यक मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगे। लेकिन इस समय विश्राम का अभाव रहेगा तथा सांसारिक कार्यों को संपन्न करने में आप तत्पर रहेंगे। इस समय अन्य लोगो से आपको शालीनता का व्यवहार भी करना चाहिए। इसके अतिरिक्त गोचरफल अशुभ परन्तु दशा शुभ फल प्रदान करेगी अतः यह वर्ष सामान्यतया शुभ रहेगा।

गोचरवश इस वर्ष में शनि नवम भाव में संक्रमण करेगा अतः यह वर्ष आपके लिए अच्छा रहेगा। इस समय समाज में आपकी मान प्रतिष्ठा मैं वृद्धि होगी तथा एक प्रभावी व्यक्ति के रूप में आपका सम्मान करेंगे। शत्रु एवं प्रतिद्वन्दियों पर विजय प्राप्त करने में आप सफल रहेंगे। साथ ही धर्म एवं धार्मिक कृत्यों के प्रति आपके मन में श्रद्धा का भाव उत्पन्न होगा तथा यत्नपूर्वक आप इनको करने में तत्पर रहेंगे। आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष आपके लिए अच्छा रहेगा एवं इच्छित मात्रा में धन तथा लाभ की प्राप्ति वर्ष भर होती रहेगी। परन्तु पिता का स्वास्थ्य इस समय अच्छा नहीं रहेगा तथा शारीरकि रूप से वे परेशानी की अनुभूति कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त आय गोचर फल इस समय अशुभ रहेंगे। परन्तु दशाफल शुभ फल प्रदान करेगी। अतः यदा कदा आपको मानसिक या अन्य परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। परन्तु सामान्य समय अच्छा ही व्यतीत होगा।

इस वर्ष राहु की स्थिति राशि तथा केतु की सप्तम भाव में गोचर वश रहेगी। इसके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए मध्यम रहेगा। इस समय आपका स्वास्थ्य विशेष अच्छा नहीं रहेगा साथ ही मानसिक रूप से भी यदा कदा आपको परेशानी रहेगी। पति पत्नी के संबंध सामान्य ही रहेंगे तथापि यदा कदा इसमें मतभेद हो सकते हैं लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। आर्थिक स्थिति इस वर्ष सामान्य रहेगी तथा परिश्रम एवं पराक्रम के द्वारा आप आवश्यक मात्रा में धन अर्जित करेंगे लेकिन व्यय की भी अधिकता रहेगी। कार्य क्षेत्र की उन्नति एवं सफलता की दृष्टि से वर्ष संघर्ष पूर्ण रहेगा तथा परिश्रम से ही आप उन्नति मार्ग प्रशस्त कर सकेंगे। इस समय आपके पुराने सम्पर्कों में कमी होगी तथा नवीन सम्पर्क स्थापित होंगे जिससे भविष्य में आपको न्यूनाधिक सफलता प्राप्त हो सकती है।

इसके साथ ही अन्य गोचर फल अनुकूल परन्तु दशा फल मध्यम रहेगा। अतः आपको शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करने के लिए अतिरिक्त परिश्रम एवं संघर्ष करना पड़ेगा। अतः अशुभ फलों में न्यूनता तथा शुभ फलों में वृद्धि के लिए आपको नियमित रूप से राहु केतु का पूजन, जप एवं दान करने चाहिए।

इस वर्ष मंगल की महादशा प्रारंभ हो रही है। इससे विदित होता है इस समय आपकी जीवन शैली तथा कार्य क्षेत्र में परिवर्तन होगा। इस वर्ष का प्रारंभ चन्द्र की महादशा में शुक्र के अंतिम अंतर से हो रहा है और वर्ष की समाप्ति मंगल की महादशा में मंगल के प्रथम अंतर से होगी। आपकी जन्मकुंडली में महादशा का स्वामी द्वादश भाव में मेष राशि में स्थित हैं।

यह समय आपके लिए सामान्यतया शुभ रहेगा। इस समय व्यापार में लाभ होगा तथा सन्तोषजनक परिणाम अर्जित करने में सफल रहेंगे। आर्थिक स्थिति में भी सुदृढ़ता रहेगी तथा आय स्रोतों में वृद्धि से आप आवश्यक मात्रा में धनार्जन करने में सफल रहेंगे यदि नौकरी में है तो पदोन्नति सम्बंधी सम्भावना बनी रहेंगी तथा स्थानांतरण के भी योग बनेगे। साथ ही अधिकारियों एवं सहयोगियों से सम्बंधों में अनुकूलता रहेगी। पारिवारिक सुख शान्ति भी अच्छी रहेगी तथा सभी लोग आपस में मिलजुल कर रहेंगे तथा एक दूसरे को पूर्ण सहयोग प्रादान करेंगे इसके अतिरिक्त लाभदायक एवं उन्नति कारक यात्राएं भी सम्पन्न होंगी तथा भविष्य के लिए योजनाएं भी बनेंगी। मित्रवर्ग से आपको समयानुकूल उचित लाभ एवं सहयोग मिलता रहेगा।

यह समय आपके लिए सामान्यतया अच्छा रहेगा। इस समय अल्प परिश्रम से ही आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न होंगे तथा अपने लक्ष्यों की प्राप्ति में समर्थ रहेंगे व्यापारिक क्षेत्र में भी लाभ तथा उन्नति के मार्ग प्रशस्त रहेंगे। आर्थिक दृष्टि से स्थिति में सुधार होगा तथा आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी यदि नौकरी में है तो पदोन्नति की संभावना बनेगी। पारिवारिक सुख शांति तथा समृद्धि अच्छी रहेगी तथा सभी लोग आपस में प्रेम पूर्वक रहेंगे शत्रु एवं प्रतिद्वन्दी भी इस समय आपसे पराजित रहेंगे साथ ही यदा कदा सांसारिक व्यय भी अधिक होगा लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा इसके अतिरिक्त दूर समीप की यात्राओं की भी संभावना रहेगी लेकिन जोखिम के कार्यों से आपको इस समय दूर ही रहना चाहिए।

फलादेश - 2022

इस वर्ष में गोचरवश बृहस्पति एकादश भाव में संक्रमण करेगा। अतः यह वर्ष आपके लिए अत्यन्त शुभ एवं सौभाग्यशाली रहेगा। इस समय आपके नवीन आय साधनों में वृद्धि होगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ की प्राप्ति होगी। अतः आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी। व्यापार या कार्यक्षेत्र में भी आपको वांछित उन्नति तथा सफलता मिलेगी। नौकरी या राजनीति आदि में पदोन्नति की भी संभावना रहेगी। ज्योतिष शास्त्र में आप इस समय पूर्ण श्रद्धा व्यक्त करेंगे तथा व्यस्तता के उपरान्त भी मानसिक प्रसन्नता एवं संतुष्टि से युक्त रहेंगे। सामाजिक क्षेत्र में भी इस वर्ष आपकी मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा दूर दूर तक आपकी प्रसिद्धि फैलेगी। जिससे सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे तथा आपका हार्दिक सम्मान करेंगे। साथ ही आय गोचर तथा दशाफल भी इस समय शुभ फल प्रदान करेंगे। अतः यह वर्ष आप का अत्यन्त ही सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होगा।

इस वर्ष शनि गोचरवश दशम भाव में परिभ्रमण करेगा। अतः यह समय आपके लिए अत्यन्त ही शुभ एवं महत्वपूर्ण रहेगा। व्यापारिक क्षेत्र में इस समय आपकी महत्वपूर्ण उन्नति होगी तथा उन्नतिकारक किसी परिवर्तन की भी संभावना रहेगी तथा राजनैतिक क्षेत्र के लिए यह समय अत्यन्त ही महत्वपूर्ण रहेगा। इस समय आपको इस क्षेत्र में आपको किसी उच्च पद की भी प्राप्ति हो सकती है। नौकरी या अन्य क्षेत्र में भी आपके उन्नति मार्ग प्रशस्त होंगे तथा किसी महत्वपूर्ण पद पर नियुक्ति की संभावना रहेगी। आर्थिक दृष्टि से भी यह वर्ष शुभ रहेगा। इस समय सर्वत्र आपके आय स्रोतों में वृद्धि होगी तथा इच्छित मात्रा में धन का लाभ अर्जित करने में आप सफल रहेंगे। साथ ही इस वर्ष में आय गोचरफल एवं दशाफल भी शुभ फल प्रदान करेगी अतः समय अत्यन्त ही उन्नतिकारक एवं शुभ रहेगा।

इस वर्ष में गोचरवश राहु की स्थिति द्वादश भाव में तथा केतु की स्थिति षष्ठ भाव में रहेगी अतः यह वर्ष सामान्यतया शुभ ही रहेगा इस समय आपका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं मानसिक रूप से भी आपकी लम्बी दूरी की यात्रा होगी या कोई विदेश यात्रा भी हो सकती है। इस समय आप यात्राओं में अधिक व्यय करेंगे साथ ही मनोरंजन आदि में आप अपना अधिकांश समय व्यतीत करेंगे। आर्थिक स्थति भी इस वर्ष आपकी अच्छी रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित होगा। केतु के प्रभाव से आप शत्रु पर भी विजय प्राप्त कर सकते हैं। समाज में सभी लोग आपके प्रभुत्व को स्वीकार करेंगे। जिससे आपकी में प्रतिष्ठा बढेगी कार्यक्षेत्र में भी इस समय उन्नतिशील रहेंगे। इसके अतिरिक्त गोचर तथा दशा इस समय शुभ रहेगी। अतः समय अच्छा ही रहेगा।

मंगल की महादशा में मंगल का अंतर 15/03/2022 को समाप्त होगा। उसके बाद राहु का अंतर प्रारंभ होगा। मंगल द्वादश भाव में मेष राशि में स्थित हैं जबकि राहु पंचम् भाव में कन्या राशि में स्थित हैं।

यह समय आपके लिए सामान्यतया अच्छा रहेगा। इस समय अल्प परिश्रम से ही आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न होंगे तथा अपने लक्ष्यों की प्राप्ति में समर्थ रहेंगे

व्यापारिक क्षेत्र में भी लाभ तथा उन्नति के मार्ग प्रशस्त रहेंगे। आर्थिक दृष्टि से स्थिति में सुधार होगा तथा आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी यदि नौकरी में है तो पदोन्नति की संभावना बनेगी। पारिवारिक सुख शांति तथा समृद्धि अच्छी रहेगी तथा सभी लोग आपस में प्रेम पूर्वक रहेंगे शत्रु एवं प्रतिद्वन्दी भी इस समय आपसे पराजित रहेंगे साथ ही यदा कदा सांसारिक व्यय भी अधिक होगा लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा इसके अतिरिक्त दूर समीप की यात्राओं की भी संभावना रहेगी लेकिन जोखिम के कार्यों से आपको इस समय दूर ही रहना चाहिए।

यह समय आपके लिए शुभ एवं अनुकूल रहेगा इस समय कल्पनाशीलता एवं व्यवहारिकता से आप शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वांछित परिणाम अर्जित करने में सफल रहेंगे तथा सोचे हुए महत्वपूर्ण कार्य तथा योजनाएं भी पूर्ण होंगी व्यापार में भी आपको वांछित लाभ प्राप्त होगा तथा उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। यदि नौकरी में है तो आपको पदोन्नति के अवसर प्राप्त होंगे तथा अधिकारी वर्ग से सम्बंधों में मधुरता रहेगी सामाजिक मान प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी तथा लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। मित्रवर्ग से आपको वांछित लाभ एवं सहयोग मिलेगा एवं आपसी विश्वास में भी वृद्धि होगी परिवार में भी सुख शान्ति का वातावरण रहेगा सभी सदस्य आपस में मिलजुल कर रहेंगे इसके अतिरिक्त दूर समीप की कुछ महत्वपूर्ण यात्राएं भी सम्पन्न होंगी जिनसे आपको वांछित लाभ एवं सम्मान की प्राप्ति होगी

फलादेश - 2023

इस वर्ष में गोचरीय परिभ्रमण से बृहस्पति की स्थिति द्वादश भाव में रहेगी। अतः आपका शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा परन्तु मानसिक रूप से यदा कदा आप अशान्ति की अनुभूति करेंगे। आर्थिक स्थिति भी आपकी सामान्य रहेगी तथा व्यय अधिक होगा जिससे आप अल्प मात्रा में परेशानी की अनुभूति करेंगे। इस वर्ष में आप किसी शुभ एवं मांगलिक कार्य पर व्यय भी कर सकते हैं। कार्य क्षेत्र की उन्नति के लिए आपको अधिक पराक्रम एवं परिश्रम करना पड़ेगा तभी न्यूनाधिक सफलता प्राप्त हो सकती है। इस वर्ष में आपकी दूर समीप की कोई यात्रा सम्पन्न होगी साथ ही इसमें व्यय की भी अधिकता रहेगी जिससे आर्थिक विषमता उत्पन्न होगी परन्तु भविष्य में आपकी लाभ की संभावनाएं बन सकती हैं।

इसके साथ ही इस समय अन्य गोचर शुभ परन्तु दशा मध्यम रहेगी अतः सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको पराक्रम एवं परिश्रम से ही लाभ एवं सुख की प्राप्ति होगी। साथ ही यत्न पूर्वक आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी। अतः अधिक शुभ फलों की प्राप्ति के लिए आपको नियमित रूप से बृहस्पति का पूजन व्रत तथा दानादि करना चाहिए।

इस वर्ष में गोचरवश स्थिति दशम भाव में रहेगी। अतः यह वर्ष आपके लिए शुभ एवं उन्नतिकारक रहेगा। इस समय व्यापारिक क्षेत्र में आप उन्नति या कोई महत्वपूर्ण परिवर्तन कर सकते हैं। साथ ही राजनीति में संलग्न हों तो उसमें आप किसी महत्वपूर्ण पद को प्राप्त करने में भी सफल रहेंगे या राजनैतिक महत्व के व्यक्तियों से आपका संबन्ध बढ़ेगा। नौकरी या अन्य कार्य क्षेत्र में भी पदोन्नति की संभावनाएं प्रबल होंगी। आर्थिक दृष्टि से भी यह वर्ष आपके लिए उत्तम रहेगा तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ प्राप्त करने में आप समर्थ रहेंगे। साथ ही आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी। लेकिन शारीरिक स्वास्थ्य के प्रति सावधान रहें। इस समय रक्तचाप सम्बन्धी परेशानी उत्पन्न हो सकती हैं। इसके साथ ही आय गोचर फल अशुभ रहेगा परन्तु दशा शुभ फल प्रदान करेगी अतः उपर्युक्त शुभ फलों में यदा कदा विलम्ब तथा न्यूनता परिलक्षित होगी परन्तु अंतिम परिणाम सन्तोषजनक रहेगा।

इस वर्ष में राहु को गोचरीय भ्रमण द्वादश भाव में तथा केतु का षष्ठ भाव में रहेगा। अतः यह वर्ष आपके लिए शुभाशुभ फल प्रदान करेगा। इस समय आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। मानसिक रूप से भी आप या कदा अशान्त तथा उद्विग्न रहेंगे। इस समय आपकी लम्बी दूरी की यात्राएँ तथा विदेश सम्बन्धी कोई यात्रा हो सकती है। इनमें आपका व्यय अधिक होगा। साथ ही मनोरंजन सम्बन्धी कार्यों में भी आप अधिक व्यय करेंगे। फलतः इस वर्ष में आपको यदा कदा आर्थिक परेशानी हो सकती है। लेकिन षष्ठ भाव में स्थित केतु के प्रभाव से आपके कार्य क्षेत्र में उन्नति होगी तथा सामाजिक जनों के मध्य आपकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी। फलतः सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। इस समय शत्रु तथा प्रतिद्वन्दियों को पराजित करने में आपको सफलता प्राप्त होगी। लेकिन इस समय आप नेत्र सम्बन्धी कष्ट से परेशान हो सकते हैं। साथ ही इस वर्ष में गोचरफल अशुभ रहेगा परन्तु दशा शुभ फल प्रदान करेगी। अतः उपर्युक्त शुभ फलों में यदा कदा अल्प मात्रा में प्राप्त होंगे परन्तु अशुभ फल भी प्राप्त होते रहेंगे।

मंगल की महादशा में राहु का अंतर 02/04/2023 को समाप्त होगा। उसके बाद गुरु का अंतर प्रारंभ होगा। राहु पंचम् भाव में कन्या राशि में स्थित हैं जबकि गुरु तृतीय भाव में कर्क राशि में स्थित हैं।

यह समय आपके लिए शुभ एवं महत्वपूर्ण रहेगा इस समय आप कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य को सम्पन्न करने में समर्थ रहेंगे तथा प्रभावशाली व्यक्तियों से सम्पर्क स्थापित होंगे जिनसे आपको समयानुसार इच्छित लाभ एवं सहयोग मिलता रहेगा। व्यापापार में भी आपको वांछित लाभ एवं सफलता मिलेगी तथा उन्नति के मार्ग प्रशस्त रहेंगे इसी समय आपके कुछ अच्छे सम्पर्क आपको वांछित लाभ प्रदान करेंगे यदि नौकरी में है तो पदोन्नति के योग बनेंगे तथा अधिकारी वर्ग भी आपसे प्रसन्न तथा सन्तीष्ट रहेंगे यात्राओं में इस समय आपकी रुचि रहेगी जिनसे आपको लाभ होगा एवं भविष्य के लिए नवीन आयाम स्थापित होंगे पारिवारिक सुख शान्ति भी उत्तम रहेगी तथा सभी आपस में प्रेमपूर्वक रहेंगे तथा एक दूसरे को पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे इसके साथ ही परिवार में कोई मांगलिक उत्सव भी सम्पन्न हो सकता है।

यह समय आपके लिए विशेष शुभ एवं अनुकूल रहेगा इस समय आप में उत्साह तथा साहस के भाव की प्रबलता रहेगी तथा अपने समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को पूर्ण करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही विद्वान एवं प्रभावशाली लोगों से सम्पर्क स्थापित होंगे तथा उनसे वांछित लाभ एवं सहयोग प्राप्त होगा यदि कविता संगीत कला आदि में आपकी रुचि है तो ऐसे समय में आप आशातीत उन्नति तथा सम्मान अर्जित करने में समर्थ रहेंगे पारिवारिक सदस्यों का आपके प्रति सहयोग का भाव रहेगा तथा आपस में भी स्नेह एवं मिल जुलकर रहेंगे। भाई बहिन भी ऐसे समय में अपने अपने क्षेत्र में वांछित सफलताएं प्राप्त करेंगे इसके अतिरिक्त दूर समीप की लाभदायक यात्राएं सम्पन्न होंगी तथा इनसे आपको भविष्य के लिए सम्मान तथा उन्नति के योग बनेंगे। साथ ही धर्म या दर्शन आदि में भी रुचि उत्पन्न होगी एवं धार्मिक लोगों की संगति से शांति प्राप्त करेंगे अतः ऐसे शुभ समय का आपको यत्नपूर्वक सदुपयोग करना चाहिए।

फलादेश - 2024

बृहस्पति इस वर्ष में गोचरवश प्रथम भाव में भ्रमण करेगा। इसके प्रभाव से आपका शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा सामाजिक क्षेत्र में भी आपको किंचित मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। इस वर्ष व्यापार या अन्य कार्य क्षेत्र में आप उन्नति एवं सफलता प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे। इस समय अविवाहितों के विवाह की भी संभावना बढ़ेगी। धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा का भाव उत्पन्न होगा। एवं यत्नपूर्वक आर्थिक कार्यों को सम्पन्न करने में आप तत्पर रहेंगे। इस वर्ष में आपके आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी फलतः आवश्यक मात्रा में धन अर्जित करने में आप सफल रहेंगे। जिससे आर्थिक स्थिति सुदृढ होगी। साथ ही विगत रुके हुए कार्यों को पूर्ण करने में भी आपको सफलता मिलेगी। आप स्वतन्त्र प्रवृति का अनुपालन करेंगे एवं अपने को अत्यन्त ही अनुभवी समझने लगेंगे। अतः यह समय आपके लिए महत्वपूर्ण परन्तु विश्रामरहित रहेगा। इसके अतिरिक्त अन्य गोचरफल अशुभ होने से परन्तु दशा फल अनुकूल रहने से उपर्युक्त शुभ फलों में यदा कदा आपको न्यूनता का आभास होगा। परन्तु परिश्रम करने के उपरान्त आप सकरात्मक फल प्राप्त करने में सफल होंगे।

इस वर्ष में गोचरवश स्थिति दशम भाव में रहेगी। अतः यह वर्ष आपके लिए शुभ एवं उन्नतिकारक रहेगा। इस समय व्यापारिक क्षेत्र में आप उन्नति या कोई महत्वपूर्ण परिवर्तन कर सकते हैं। साथ ही राजनीति में संलग्न हों तो उसमें आप किसी महत्वपूर्ण पद को प्राप्त करने में भी सफल रहेंगे या राजनैतिक महत्व के व्यक्तियों से आपका संबन्ध बढ़ेगा। नौकरी या अन्य कार्य क्षेत्र में भी पदोन्नति की संभावनाएं प्रबल होंगी। आर्थिक दृष्टि से भी यह वर्ष आपके लिए उत्तम रहेगा तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ प्राप्त करने में आप समर्थ रहेंगे। साथ ही आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी। लेकिन शारीरिक स्वास्थ्य के प्रति सावधान रहें। इस समय रक्तचाप सम्बन्धी परेशानी उत्पन्न हो सकती हैं। इसके साथ ही आय गोचर फल अशुभ रहेगा परन्तु दशा शुभ फल प्रदान करेगी अतः उपर्युक्त शुभ फलों में यदा कदा विलम्ब तथा न्यूनता परिलक्षित होगी परन्तु अंतिम परिणाम सन्तोषजनक रहेगा।

गोचरवश इस वर्ष में राहु की स्थिति एकादश भाव तथा केतु की स्थिति पंचम भाव में रहेगी। इनके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए शुभ फल प्रदान करेगा। यदा कदा अशुभ फलों की भी प्राप्ति होगी। व्यापारिक तथा कार्यक्षेत्र में इस समय आप परिश्रम से सफलता प्राप्त करेंगे। लाभ मार्ग भी प्रशस्त होंगे। नौकरी या राजनीति में इस समय आपको किसी पद की प्राप्ति होगी जिससे समाज में आपकी मान प्रतिष्ठा बढेगी तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। आर्थिक दृष्टि से भी यह वर्ष आपके लिए शुभ ही रहेगा एवं आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी जिससे आवश्यक मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगे। लेकिन इस समय आप यदा कदा क्रोधाधिक्य का प्रदर्शन करेंगे। तथा सन्तति पक्ष से अप्रसन्न तथा असंतुष्ट रहेंगे। इस समय उनका स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है। साथ ही गोचरफल प्रतिकूल रहेंगे तथा दशा फल शुभ फल प्रदान करेगी। अतः आप इस वर्ष शुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगे।

मंगल की महादशा में गुरु का अंतर 08/03/2024 को समाप्त होगा। उसके बाद

शनि का अंतर प्रारंभ होगा। गुरु तृतीय भाव में कर्क राशि में स्थित हैं जबकि शनि सप्तम् भाव में वृश्चिक राशि में स्थित हैं।

यह समय आपके लिए शुभ एवं अनुकूल रहेगा इस समय आप अपनी सक्रियता तथा व्यावहारिकता के कारण इच्छित उन्नति एवं सफलता अर्जित करने में समर्थ रहेंगे साथ ही आप में पराक्रम तथा साहस के भाव की भी अभिवृद्धि होगी व्यापार में इस समय आपको सुअवसर प्राप्त होंगे तथा लाभ मार्ग भी प्रशस्त रहेंगे पारिवारिक सुख शांति तथा समृद्धि भी उत्तम रहेगी तथा सदस्यों से आपको पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा इस संबधियों को आपसे विशिष्ट लाभ एवं सहयोग मिलेगा घरेलू वस्तुओं पर भी इस समय व्यय अधिक होगा साथ ही आवास या वाहन संबधी क्रय की भी प्रबल संभावना बनेगी इसके अतिरिक्त सामाजिक मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा इच्छित एवं लाभदायक यात्राएं भी होंगी जिनसे भविष्य के लिए नवीन आयाम स्थापित होंगे अतः समय का सदुपयोग करें।

यह समय आपके लिए शुभ एवं अनुकूल रहेगा इस समय आपको अल्प परिश्रम से ही इच्छित परिणामों की प्राप्ति होगी तथा व्यापार में लाभ होगा तथा उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे यदि नौकरी में है तो पदोन्नति के अवसर मिलेंगे तथा अधिकारी वर्ग से सम्बंधों में मधुरता रहेगी एवं वे आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। अर्थिक दृष्टि से स्थिति में अनुकूलता रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में लाभ अर्जित होगा एवं आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी परिवार में इस समय सुख शान्ति का वातावरण रहेगा तथा सदस्यों का आपस में स्नेह एवं सहयोग का भाव रहेगा। शत्रुवर्ग से इस समय कोई परेशानी नहीं होगी तथा वे आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे इसके अतिरिक्त मित्रवर्ग से वांछित लाभ एवं सहयोग मिलता रहेगा परन्तु स्वास्थ्य के प्रति सतर्क रहें।

फलादेश - 2025

इस वर्ष में गोचरवश बृहस्पति आपकी कुँडली में द्वितीय भाव में संक्रमण करेगा।अतः इसके शुभ प्रभाव से आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ होगी तथा आय स्रोतों में वृद्धि करके प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ आप प्राप्त करेंगे। इस समय आपकी पारिवारिक शान्ति एवं समृद्धि बनी रहेगी तथा पुत्र संतति की भी प्राप्ति की संभावना रहेगी। परन्तु यदा कदा व्यय की अधिकता से मन में उद्विग्नता उत्पन्न होगी तथा समाज में आपकी इस समय मान प्रतिष्ठा बढ़ेगी तथा एक प्रभावशाली व्यक्ति के रूप में आप समाज में आदरणीय समझे जाएंगे। इस समय धर्म सम्बन्धी कर्मो में भी आप रुचिशील रहेंगे। साथ ही वाणी की ओजस्विता में भी वृद्धि होगी तथा लोग आपकी बातों को ध्यानपूर्वक सुनेंगे। इसके साथ ही व्यापारिक क्षेत्र में आपके उत्तम संयोग बनेंगे। साथ ही गोचरफल तथा दशाफल भी अनुकूल फल प्रदान करेगी अतः यह वर्ष आपके लिए शुभ एवं सौभाग्यशाली रहेगा।

इस वर्ष में शनि गोचरवश एकादश भाव में भ्रमण करेगा। अतः यह वर्ष आपके लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं सौभाग्यशाली रहेगा। इस समय आपके व्यापारिक, राजनैतिक या अन्य कार्यक्षेत्र में उन्नति होगी तथा इसमे कोई महत्वपूर्ण परिवर्तन होगा। आर्थिक दृष्टि से भी यह वर्ष उत्तम रहेगा। इस समय आपके आय स्रोतों में सर्वत्र वृद्धि होगी तथा प्रचुरमात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करेने में आप समर्थ रहेंगे। इस समय आपकी समाज में आपकी कीर्ति बढेगी तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे एवं प्रतिभा के अनुरूप ही आपको यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। इस समय आपके समस्त प्रगति के मार्ग प्रशस्त रहेंगे तथा इनमें उन्नति एवं सफलता अर्जित करेंगे परन्तु सन्तति पक्ष एवं स्वयं के स्वास्थ्य के प्रति आपको सतर्क रहना चाहिए साथ ही आय गोचर तथा दशा फल भी आपके लिए शुभ फल प्रदान करेंगे। अतः यह वर्ष आपके लिए अत्यन्त ही शुभ एवं भाग्यशाली सिद्ध होगा।

इस वर्ष में गोचरवश राहु दशम तथा केतु चतुर्थ भाव में भ्रमण करेगा। इसके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए शुभ एवं महत्वपूर्ण रहेगा। व्यापारिक तथा कार्यक्षेत्र में भी इस समय आपको वांछित सफलता मिलेगी तथा लाभ मार्ग भी प्रशस्त होंगे। नौकरी या राजनीति में भी इस समय आप किसी महत्वपूर्ण पद की प्राप्ति कर सकते हैं। इस समय राजनैतिक व्यक्तियों से भी आपके सम्पर्क बनेंगे तथा उनसे आप इच्छित लाभ एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। सामाजिक रूप से इस समय आपकी मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे एवं आपका यथोचित सम्मान करेंगे। आर्थिक दृष्टि से भी यह वर्ष उत्तम रहेगा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ प्राप्त करने में आप सफल रहेंगे। माता पिता के स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष अच्छा रहेगा। शारीरिक एवं मानसिक रूप से वे स्वस्थ तथा प्रसन्न रहेंगे। साथ ही आय गोचरफल तथा दशा फल की अनुकूलता के कारण इस वर्ष में आपको शुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगे।

मंगल की महादशा में शनि का अंतर 17/04/2025 को समाप्त होगा। उसके बाद बुध का अंतर प्रारंभ होगा। शनि सप्तम् भाव में वृश्चिक राशि में स्थित हैं जबकि बुध दशम् भाव में कुम्भ राशि में स्थित हैं।

यह समय आपके लिए सामान्यतया अच्छा रहेगा इस समय आपको इच्छित परिणामों की प्राप्ति होगी तथा अन्यत्र भी लाभमार्ग प्रशस्त रहेंगे आर्थिक दृष्टि से भी स्थिति में सुदृढ़ता रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में लाभार्जन होता रहेगा। साथ ही बुद्धिमतापूर्ण पूंजी निवेश भी सम्पन्न करेंगे। यदि नौकरी में है तो पदोन्नति की सम्भावना बनेगी ता अधिकारी वर्ग से सम्बंधों में मधुरता रहेगी। पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि भी उत्तम रहेगी तथा सभी लोग आपस में प्रेमपूर्वक रहेंगे। मित्रवर्ग से भी वांछित सहयोग मिलेगा एवं आपस में विश्वसनीयता का भाव रहेगा। इसके अतिरिक्त पत्नी का स्वास्थ्य अनुकूल रहेगा लेकिन जोखिम के कार्यों की यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

यह समय आपके लिए शुभ एवं महत्वपूर्ण रहेगा इस समय आप में प्रबल आत्मविश्वास तथा सहयोग के भाव की उत्पत्ति होगी अतः शुभ एवं महत्वपूर्ण योजनाओं में वांछित सफलता मिलेगी व्यापार में इच्छित लाभ तथा उन्नति के योग बनेंगे यदि नौकरी में है तो पदोन्नति होगी तथा अधिकारी एवं वरिष्ठ सहयोगियों से मधुर संबध स्थापित होंगे। पारिवारिक सुख शांति तथा समृद्धि उत्तम रहेगी तथा सभी सदस्य परस्पर स्नेह तथा सम्मान पूर्वक रहेंगे एवं एक दूसरे को पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। सामाजिक मान प्रतिष्ठा तथा यश में भी अभिवृद्धि होगी तथा लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे इसके अतिरिक्त शत्रु एवं प्रतिद्वन्दियों को पराजित तथा प्रभावित करने में भी समर्थ रहेंगे साथ ही ऐसे समय में लाभ दायक यात्राएं होंगी तथा भविष्य के लिए नवीन आयाम स्थापित होंगे। अतः ऐसे समय का आपको यत्नपूर्वक सदुपयोग करना चाहिए।

फलादेश - 2026

बृहस्पति का इस वर्ष में गोचरवश तृतीय भाव में परिभ्रमण होगा। अतः इसके प्रभाव से आप दूर समीप की यात्राएं करेंगे तथा इनसे आपको न्यूनाधिक लाभ की प्राप्ति होगी। साहित्य एवं दर्शन के प्रति इस समय आपके मन में अध्ययन की रुचि भी उत्पन्न हो सकती हैं। पुराने मित्रवर्ग से इस वर्ष आपको लाभ एवं सहयोग प्राप्त होगा तथा अवीन नवीन मित्रों की भी प्राप्ति होगी जिनसे भविष्य में आपको लाभ एवं सहयोग की संभावना रहेंगी। शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य की दृष्टि से भी यह वर्ष मध्यम रहेगा तथा मानसिक संकीर्णता को छोड़कर आप विशाल हृदयता का प्रदर्शन करेंगे। फलतः समाज में भी मान सम्मान में वृद्धि होगी। परन्तु आय गोचरफल इस समय अच्छा नहीं रहेगा लेकिन दशा फल शुभ रहेगा अतः उपर्युक्त शुभ फलों में आपको यदा कदा न्यूनता दृष्टिगोचर होगी परन्तु अतिरिक्त परिश्रम एवं संघर्ष से आप शुभ फल अर्जित कर सकेंगे।

गोचरवश शनि इस वर्ष एकादश भाव में भ्रमण करेगा। अतः इसके शुभ प्रभाव से यह समय आपके लिए शुभ एवं महत्वपूर्ण रहेगा। इस समय आप अपने व्यापारिक या कार्यक्षेत्र में उन्नति करेंगे तथा प्रचुर मात्रा में लाभ भी अर्जित होगा। साथ ही समाज में आपकी कीर्ति तथा प्रतिभा में भी वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे एवं यथोचित आदर प्रदान करेंगे। राजनीति या नौकरी आदि में इस समय आप कोई पद भी प्राप्त कर सकते हैं। आर्थिक दृष्टि से भी वर्ष उत्तम रहेगा एवं सर्वत्र लाभ मार्ग प्रशस्त होंगे साथ ही प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। इस वर्ष में आपको स्वयं तथा सन्तति पक्ष के स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखना चाहिए। इसके साथ ही इस वर्ष आय गोचरफल अशुभ रहेंगे परन्तु दशा शुभ फल प्रदान करने वाली होगी। अतः उपर्युक्त शुभ फलों को यदा कदा आप अल्पता की भी अनुभूति करेंगे तथा लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कई बार परिश्रम एवं संघर्ष भी अधिक करना पड़ा परन्तु सामान्यतया यह समय आपके लिए उत्तम एवं सौभाग्यशाली रहेगा।

गोचरीय परिभ्रमण के फलस्वरूप इस वर्ष राहु दशम तथा केतु चतुर्थ भाव मे रहेगा इनके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए सामान्य रहेगा। तथा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सफल करने में आप समर्थ रहेंगे। व्यापारिक तथा कार्यक्षेत्र में इस समय आप उन्नति एवं सफलता प्राप्त करेंगे तथा अन्यत्र भी लाभ मार्ग प्रशस्त होंगे। नौकरी या राजनीति के क्षेत्र में आपकी पदोन्नति की संभावना रहेगी समाज में आपका प्रभाव रहेगा। इस समय राजनैतिक महत्व के व्यक्तियों से भी आपके सम्पर्क बनेंगे तथा भविष्य में उनसे लाभ तथा सहयोग प्राप्त करेंगे। आर्थिक स्थिति भी इस वर्ष अच्छी रहेगी तथा आवश्यक मात्रा में धनार्जन होता रहेगा। माता पिता के स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। यदा कदा वे शारीरिक तथा मानसिक कष्ट की अनुभूति करेंगे। वाहन सुख में भी इस वर्ष अल्पता रहेगी। इस समय आयगोचरफल आपके लिए अशुभ रहेंगे परन्तु दशा अनुकूल फल प्रदान करेगी। अतः आप अधिकांशतया शुभ फल ही प्राप्त करेंगे।

इस वर्ष मंगल की महादशा में तीन ग्रहों की अंतर्दशा रहेगी। इस वर्ष बुध का अंतर

14/04/2026 को समाप्त होगा। उसके बाद केतु अंतर्दशा प्रारंभ होगी तथा 10/09/2026 तक चलेगी। इस वर्ष का अंत शुक्र की अंतर्दशा में होगा। आपकी जन्मकुंडली में महादशा का स्वामी द्वादश भाव में मेष राशि में स्थित हैं।

यह समय आपके लिए उत्तम फलदायक रहेगा इस समय बुध की केन्द्र में स्थिति होने के कारण अपनी सक्रियता तथा व्यावहारिकता से आप शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता अर्जित करने में समर्थ रहेंगे व्यापार में स्थिति संतोष प्रद रहेगी तथा उन्नति एवं लाभ मार्ग प्रशस्त रहेंगे यदि नौकरी में है तो पदोन्नति के अवसर मिलेंगे एवं अधिकारी तथा सहयोगियों से मधुर संबध रहेंगे साथ ही उन्नति कारक स्थानान्तरण की भी संभावना बनेगी पारिवारिक सुख शांति तथा समृद्धि अनुकूल रहेगी तथा सभी लोग आपस में मिल जुलकर रहेंगे एवं एक दूसरे को पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे साथ ही कोई शुभ या मांगलिक उत्सव भी परिवार में सम्पन्न हो सकता है इसके अतिरिक्त प्रभावशाली लोगों से भी सम्पर्क स्थापित होंगे तथा उनसे वांछित लाभ तथा सहयोग प्राप्त होगा। अतः समय का सदुपयोग करें।

यह समय आपके लिए सामान्यतया शुभ रहेगा तथा आपके महत्वपूर्ण कार्य या योजनाएं इस समय सफल हो सकती है। व्यापार के लिए भी लिए समय भी अनुकूल रहेगा तथा लाभ एवं सफलता अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। यदि नौकरी में है तो पदोन्नति की पूर्ण सम्भावना रहेगी इस समय प्रभावशाली व्यक्तियों से आपके सम्पर्क स्थापित होंगे तथा उनसे आपको समयानुसार वांछित लाभ एवं सहयोग प्राप्त होगा पारिवारिक सुख शान्ति भी इस समय अच्छी नहीं रहेगी तथा सभी सदस्य आपस में प्रेमपूर्वक रहेंगे एवं एक दूसरे को पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे साथ ही ऐसे समय में परिवार में कोई शुभ या मांगलिक उत्सव भी सम्पन्न हो सकता है। इसके अतिरिक्त दूर समीप की यात्राएं सम्पन्न होंगी।

यह समय आपके लिए सामान्यतया अनुकूल रहेगा परन्तु यदा कदा अशुभ फलों की भी प्राप्ति होगी लेकिन यह अल्पमात्रा में घटित होंगे। व्यापार में आपको सुअवसरों की प्राप्ति होगी। परन्तु आलस्यवश उनका सदुपयोग करने में असमर्थ रहेंगे। यदि नौकरी में है तो कार्य स्तर में वृद्धि होगी तथा मान सम्मान भी प्राप्त होगा। साथ ही अधिकारी वर्ग से सम्बंधों में मधुरता रहेगी। पारिवारिक सुख शान्ति भी अच्छी रहेगी तथा सभी लोग आपस में मिलजुल कर रहेंगे तथा एक दूसरे को पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। इस समय घरेलू उपयोग के उपकरणों पर आपका अधिक मात्रा में व्यय होगा तथा आनन्ददायक कार्य कलापों में आप संलग्न रहेंगे लेकिन अधिकता की आपकों उपेक्षा करनी चाहिएं तभी स्थिति नियंत्रण में रह सकती है।

फलादेश - 2027

गोचरवश इस वर्ष बृहस्पति चतुर्थ भाव में भ्रमण करेगा। अतः यह वर्ष आपके लिए सामान्यतया अच्छा रहेगा। शारीरिक रूप से इस समय आप स्वस्थ तथा प्रसन्न रहेंगे तथा पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि में भी वृद्धि होगी। एवं सभी लोग परस्पर मिलजुल कर रहेंगे। इस समय आपकी योजनाएं भी पूर्ण होंगी। व्यापारिक तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति एवं सफलता के लिए यह वर्ष शुभ एवं अनुकूल रहेगा। आर्थिक दृष्टि से भी वर्ष मध्यम रहेगा तथा आवश्यक मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगे। सम्पर्क के लोगो से इस समय आपको प्रसंशा मिलेगी तथा उनके मध्य आपकी मान प्रतिष्ठा की वृद्धि होगी। इस वर्ष में जायदाद या आवास सम्बन्धी सुख एवं लाभ की भी प्राप्ति के योग बनेंगे। साथ ही माता एवं ससुराल पक्ष से सहयोग तथा लाभ भी प्राप्त हो सकता है। लेकिन गोचरफल इस समय अशुभ फल प्रदान करेंगे परन्तु दशा शुभ फलदायक रहेगी। अतः उपर्युक्त फलों में यदा कदा विलम्ब या न्यूनता रहेगी परन्तु परिश्रमपूर्वक सफलता मिल सकेगी।

इस वर्ष शनि का भ्रमण द्वादश भाव में रहेगा। अतः इसके प्रभाव से आपकी लम्बी दूरी की यात्राएं अधिक होंगी साथ ही कोई विदेश सम्बन्धी यात्रा भी होने की संभावना रहेगी। इस समय आप अपने स्तर पर योजनाएं तैयार करेंगे तथा उनको पूर्ण करने के लिए प्रयत्नशील रहेंगे। परन्तु ऐसे समय में आप शारीरिक दृष्टि से या मानसिक दृष्टि से परेशानी भी होगी तथा कभी कभी अत्यन्त ही उद्विग्नता की अनुभूति करेंगे। साथ ही समाज में अन्य जनों से यदा कदा वाद विवाद भी हो सकता है। इस वर्ष में आप अपने बन्धु, मित्र तथा अन्य शुभ चिन्तकों से कोई विशेष सहयोग या सहायता पाने में असफल रहेंगे तथा अपने ही बल पर अपने कार्यों को पूर्ण करने में तत्पर रहेंगे। इस वर्ष में आय गोचर फल आपको अशुभ फल प्रदान करेंगे लेकिन दशा फल शुभ फल प्रदन करेगी। अतः उपर्युक्त फलों न्यूनाधिक अशुभ फल समय समय पर प्रदर्शित होते रहेंगे। अतः यदा कदा आप मानसिक रूप से कष्ट की अनुभूति करेंगे। अतः अनुकूल एवं शुभ फलो की प्राप्ति के लिए आपको नियमित रूप से शनि का पूजन तथा दान करना चाहिए।

गोचरीय भ्रमण के अनुसार इस वर्ष में राहु की स्थिति नवम एवं केतु की स्थिति तृतीय भाव में रहेगी इसके प्रभाव से यह वर्ष अधिकांशतया शुभ ही रहेगा। धर्म के प्रति आपके मन में इस समय श्रद्धा में न्यूनता आएगी तथा महत्वपूर्ण कार्यों में समस्याओं एवं व्यवधानों का सामना करना पड़ेगा परन्तु स्वपराक्रम एवं परिश्रम से आप इनमें सफलता प्राप्त करेंगे साथ ही भाग्य बल में अल्पता होने से मानसिक रूप से आप चिन्तित रहेंगे। परिवारिक वातावरण में भी इस समय शान्ति तथा सदभावना कम ही दृष्टिगोचर होगी। लेकिन केतु के प्रभाव से आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। जिससे सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आर्थिक स्थिति आपकी अच्छी रहेगी तथा आवश्यक मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। इस समय कार्यक्षेत्र में भी आपकी उन्नति होगी। इसके साथ ही इस समय गोचरफल अशुभ एवं दशा फल शुभ रहेगा। अतः इस वर्ष में अशुभ फलों के साथ सामान्यतया शुभ फलों की भी आपको प्राप्ति होगी।

मंगल की महादशा में शुक्र का अंतर 10/11/2027 को समाप्त होगा। उसके बाद

सूर्य का अंतर प्रारंभ होगा। शुक्र द्वादश भाव में मेष राशि में स्थित हैं जबकि सूर्य एकादश भाव में मीन राशि में स्थित हैं।

यह समय आपके लिए विशेष अच्छा नहीं रहेगा। इस समय आर्थिक स्थिति में भी अस्थिरता रहेगी तथा आय स्रोतों में कमी रहेगी। जिससे यदा कदा आपको आर्थिक परेशानी का सामना करना पड़ेगा। आपको व्यय पर नियंत्रण रखना होगा। व्यापार में भी आपको सन्तोषजनक परिणामों की प्राप्ति नहीं होगी एवं लाभ मार्ग भी अवरुद्ध रहेंगे। यदि नौकरी में है तो पदोन्नति सम्बंधी विलम्ब होगा तथा किसी अवांछित स्थान पर स्थानांतरण हो सकता है परिवार में भी सुख शान्ति के भाव में न्यूनता रहेगी। तथा सदस्यों का आपस में मतभेद तथा वैमनस्य का भाव रहेगा। जिससे आपस में तनाव रहेगा। शारीरिक रूप से आप स्वस्थ तथा प्रसन्न रहेंगे। तथापि ऐसे समय को धैर्य एवं बुद्धिमता पूर्वक व्यतीत करना चाहिए।

यह समय आपके लिए विशेष शुभ एवं अनुकूल नहीं रहेगा। इस समय आपकी आकांक्षाएं तथा योजनाएं अल्प मात्रा में ही पूर्ण होंगी तथा खर्चीली योजनाओं में हानि की भी प्रबल संभावनाएं बनेंगी। अतः ऐसी योजनाओं को ऐसे समय पर प्रारंभ नहीं करना चाहिए। साथ ही आर्थिक क्षेत्र में भी परेशानी रहेगी तथा लाभ मार्ग अवरुद्ध होंगे इस समय कोई लाभदायक सम्पर्क सूत्र नहीं बनेंगे तथा व्यापारिक या सामाजिक स्तर में कोई वृद्धि नहीं होगी। आपके मित्र एवं शुभ चिन्तक भी आपको यथोचित सहयोग एवं सहानुभूति अल्प मात्रा में ही प्रदान करेंगे। यद्यपि इस समय यात्राएं अधिक होगी परन्तु उनसे लाभ कम ही होगा। साथ ही विदेश यात्रा में भी रुकावटें आएगी पारिवारिक सुख शांति तथा समृद्धि में भी न्यूनता आएगी तथा पारिवारिक जनों के परस्पर तनाव पूर्ण संबंध रहेंगे। इसके अतिरिक्त भाई बहिन भी इस समय में साान्य उन्नति प्राप्त करेंगे।

फलादेश - 2028

इस वर्ष में बृहस्पति की गोचरवश स्थिति चतुर्थ भाव में रहेगी। अतः यह वर्ष आपके लिए सामान्यतया शुभ ही रहेगा। स्वास्थ्य की दृष्टि से भी समय अच्छा रहेगा एवं मानसिक सन्तुष्टि भी बनी रहेगी। पारिवारिक सुख शान्ति एवं समृद्धि भी अनुकूल रहेगी तथा सभी लोग परस्पर प्रेमपूर्वक रहेंगे। इस वर्ष में आपके सोचे हुए कार्य एवं अन्य योजनाएँ भी कार्यान्वित होंगी। व्यापारिक एवं कार्यक्षेत्र में समय सामान्य उन्नति दायक रहेगा तथा परिश्रमपूर्वक लाभ एवं धन की भी प्राप्ति होगी फलतः आर्थिक स्थिति भी अच्छी रहेगी। इस समय मित्र एवं बन्धुवर्ग से भी आप सहयोग अर्जित करेंगे। जायदाद या वाहन सम्बन्धी सुख भी इस समय प्राप्त कर सकते हैं। इस वर्ष में आप माता एवं ससुराल से लाभ अर्जित करेंगे परन्तु आयगोचरफल तथा दशाफल इस समय प्रतिकूल रहेंगे अतः उपर्युक्त शुभ फल अल्प मात्रा में ही घटित होंगे तथा आपको संघर्ष एवं परिश्रम भी अधिक करना पड़ेगा।

इस वर्ष में गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश भाव में रहेगी। अतः इसके प्रभाव से आपकी लम्बी दूरी की यात्राएं अधिक होंगी तथा कोई विदेश सम्बन्धी यात्रा भी हो सकती है। इस समय आप अपने स्तर पर किसी बडी योजना का कार्य भी प्रारम्भ कर सकते हैं। इस वर्ष आपको अपने कार्यों को पूर्ण करने में कई प्रकार की बाधाओं तथा परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। साथ ही समाज में अन्य जनों से वाद विवाद आदि के भी योग बनेंगे। मित्र बन्धुओं तथा अन्य शुभचिन्तकों से भी आपको इस समय कोई विशेष सहयोग नहीं मिलेगा एवं स्वपरिश्रम तथा बुद्धिबल से ही आप अपने कार्यों को पूर्ण करने में सफल हो सकते हैं। इसके साथ ही आपकी मानसिक स्थिति भी विशेष अच्छी नहीं रहेगी तथा मन में उद्विग्नता तथा अशान्ति बनी रहेगी। इस वर्ष में आपके आय गोचरफल तथा दशाभी अशुभ फल ही प्रदान करेंगी। अतः यह समय आपके लिए काफी संघर्षपूर्ण रहेगा। शनि की साढेसाती के प्रभाव को दूर करने के लिए आपको शनि का पूजन एवं दान करना चाहिए। इससे आपको अशुभ फलों में निश्चित रूप से न्यूनता की अनुभूति होगी।

गोचरीय भ्रमण के अनुसार इस वर्ष राहु अष्टम भाव तथा केतु की स्थिति द्वितीय भाव में रहेगी। अतः इसके प्रभाव से आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा मानसिक रूप से भी आप परेशानी तथा उद्विग्नता की अनुभूति करेंगे। पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि भी इस समय अच्छी नहीं रहेगी तथा परिवार के सदस्यों के परस्पर मतभेद रहेंगे जिससे स्नेह एवं सहयोग के भाव की अल्पता रहेगी। व्यापारिक तथा कार्य क्षेत्र की उन्नति में भी आपको अत्यधिक परिश्रम एवं संघर्ष करना पड़ेगा तथा इसमें सफलता भी अल्प मात्रा में ही प्राप्त होगी। आप उन्नति मार्ग प्रशस्त करने में तत्पर रहेंगे। आर्थिक स्थिति भी इस वर्ष में मध्यम रहेंगी तथा आवश्यक मात्रा में ही धन एवं लाभ अर्जित करने में आप समर्थ हो सकेंगे। लेकिन व्यय की अधिकता के कारण यदा कदा आपको परेशानी का भी सामना करना पड़ेगा। परन्तु इस समय आपको न्यूनाधिक मात्रा में अचानक धन लाभ हो सकता है साथ ही जुए सट्टे या लाटरी आदि से भी आप लाभान्वित हो सकते हैं ।

इसके अतिरिक्त इस वर्ष में अन्य गोचर तथा दशा विशेष शुभ फल प्रदान नहीं

करेंगी अतः आपके पारिवारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य परिश्रम एवं संघर्ष के उपरांत भी अल्प मात्रा में ही सम्पन्न होंगे तथा आय स्रोतों में व्यवधान रहेगा। अतः शुभ फलों की प्राप्ति के लिए आपको राहु केतु का नियमित पूजन जप तथा दान संबंधी कार्य करने चाहिए तभी शुभ फल प्राप्त होंगे।

इस वर्ष राहु की महादशा प्रारंभ हो रही है। इससे विदित होता है इस समय आपकी जीवन शैली तथा कार्य क्षेत्र में परिवर्तन होगा। इस वर्ष का प्रारंभ मंगल की महादशा में सूर्य के अंतिम अंतर से हो रहा है और वर्ष की समाप्ति राहु की महादशा में राहु के प्रथम अंतर से होगी। आपकी जन्मकुंडली में महादशा का स्वामी पंचम् भाव में कन्या राशि में स्थित हैं।

यह समय आपके लिए सामान्यतया अच्छा नहीं रहेगा इस समय आप अत्याधिक परिश्रम एवं संघर्ष के उपरांत भी यथोचित उन्नति तथा लाभ प्राप्त करने में असमर्थ रहेंगे साथ ही शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों एवं योजनाओं में भी विलम्ब होगा तथा रुके हुए कार्यों एवं आकांक्षाओं में भी सफलता कम ही मिलेगी आपके मित्र एवं शुभ चिन्तक आपको अपना सहयोग अल्प मात्रा में ही प्रदान करेंगे आर्थिक दृष्टि से स्थिति अच्छी नहीं रहेगी तथा लाभ मार्ग अवरूद्ध रहेंगे पारिवारिक वातावरण में भी इस समय तनाव तथा मतभेद का भाव विद्यमान रहेगा फलतः परिवार से भी आप चिन्तित रहेंगे शत्रुवर्ग इस समय समस्याएं उत्पन्न करेगा तथा आपके स्तर में कोई न्यूनता आ सकती है लेकिन उत्तरार्द्ध में इस सबका अभाव रहेगा तथा परिवार में कोई मंगल उत्सव सम्पन्न होने की संभावनाएं विद्यमान रहेगी।

यह समय आपके लिए विशेष अच्छा नहीं रहेगा। इस समय आपमें दूर दृष्टि तथा व्यवहारिकता का अभाव रहेगा जिससे शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता नहीं मिलेगी एवं अन्यत्र भी कोई योजना या कार्य सिद्ध नहीं होगा। व्यापार में भी आपको समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ेगा जिससे लाभ एवं उन्नति के मार्ग अवरुद्ध रहेंगे यदि नौकरी में है तो कार्यस्तर में न्यूनता आएगी तथा अधिकारी वर्ग से मधुर सम्बंध न होने के कारण वे आपसे अप्रसन्न तथा असन्तुष्ट रहेंगे। सामाजिक मानप्रतिष्ठा में भी न्यूनता रहेगी तथा मित्रवर्ग से भी उपेक्षा मिलेगी इसके अतिरिक्त वातावरण में भी अशान्ति रहेगी परन्तु दूर समीप की यात्राओं से लाभ होने की पूर्ण सम्भावना रहेगी।